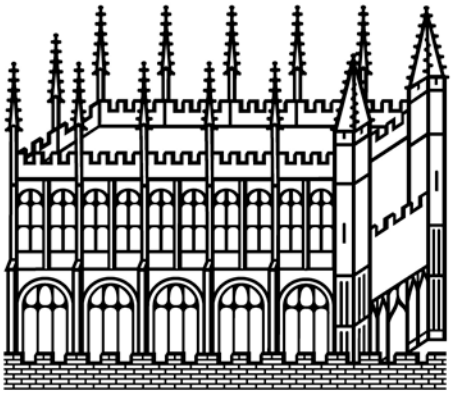


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

(13. D. 75) Hindi VIX 4

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Singhāsan battīsī.

Singaran Buttisee No



सिंहासनबत्तीसी

سنگھاسن بتیسی

लल्लूलाल जी कवि जिन की कृति प्रसिद्ध प्रेमसागर निर्म्माण
वाइर्द है उन की बनाई हुई ॥

चौथीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर जी के छापे खाने में छापी गई ॥

दिसम्बर सन् १८७४ ई०

विज्ञप्ति॥

इस महीने अर्थात् दिसम्बर सन् १८७९ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तैय्यार हैं वह इस सूचीपत्र में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से धटा करनिर्यत हुवा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्योपार की इच्छा हो वह छपवाने के मुहूर्त सिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
व्याकरण और ज्योतिष	अमरविनोद	भगवद्गीता
सिद्धान्त चन्द्रिका	औषधिसङ्ग्रहकल्पवल्ली	भगवती गीता
लघु कौमुदी	निघण्टु भाषा	श्रीमद्भागवत सटीक
मुहूर्त्तचिन्तामणि सारिणी	वैद्य दर्पण	तथा दशम स्कन्ध
शीघ्र बोध	रामविनोद	हनुमान बाहुक
पाराशरी सटीक	जगद्विनोद	सुरव सागर
मुहूर्त्त गणपति	कोष और दूति हास।	ब्रह्मसार
सङ्ग्रहणि रत्न	सामुद्रिक	परमार्थसार
जातक चन्द्रिका	गणित कामधेनु	प्रेम सागर
लघु जातक भाषाटीका स०	चमत्कार दर्शन बड़ोदा	सूर सागर
भाषा जातकालङ्कार	शब्दार्थ कोष	राग प्रकाश
संस्कृत जातकालङ्कार	अमरकोष प्रथम काण्ड	भक्त माल
जातक भरण	अमरकोष तीनों काण्ड	अवध यात्रा
मुहूर्त्त दीपक	भाषा टीका सहित	कथा गङ्गाजी
हीरा मकरन्द	अनेकार्थ कोष	रामायण टेपकी
मुहूर्त्त चिन्तामणि	ब्रज विलास	रामायण जिल्द बन्धी
मुहूर्त्त मार्त्तण्ड	दुर्गा पाठ सटीक	रामायण तुलसी कृत प० छा०
वैद्यक	दुर्गा पाठ मूल	रामायण तुलसी कृत म०
शार्ङ्गधर सटीक	अपराध भञ्जन स्तोत्र	सतसई रामायण
वैद्य जीवन	महिम्न स्तोत्र	कविता वली रामायण
वैद्य मनोत्सव	श्रीगोपाल सहस्र नाम	गीता वली रामायण
रसरत्न सागर	शिवार्च्चन	रामायण दोहा वली
रसरत्न सागर बड़ी	गङ्गालहरी	सुन्दरी चरित्र

अथ सिंहासन बत्तीसी

लिख्यते ॥

एकराजाभाज उज्जैननगरीका राजा महाबली और बड़ा धनी यशी और धर्मात्मा था जितने लोग उसके राज्यमेंबस्ते थे सब चैनकरते थे। राजा राज प्रजासुखी किसी को कोई दुःख नहीं देसक्ता था यह न्याव उसके था कि बाघ बकरी एक घाटपर पानी पीते थे और सब उसके आसरे से जीते। खुदाने जबसे उसे दुनियां के परद पर उतारा सब बेसहारों का किया सहारा और रूप उसका देखकर चौदहवीं रात के चांद को चकाचौंधी आती बड़ा चतुर सुघड़ और गुणी था अच्छी अच्छी जितनी बातें सब उसमें समाई थीं भलाई उसकी सब जगमें मशहूर थी और नगरी उसकी यह बस्ती थी जो चप्पा रखनेको जगह नहीं मिलती थी वह भरा भरा नगर आदियां घर घर नये नये तौर के अच्छे २ मकान बने हुये चौपड़ का बाजार दरमियान नहर बहती हुई दुरुस्त दूकानोंमें एक एकदूकानदार सर्राफ़ बजाज सौदागरकारी गर सुनार सुहार साहूकार कसेरा पटुआ किनारी बाफ़ कोफ़्तगर जिल्लाकार आईनःसाज अपने अपने काम में सरगर्म थे जौहरीबाजार में जवाहिरसे किश्तियां भरीहुई मोती मूंगा जमुर्रद लाल याक़ूत नीलम पुखराज जौहरी देखते भालते थे और खरीदारों से बाजार का बाजार भराहुआ और उसके बराबर दूकानोंमें मेवःफ़रोश विलायती अनार सेब बिही नाशपाती अंगूरसे पिटारे पिटारियां भरकर लगाये हुये और ढेरछुहारे पिस्ते बादामोंके लिये हुये बेचरहे। फूलवालेफूल गूंथरहे तंबोलीबीड़े बांधरहेगन्धियोंकी दूकानें तेलफुलेल इतर अरगजे की लपटों से महकरहीं और

सुपारी वाले दूकानों में पुड़े बुन धनिये सुपारी के बांधकर लगायेहुये डिब्बे मञ्जूनोंके आगेधरे सुपारियां कतर रहे। बिसाती हररंगकी जिन्स दुकानोंमें चुनेहुये मोल गाहकों से कररहे चौक चौकोर बनाहुआ मीनाबाज़ार लगाहुआ तीसरेपहर के। गुदड़ीलगीहुई। असबाब तरहरका नयापुराना बेचनेवाले बेचरहे और लेनेवाले मोलले रहे। गर्मबाज़ारी हर एकचीज़की होरही कटोरे हरतरफ़ बाजरहे कहीं नाच कहीं राग कहीं भगत कहीं नक़ल कहीं क़िस्सह हो रहा मञ्शूक बाज़ार में सैरकरते हुये आशिक़ पीछे २ फिरते हुये दिन रात यह समा वहां रहता था। बाग़ बाग़ीचे सैर और तमाशे का बनेहुये दरख़्त मेवों से झूमते हुये और फूल क्यारियों में खिलेहुये तालाबों में कमल फूलेहुये बावलियों में पानी झलकता हुआ हरएक कुएपर रहट परोहा चलता हुआ पनघट लगा हुआ और राजा के चौरासी खासमहल ऊंचेऊंचे दरवाज़े खुशक़ितअ चार दिवारियां मीधी खिंची हुईं चारों तरफ़ उनके अन्दर बाहर मकान अनूठे अनूठे बने हुये। कोठरियां दालान दरदालान बारहदरियां वाले खाने चौमहले और पचमहले रंगमहल ऐशमहल अटारियां बंगले तैयार। चिलमनें परदे हरहर दरपर लगे हुये फ़र्श चांदनी सोज़नी क़ालीनों का जा बजा बिछा हुआ मसनद तकिये लगेहुये गहनगीनोमें दंगल और कुरसियां मानेहुये की जड़ाऊ बिछी हुईं ताक़ों पर शीशे बेदमुश्क गुलाब के चुनेहुये सायहवान ताशबादले केखिचेहुये। नमगीरे बाज़ी२ जगह अपने २ मौक़े पर खड़े हुये सहन में क्यारियां बनी हुईं चौपड़ की नहरें पानी से भरीहुईं लहरें लेरहीं हौज़ बेदमुश्क गुलाबसे भरेहुये फव्वारे छुटतेहुये चादरोंमें पानी बहताहुआ आबशोयें चारोंतरफ जारी। मर्ब्बखड़ेहुये और छोटे २ दरख़्त लगेहुये रविशें पट्टियां सब दुरुस्त फूल हज़ारों रंगके क्यारियोंमें फूले हुये हर २ महलमें एक २ रानी ऐश और काम रानी से राजा का दिलहाथों में लिये रहती थीं। नाच राग रंग रात दिन होता था और वह आप ऐसा

सुघड़था जो बात२ में मोती पिरोता और नौ क़िस्मके साहिब कमाल जैसे नौरत्न उसकी मजलिस में हाज़िर रहते थे राजाइन्द्र उनकी सभाको देखकर रश्क की आग से जलता था और उसका अखाड़ा हसरत के मारे हाथ मलता था। रंडी मर्द उसकी खूबत पर दीवाने थे जिसने एक बार उसे देखा आपेमें न रहा जिसने उसकी खूब खूरती का बयान सुना वह बेचैन हुआ। योवन के मदमें सरशार मोहन का अवतार। नौजवान चातुरे साहिब तदबीर था * उसकीसैर और तमाशेको शहरके किनारे बाग़बानों ने कोसों तक क्यारियां बनाईं थीं और हररंगके फूलोंकी बहारें दिखाई थी और उनके बराबर एक खेतमें किसी सुराईने खीरे बोयेथे जब वे उगे बेलें तमाम खेतमें फैलगईं और खूबहरयाली हुई जर्दजर्द फूलोंने और ही बहारदी * जब वह खेतफला-और तैयारीपर आया तब उसखेत वालेने रखवाली को एक मकान तजवीज़ किया देखादरमियान उसखेतके एकचौका ज़मीनका खालीरहगयाहै कि न कुछ उसमें जमाहै। नज़र-आई सुराई ने रखवाली करनेको गिर्द इस्तादे लगाकर ऊपर एकमचान बांधा उसपर चढ़कर चारोंतरफ निगाह करते-ही कहनेलगा कोईहै इसीवक्त भोजको गढ़मे पकड़लावे और मचानको पहुंचावे * राजाके नौकरोंमें से एकने इस बात के सुनतेही टांगपकड़कर उसेनीचे गिरादिया और मुंहदीमुंह थपड़े मार२ सारा मुंह सुजा दिया कान पकड़ कर उठाया और बिठाया ग़ुरूरका नशह जितना उसेचढ़ा था सब उतर गया तोबा धाड़करके पांओंपड़ा और कहने लगा मैंनेक्या ऐसी तक़सीरकी जो मुझपर यहमारपीट हुई * इधर उधर की राह बाटके लोग जो वहां इकट्ठे हुए थे उन्होंने कहा तूनेऐसी बात मुंह से निकाली अगर राजा सुनें अभीतुझे तोपके मुंह पर रखकर उड़ादें। सुनतेही वह बिड़बिड़ाने लगा रहे सहे उसके होश और हवास और भी जातेरहे। जानके डरसे घबड़ादम उसका होठोंपर आरहा मिन्नत और ज़ारी से बारे छूटगया * राजाके उसशिल्पी ने वहां से घर

को राहली पर वह जबउस मचानपर चढ़ता तो ऐसी बक-वाद किये बिन न उतरता एक दिन चार हरकारे राजाने एककाम को किसी तरफ़ भेजे थे वेरातको उधरसे फिरेहुए चलेआते थे और वह मचानपर चढ़ाहुआ बकरहा था कि बुलाओ हमारे दीवान और अहल्कारों को कि इस जगह खासे महल और एक गढ़ बनावें सब सरंजाम लड़ाईका उसमें जमअ करें कि मैं राजाभोज से लड़ूं और मारूं जोमेरी सात पुश्तका राज्य यह राज करता है यह सुनतेही उनचारों हरकारोंको अचंभाहुआ और एक एक को उनमें से ग़ुस्सा आया। एकने ग़ज़बसे कहा इसे जानसे मारो। दूसरेने कहा इसेतंबीह करके मुश्कें बांध राजाही के पास लेचलो वह इसके हक्कमें जो चाहे सोकरे तीसरे ने कहा इसने शराबपी है मतवाला है जो मुंहमें आता है बकताहै * चौथेने कहा फिरसमझा जायगा अब जानेदो देर होगी। आपसमें वह बात कहकर राजाके पास गये पहिले मुजरा किया और जहां भेजा था वहां का अहवाल अर्ज़ किया राजाने सुनकर पूछा हमारे राज्य में सब लोग ख़ुश रहते हैं और अपने अपने घरमें बैठकर हमारे हक़ में क्या क्या कहते हैं। तब उन्होंने हर एक का अहवाल कह कर वह क़िस्सह राहका जो सुना था बयान किया और कहा कि अजब असर उस मकानका है कि जब वह उस मचान पर चढ़ता है एक रूहनत उस पर चढ़जाती है और जब वह वहां से उतरता है नशहसा उतर जाताहै फिर अपनी हालत असली में आता है * राजाने कहा तुम सभी वहां लेचलो और उसे दिखाओ कि वह जगह कौनसी है। तब राजा ख़ुशी ख़ुशी उठ हरकारोंको लेकर उस मकान पर गया वहां छिपकर चुपकेही बैठरहा। इतनेमें क्यासुनता है कि वह मचानपर पांव रखतेही कहनेलगा लोगजल्दी आवें और राजा भोज को गढ़से पकड़लावें मारें उसे जल्दी मेरा राज्य लेदें इसमें यश और धर्म्म दोनों उन्हें होंगे * सुनतेही राजा को खौफ़हुआ हरकारोंको साथलेकर घरको फिरआया

रातको फ़िक्रकेमारे नींदनआई सात पांच करके जोतों वह रातगंवाई। सुबह होतेही स्नान करके दरबारकिया पण्डितोंको और नजूमियोंको बुलाया और रातका सब अफ़सानह जबान पर लाया। नजूमियों ने घड़ीसाअत और वह दिन विचार के कहा राजा हमारे विचारमें कुछ वहां लक्ष्मीका लक्षण नजरआता है और पण्डितोंने कहा इस मकान में बहुत दौलतहै। सुनतेही राजाने तमाम शहरके बेलदारों को हुक्म कियाकि लाखबेलदारवहांजाओ और उस मकान की तमाम जमीन खोदो वे बमूजिब हुक्मके रवाने हुए बाद उनके सब अपने मुसाहिबों को भेजा और आप भी सवार होकर वहां आया। बेलदारों ने जब चारोंतरफ़ से खोदा और वहांकी मिट्टीको दूरकिया तो एक पाया नजर आया तब राजाने फ़रमाया अब खुबरदारीसे खोदो टूट न जाय जब खोदतेर चारोंपाए सिंहासनके नजरआये राजाने कहा अब इसे बाहर निकालो लाखमजदूर उठातेथे और जोरकरतेथे पराभी वहजगहसे न हिलताथा तब उनमेंसे एक पण्डितने अर्ज़की महाराज यह सिंहासन देवताओं या सब दानवों का बनाया हुआहै इस जगहसे न हिलेगा और न उठेगा बलिलेगा इसको बलिदीजिये तब राजाने करोड़ भैंसे और बकरे वहीं बलिदिये चारोंतरफ बाजे बजनेलगे और जयजय कार होनेलगे तब बलिलेकर हाथ लगातेही वह सिंहासन ऊपरको उठआया। झाड़बुहार कर एक पवित्र जमीन पर रखदिया। राजा सिंहासन देखकर बहुत खुशहुआ जब उसकी मिट्टी छुड़ाकर गई और गुब्बार दूरकर धोया और पोंछा ऐसा चमकनेलगा कि आंख किसीकी उसपर न ठहरतीथी जिसने उस जड़ाऊ सिंहासनको देखा उसेखुदा की कुदरतका तमाशा नजरआया कारीगरोंने ऐसा बनायाथा कि किसीने देखा न सुना। आठ आठ पुतलियां चारों तरफ बनीहुई थीं और एक एक फूल कंवलका हरएक के हाथ में था अगर सुरथा सुनि उसेदेखे तो भौंचक होजावे। राजाने तमाम कारीगरों को बुलाकर फरमाया जितने रुपये खर्चहों

खज़ानेसे लेलो जहांजहां का जवाहिर जाता रहा है जड़ कर जल्दी तैयारकरो। यह कहकर राजा महलमें दाखिल हुये सिंहासन बनने लगा पांच महीनेमें सब तैयारहुआ और पुतलियां ऐसी बनकर ठड़ीहुईं गोया अभी बोलती हैं और चलती हैं। ग़रज़ सिरसे पांवतक खूबियों में भरीहुईं आंखें हिरनकीसी कमरचीतेकीसी पांवका यह अन्दाज़ जैसेहंस की चाल जिन्होंने सूरत उनकी देखी अपनी आंखोंकी पुतलियोंमें जगहदी। उसे देखकर पण्डित राज से सिंहासनकी हक़ीक़त कहनेलगे राजा सुन मरना जीना इख़्तियार भगवान के है पर मनुष्यको चाहिये कि जीतेजी सब जीतब का सुख करले। यह बात राजा सुनकर बहुत खुशहुआ और कहनेलगा शायद ये पुतलियां भगवानने अपने हाथसे बनाई हैं या इन्द्रके यहां की अप्सराहैं। यह कहकर पण्डितोंका हुक्मकिया। नेकसायत अच्छीलगन विचारे जोमें उससायत सिंहासनपर बैठूं। सुनतेही पण्डितोंने विचारकरके कार्तिक महीनेमें एकदिन शुभलग्न ठहराई। सबभांति वह भली थी। कहा कि उस सायत तुम बैठो। राजाने बैठनेकी तैयारीकी जितने राजा उसके राज्य में और पण्डित और क़राबती दूर और नज़दीकके थे उन्हें न्यौता भेजकर बुलाया और आप स्नान करके अच्छे कपड़े पहने पण्डित वेद पढ़ने लगे और गन्धर्व गीत गानेलगे भाटयश बयान करनेलगे और तरह २ के बाजे बजनेलगे हर हर महल में शादियां नाच राग रंग मचे। जितने लोग आये थे उन सबकी ज़ियाफ़त की ब्राह्मणोंको दक्षिणादिये भूखोंको खाना और कपड़े बख़्शे नंगोंको कपड़ा और माल असबाब इनायत किया रैयतको बख़्शीस और इनआम दिया तमाम शहरमें खैर ख़ैरातबांटी फ़ौज को खिलअत और इज़ाफ़े करदिये दुश्मनोंपर तरह तरहकी मेहरबानियां नवाज़िशेंकरमाईं ग़रज़ जितने लोग उस सभामें इकट्ठे हुयेथे जयजयकार करते थे और रामका नाम लेते थे। बीचमें सिंहासन धराथा। राजा खुशीखुशी गणेशको मनाता हुआ सिंहासनके पास जाकर खड़ाहुआ।

दहिना पांव बढ़ाकर चाहा कि उस पर रक्खे बेशुमार पुतलियां खिलखिलाकर हंसीं और सबने यह देखा राजा अपने दिलमें कटाक्षकर निहायत शर्मिन्दा होकुछ दहशतखाई कुछ उसे अचंभा हुआकि येबेजान पुतलियां जानदार क्योंकर हुईं। तैशखाकरगज़बमें आकर पांवउधरसे खेंचलिया और पुतलियोंसे कहनेलगा क्यादेखा और क्योंहंसीं मुझसे बयान करो। क्या मैं बली या राजा का बेटा या सखी नहीं या क्षत्रियोंमें कायर हूं या नामर्दहूं या बेरहम हूं या और राजा मेरे हुक्ममें नहीं या मैं पण्डित नहीं वा मेरे यहां पद्मिनी रानी या मैं राजनीत नहीं जानता या मैं किसी की मजलिस में नीचे होकर बैठा फिर किसबात में नालायक़हूं मेरे दिलमें शक पड़ा है सो मुझे बताओ ये बातें राजाके सुनकर उसमें से॥

पहिली पुतली रत्नमंजरी बोली॥

राजा दिल लगाकर मेरी बात सुनो और यह क्रिस्महै मैं तुमसे बयान करतीहूं तुमगुनगाहक और क़दरदान हो जो तुमने बातें कहीं सब दुरुस्त हैं सूरज से भी तुम्हारे तेज की आगकी ज्वाला अधिक है पर इतना गर्भ मत करो पुरानी कथा सुनो इस संसार का अन्त नहीं भगवानने इसमें क़िस्म क़िस्म के और रंग रंग के जवाहिर पैदा किये हैं एक २ क़दमपर दौलतकागंज है और एक २ कोस पर आबेहयात के चश्मेहैं पर तुम कमबख्तहो तुमनेकहीं पहिचाना अपनेदिलमें क्या समझेहो। तुमसे इस दुनियां में करोड़ों पड़े हैं तुमने इतनेही में मग़रूर होकर अपनेतईं भुलादिया और यह जिसका सिंहासनहै उसराजाके यहां तुमसा एक २ अदना नौकर था यह सुनकर राजाको गुस्सहआया और कहने लगा इस सिंहासन को अभी तोड़ डालता हूं इतने में बरुच पुरोहित राजा का बोला राजा यह इन्साफ़ से दूर है। पुतली की बात खानदे सुनो और जो कुछ करना हो फिरकर लीजियो राजाने कहा तू उसका अहवाल कह तब पुतली बोली * मैं क्या मालूम कहूं इतनाही सुन

तुम जलकर ख़ाक होगये और सब तमाम हक़ीक़त इस राजा की सुनोगे और शरमिन्दह होगे अपने दिनों को रोओगे लोगों के आगे भी हलके होगे इसे कहवाने से न कहवाना भलाहै हमतो उसीरोज़ मरचुकीथीं और सिंहासन फटचुका था जिसरोज से कि हम राजा विक्रमाजीत से बिछुड़ीं अबहमें क्या डरहै * इतनेमें दीवान राजाका पुतली से कहनेलगा किसलिये तू अपने राजाका बयाननहीं करती ग़ुस्सह छोड़दे अब बातकर क्यों वह भेद छिपारक्खा है तब पुतलीबोलीकि साकेबन्ध राजाबड़ा बलीथा और नगरअम्बावतीमें राज्यकरताथा बड़ा उसका दबदबहथा देवताओं का पूजने वाला और तमाम दुनियांको दान देने वाला। आगे मैं उसकी कथा कहती हूं राजा कानधरके सुनो * ग्राम स्वयम्बर उस नगरी का राजा था जात का ब्राह्मण पर बड़ा राजा हुआ तब धर्म्म सैन उसका नाम हर तरफ़ बजने लगा और उसके घरमें चार बरण की रानियां थीं ब्राह्मणी क्षत्रनी बैश्यनी शूद्रनी। उनमें जो ब्राह्मणी थी बहुत अच्छी सूरत और नाचुक थी उसके एक बेटा हुआ सो बड़ा पण्डित हुआ और ब्राह्मणोत उसका नाम रक्खा * अये राजा वैसा कोई दुनियां में पण्डित न था जितने इल्म थे सब उसने पढ़े थे यहां तक कि मौतकाभी अहवाल कह देता और क्षत्रनीसे तीनबेटेहुये उन्हों ने क्षत्रियों का धर्म इख़्तियारकिया। एकका नाम शंख दूसरेका नाम बिक्रम तीसरेका नाम भर्थरी। एकसेएक बली सब जगमें उनका नाम मशहूरथा और उन्हें कल्पवृक्ष दुनियांके लोग कहते थे और वैसनीसे बेटा जो हुआ उसका नाम चन्द्र रक्खा वह बड़ासखी और रहमदिल था शूद्रनीसे जो बेटाहुआ उसकानाम धन्वन्तर वैद्योंमें वह बड़ा वैद्यथा छः बेटेराजा के हुये एकसे एक अच्छा * ग़रज़ धर्मसिंह के घराने में सबके सब ख़ूबहुये और वह जो ब्राह्मणीसे हुआथा वही राजाकी दीवानी करताथा उस्से जब कोई तक़सीरहुई तब राजा ने ख़िदमत ले ली। वह लड़का वहांसे निकलकर

धारापुर में आया * अरे राजा। वहां सब तुम्हारे बुजुर्गों से उसने सबों ने माना बड़ी आवभगत की वहांका राजा तुम्हारा बापथा। कितनी सुहृतके बाद उसने दगा करके उस राजाको मारडाला वहांका राज्यलेकर उज्जैन नगरी में आया और यहां आकर मरगया शंख जो राजा का बड़ाबेटा उसनीके पेटका था वह आनकर राजाऊआ राज्य करनेलगा और आगे यह अहवाल है कि एकरोज पण्डितों ने आकर राजाशंखसे कहा तेरा दुशमनदुनियां में पैदाऊआ यहबात सुनकर वह भौचक रहगया ब्राह्मण कहनेलगे हमसबने शास्त्र देखाहै उसे यही अहवाल निकलताहै जो हमने तुमसेकहा मगर एकबात और है कि हम उसे मुंहसे निकाल नहींसक्ते तब राजा ने कहा खैर जो तुमने वह बात कही यहभी कहो तब उन्होंने कहा हमारे विचार में यहआताहै कि शंखको मारकर विक्रम राज्यकरे। यहबात सुनकर राजाहंसा और कहने लगा यह पण्डित बावलेहैं इन्हें कुछ ज्ञान नहीं इसलिये ऐसी बात कहतेहैं। यहबात सुनी अनसुनी कर राजा चुपरहा पण्डित अपनेदिलमें शरमिन्दऊये कि हमारेशास्त्रको इसने झूठजाना और हमें दीवाना ठहराया तब कितने एक दिन इसपर गुजरे पण्डित अपने मकानोंमें बैठकर नजूम देखनेलगे उन्हींमें से एकपण्डित बोला मेरे विचारमें यह आताहै कि राजाविक्रम कहीं नजदीक आनपहुंचाहैतब दूसरा उनमेंसे बोला यहांके किसी जङ्गलमें है और एक उनमेंसे कहनेलगा उस जङ्गलमें एकतालाबभी है वहीं अखाड़ाकरके रहाहै तब एकब्राह्मण उनमेंसे उठखड़ाऊआ और जङ्गलको चला * वहांजाकर क्यादेखताहै एकतालाब पर राजाविक्रम तपस्या करताहै मिट्टीका एकमहादेव बनाकर पूजताहै। और दण्डवत् कररहाहै यह देखकर पण्डित उलटा फिरआया सब पण्डितोंको लेकर राजाके पासगया राजासे कहनेलगा तुमहमारे शास्त्रको झूठजानतेथे और अब हम देखआये फलाने जङ्गलमें राजाविक्र-

माजीत आनपड़ंचा राजा शंख उसरोज सुनकर चुपरहा उसकी सुबह को उठा और उस बनमें जातेही छिपकर देखनेलगा कि वह क्याकरता है। जहां राजा विक्रमाजीत बैठाथा वहांसे वह उठा और तालाब में स्नानकर फिर अपने आसनपर बैठा और उसीतरहसे महादेवकीपूजा करनेलगा और यह राजा भी निकलकर वहां खड़ाहुआ जब वह महादेवकी पूजाकरचुका तब उसी महादेव पर इसने पेशाबकिया। जितने राजाके साथलोगथे कहनेलगे इसकी अकल मारी गई है कि पूजेहुये देवता पर इसने मूता। एक पण्डित उनमेंसे बोल उठा महाराज। यहतुमने क्याकिया तब वह बोला हम जातके ब्राह्मणहैं देवता को पूजें या मिट्टी को ब्राह्मणों ने कहा राजा कुछ अच्छा नहींदेखते क्योंकि तुम्हारी मत कुमत होगई जब मरनेके दिन आदमीके नजदीक आतेहैंतो उसकी मतमाराजाती है राजा बोला तुम दीवानेहो और मुझेभी बावलाबनाते हो. जो भगवान ने लिखाहै वही होवेगा उसे कोईमिटा नहींसक्ता सब पण्डित आपस में कहनेलगे इस राजा ने क्या अपना अकाज किया तब राजाशंख ने विक्रमके मारने की यह फ़िक्रकी सात लकीरें कोयलेसे जादूकी काढ़ीं और उसपर भुस फैलादिया जो उसे मालूम न हो और उन लकीरोंका यह गुण था जो उसपर पांवधरे बावला होजाय और एक खीरा मंगवाकर जादूकिया और एक छुरी पढ़कर हाथमें रक्खी। उस छुरी खीरेका यहअसर था जो उस छुरीसे खीरा काटे उसका सिर कटजाय पण्डितों सेकहा उसे बुलाओ उन लकीरों पर पांव धरके जो आवेगा दीवानह होजायगा बावलाहोकरयह खीरा जो हाथ से लेके काटेगा तो सिर उसका कट जायगा। जितने क्षत्री राजाके साथथे अपनेदिलमें फ़िक्रमन्दहुये कि इस राजाने दग़ाकी यह क्षत्रियोंका धर्म नहीं। राजा ने विक्रमाजीत को बुलाकर कहा हम तुम बैठकर एक जगह खीरा खावें। वह राजा योगीथा और सबहाल जा-

नता था उन लकीरोंसे मचकर सिंहासनकेपास जाखड़ा रहा खीरा और छुरी उसके हाथसे लेली दहिने हाथमें छुरी रक्खी और बायें हाथमें खीरालिया राजाशंख शाफ़िला था फुरतीकरके उसके छुरीमारी राजा का काम तमाम किया। यहबात रत्नमञ्जरी ने जाहिर की राजा भोज। तू इसबात को सुन खुदा जो रहमकरे तो तिनके से पहाड़ करे और ग़ज़बकरे तो पहाड़से तिनका किताब में जोलिखाहै वहझूठ नहींहोता जब माकेपेटमें इनसान आता है चारबातें साथ लाताहै नफ़ा नुक़सान दुःखसुख तीन लोक और चौदह भुवनमें फिरे लेकिन क़िस्मत का लिखा नहींमिटता। भाईको मारा दिलमेंखुशहुआ उसके कहेकामाथेपरटीकादिया उठकरसिंहासनपरबैठा और चंवर डलवाया। उस राजा की रानी उसके साथ सती हुई यह राजनीति मे न्याव करनेलगा और जितने राजा उसके राज्यके थे सब सुनकर खुशहुये सुखसे आयेदोनों वक्त दरबार में हाजिर रहनेलगे इसीतरह से राजाराज्य करनेलगा। कितने दिनोंके बाद एक दिन राजा शिकार कोचला कुत्तेवाजबहरी और जितने शिकारीजानवरथेसाथ लिये और जितनेसाथमें अच्छे अच्छे गुलचले और तीरन्दाज थे साथ लिये जाकर एक जङ्गल में पहुंचे हिरन के पीछे राजाने घोड़ाडाला। राजा आगेबढ़गया साथकोई न पीछे पहुंचा एक बड़े जङ्गलमें राजा जानिकला और वहां जाकर शोच करने लगा कि मैं कहां आया राह भी भूला और साथ भी गंवाया इतने में जोनिगाह की एक बड़ा दरख़्त देखा उस दरख़्तकी फुनगी पर चढ़गया और वहांसे देखने लगा जंगलही जङ्गल नजरआता था मगर एक तरफ जो देखा एक शहर नजर आया उसको देख कर राजा को ढाढ़सबंधी वहनगर जो देखानिहायत आबाद है कबूतर उड़रहे हैं चीलें मंडलारही हैं सूरज की झलकसे हवेलियोंके कलस चमकरहे हैं अपने जीमें कहने लगा यह नया शहर मैंने देखा कल इसेछीनलूंगा और उसनगरके

राजाका दीवान जिसकानामखुतबरन था वहकौवेके भेष में रहताथाउस तरफ़ से उडाहुआ जाताथा। उसने यह राजाके मुहसे बात सुनी बहुत दिलमें ख़फ़ाहुआ गुस्से से उसके मुहमें बीट करदी। राजा ग़ज़ब में आया इतनेमें लोग कुछ उसके वहां आनपहुंचे उनके साथ होकर अपने शहरमें दाखिल हो दीवान को हुक्मकिया जहान में जहांतक कौवेहैं पकड़लावें यह सुनतेही चारों तरफ़ बहेलिये दौड़े और कौवे पकड़कर लाये और पिंजरोंमें बन्द किये राजाने जाकर उनकौवों से कहा अरे चण्डालोंवह कौनसाकौवाथा जिसने हमारेमुंहपर बीटकी। तुमसच कहोगे तोहम छोड़देंगेनहींतो सबकोमारडालेंगेयह सुनकर सब बोले महाराज हम में कोई कौवा नहींरहा जो पकड़ नहीं आया और वह काम हमसे नहीं हुआ तब राजा बियादह ख़फ़ाहुआ कि तुम सबकेसिवाय वह कौन कौवाहैकिजिसनेयहकिया तब उन्होंनेकहा महाराजसच पूछतेहोतोहम कहतेहैं बाहुबल एकराजा है उदय अस्तमें उसका राज्यहै और उसका दीवान खूतबरन बड़ा दाना बहुत हुशियार पण्डितहै वह कौवेके भेषमें रहता है यह काम उसका होतो हो क्योंकि कौवेकी सूरतएक वह सच कहाहै तब राजानेकहा वह किसतरह आवे उसका कुछ समझकर मुझे इलाज बताओ कोई तुम्हारे यहांसे वकील जाय और उसको ले आवे। तुम अपने यहां से दो कौवों को भेजदो जाकर लेआवें। उन्हीं में से दो कौवे वहींगये उन्होंको खूतबरनने बहुतसी आवभगतकी और कहातुम यहां किसलिये आये हो तब वे बोले महाराज। तुम्हारे बग़ैर हम सब कौवे मारे जातेहैं जो तुम राजा विक्रमाजीत पासचलो तो सबों की जानबचे तब खूतबरन बोला धन्य भाग जो तुमनेरे पास अपना मतलब समझकर आये हो जो कुछ काम मुझसे होगा मैं कमी न करूंगा। यह कहकर अपने राजा पासआया और राजासे हुक्मलेकर उनके साथगया जब सबकौवोंने उस दीवानको देखातब

राजासे कहनेलगे जिसका हम नाम लेते थे वह यही है राजा ने देखकर उसे आदरकरके आधीगद्दी पर बैठाया और क्षेमकुशल पूछी वह असीसदेकर बोला किसलिये आपने मुझे याद किया और किसवास्ते इन सबोंको बन्द-किया जब लूतवरनने यह बात पूछी तब राजा कहनेलगा मैं एक दिन शिकारको गयाथा इत्तिफ़ाक़न् जंगलमेंराह भूलगया तब एकपेड़ पर चढ़कर चारों तरफ़ देखनेलगा कि एककौवेने मुझपर बीटकरदी इसलिये मैंने सबकौवों को बन्दकिया जब तक कि इनमें से कोई सच न कहेगा एक कौवा इनमें से न छोड़ूंगा बल्कि जानसे मारूंगा। फिर लूतवरन बोला महाराज यह काममेराहै जब तुम्हें मैंने मग़रूर देखा तब मुझे ग़ुस्सह आया अक्ल मेरी उसवक्त जाती रही यह सुनकर राजाहंसा और बिगड़कर कहने लगा मुझे ग़ुरूर क्यों न हो राजा मैं हूं दाता मैं हूं सिपाही मैंहूं और कौनसी बात मुझमें नहीं तुमकहो तब वह बोला जो नगर तुमने नजर भर देखा उसका मैं सब बयान करताहूं राजा बाहुबल यहां का क़दीम राजा है और गन्धर्वसेन बाप तुम्हारा उसका दीवानथा राजा को उसकी तरफ़ से कुछ बेएतिबारी हुई तब उसे छुड़ादिया वह नगर अंबावती में आया और उस जगह का राजा हुआ उसका बेटाहू विक्रमहै तुझे जगम कौननहीं जानता पर जब तलकराजा बाहुबल तुझे राजतिलक न देगा तब तलक तेरा राजअचल न होगा और वह जो ख़बर पावेगा वहीं चढ़दौड़ेगा और तुझे आकर एक घड़ी में ख़ाक के बराबर करदेगा। तुझे जो मैं मसलहत दूं उसे मान और किसी तरहसे उस राजाके पासजा राजा को सुहब्बत दिलाकर तिलक उससे जिसमें अचलराजतू करे राजा विक्रम बड़ा अक़्लमन्दथा इस बातपर क़ायमरहा ऐसी सख़्त २ बातेंलूतवरनसे सुनकर कुछ दिलमें न लाया हंसकर कानदे सब सुनी फिर लूतवरन ने कहा जो तुम्हें चलनाहै तो हमारेही साथ चलो और पण्डितोंसे अच्छी

साइत दिखाकर चलनेकी तैयारीकरो। दूसरे दिनसुबह के वक्त राजा लूतबरन मंत्री के साथ होकर चला और राजाबाहुबलके नगरमें पहुंचा तब उस दीवान ने राजा से कहायहां तुमबैठो और मैं अपने राजाको तुम्हारेआने की खबरदूंयह बातराजासे कहकर अपने राजाकेमन्दिर में गया उसको सलाम किया और सब समाचार और अपनी हकीकत समेत राजाका अहवालकहनेलगा महा राज गन्धर्वसेनका बेटाविक्रमआपके दर्शन के लिये आया यहबात राजाने सुनकरतुर्तबुलाया तबवह दीवानराजा को लेगया और अपने राजासे मिलाया। राजा उसेउठ-कर मिला और आदरकरके आधेआसनपर बिठाया उस कुशलपूछी। बाद उसके रहनेकेलिये मकानबताया।राजा उठकर उसमकानमें आया वहां रहनेलगा जब दसपांच दिन बीतगये दीवानसे राजा विक्रमने कहातुम बिदा करवादोतो हम अपने स्थानको जांय तब मंत्री कहनेलगा हमारे राजाका यह सुभावहै जो उनसे मिलनेको आता है उसेआपसे कुछ सतनहीं करते तुम कुछ सत मांगो और जिस बातकी इच्छाहो सो कहो अपने जीमें कुछ शर्म न करो तब राजा बोला मुझे कुछ नहीं चाहिये जो कोई जो वरचाहै मुझीसे ले तब दीवानबोला राजा यह हमारी बात सुनो हमराजा के घरमें एक सिंहासन है सो वह सिंहासन पहले महादेवने राजा इन्द्रको दियाथा और उस राजाने इसको दिया। उस सिंहासनमें यह गुन है जो उसपर बैठे सात द्वीप और नवखण्ड पृथ्वी का अजीत राजकरे। और बज्रतसा जवाहिर उसमें जड़ा है और बत्तीस पुतलियां भी कि अस्तदेकर उनको सांचेमें ढाला है लगीहैं तुम कुछ सत होतेजये वह सिंहासन राजा से मांगो कि उसपर बैठकर आनन्दसेराज करोगे। यहराजा को दीवान ने सलाहदी और सुबह होतेही राजा के दरबारमेंदीवानगया खबरदी महाराज। विक्रम कुछ स-तहोता है बाहर खड़ा है * यह सुनकर राजा तुरन्तही

दरवाजे पर आया और विक्रम ने देखकर अपना माथा नवाया। राजाने विक्रमसे कहा जो तुम्हारे जीमें आवेसो मांगो मैंप्रसन्न होकर बहीदूंगा। विक्रमबोला महाराज। जो आपनेमुझपर दया कीहै तोबही सिंहासनमुझे बख़्शो जो इन्द्रने तुम्हें दिया है * यहबात सुनकर राजा बोला अच्छा सिंहासन तो हमने तुम्हें दियापर यह काम मंचो का है इसे तुम नहीं जानतेथे यह कहकर सिंहासनमंगाया और पानतिलकदेकर उसपर बिठाया और कहा कि तुम अब अजीतहुये किसीबातकीजीमें चिन्तानकरना गन्धर्वसेन मेराबड़ा दोस्त था और तू उसके ख़ानदान में बड़ा नामवरहुवा इस तरह से राजा विक्रम को अशीस देकर रुख़सतकिया। राजा वहां से अपने घरको आया और अपनेजीमें बहुतसा खुशहुआ और जितने उसराजा के दुश्मनथे उन्हींके जीमें डरहुआ राजाके देशके लोगोंने बहुत खुशी की और द्वीप २ के राजा ख़िदमत के वास्ते आये और जो राजा ग़रूर करता था उसका वह राज जाकर छीनलेताथा और अपना राज करता ग़रज़ हृदयसे अस्त तक खूब उसने अपना राज किया सब रैयत आनन्दसे उसके राजमें बस्तीथी और जो चञ्चीये उससेडरते थे और जो कोईदेश विदेश जाताथा वहां विक्रमका धर्म सुनताथा। सब मुल्क आबाददेखता था कहीं दुखी उसे नज़रनआता था डांड और बांध उसके राजभर में किसी ने कानसे न सुना बल्कि घरघर आवाज वेद और पुराण की आती और जितने लोगथे स्नान ध्यानकरके तीनों वक्त अपने भगवानकी बादमें रहतेथे अपने २ घरमें सबराजा कीसी सभाकरके खुशरहतेथे राजाराज प्रजासुखी इसमें एकदिन राजा विक्रमादित्य ने सभाकी और सब पण्डित बुलाये। पण्डितोंसे राजाने पूछा मेरेजीमें है अबमैं संवत् बांधूंसो तुमसे पूछताहूं किमैं इस बातके लायकहूं कि नहीं तुमशास्त्रदेखकर सुझसे विचार करके कहो तब सब पण्डितोंने विचारकरके राजा से कहा महाराज अब जो-

तुम्हारा प्रताप है मेरा तीनो भुवन में छारहा है अब जो कुछ तुम्हें करनाहै सो कीजिये दुश्मन तुम्हारा कोई नहीं * राजा ने यह सुनकर पण्डितों से कहा कि अब तुम बताओ कि किस विधि से संवत् बांधें जो कुछ शास्त्र की रीतिसे सुनासिवहो तिस तरह से हमें कहो तब पण्डितों ने कहा पहिले तो तुम अजीतमाल पहनो फिर उसकेबाद देशके ब्राह्मण और जमीदार राजा और अपने सब कुनबेकेलोग बुलावो सवालाख कन्यादान और गोदान सवालाख ब्राह्मणों को करो और जितने ब्राह्मण तुम्हारे मुल्कके हैं उनको वृत्तिका दो एक वर्षका खजाना जमीदारोंको माफ़करो और जो भूखा कंगाल इस बर्षमें आवै उसको वृत्तिका हुक्मकरो। इसीतौरसे राजाने सब काम किया और सिवाय उसके जो २ दानपुण्य किया उसका बयान किससे हो। एकवर्ष तलक राजा अपनेघरमें बैठा पुराण सुनतारहा और इसतरहसे संवत् बांधा कि तमाम दुनियांकेलोग धन्यधन्य करते थे। यहसब अहवाल रतन मंजरी ने सुनाया और राजा विक्रमादित्य का यशगाया और कहा राजाभोज। जोतुम इतने हो तो इस सिंहासनपरबैठो सुनके राजाने कहा सचहै जो कुछतूने कहा यह बात मुझे पसंद आई। इतना कह कर राजा अपनी सभामें बैठा दीवान सुतसहियों को बुलाया कि तुमसब तैयारी संवत बांधनेकी करो उसदिन को वह साइतयों टलगई राजा ने दूसरे दिन फिर सिंहासन पर बैठने की तैयारीफरमाई। दीवानको बुलाकर कहातुमसब इसकी तुर्त तैयारीकरो देरनहो * यहबातसुनकर बरूचपुरोहित बोलाराजा अभी क्यों घबरातेहो यह एक २ पुतली तुमसे बातकरैंगी उनकी बातसुनकर जो कुछ करना होगा सो कीजिये यह सुनकर राजा ने चाहा सिंहासन पर पांव बढ़ाकर रक्खे कि *

दूसरी पुतली चित्ररेखा बोली ॥

राजा तेरेयोग यह आसन नहीं है और ऐसी अनीति

कोई करता नहीं जैसी तू करनेपर तैयारहुआ है। इस सिंहासनपर बैठे वह जो विक्रम सा राजाहो तब राजा बोला विक्रम में क्या गुणथे सो मुझसे कह तबवह बोली। एकदिन राजाविक्रम कैलाशको गया और वहां एकयती से मुलाकातहुई। उसने राजाको योग की रीत बतलाई राजाने अपनेजीमें इरादाकिया कि योग कमावें। योग करनेको तैयारहुआ राजतिलक भर्तृहरि को दिया राज पाटपर उसेबिठाया आप राजकाज धन दौलत छोड़कंथा पहन भस्मलगा संन्यासी बनकरजंगलको निकलगया और उत्तराखण्डमें जाकर योगसाधनेलगा उस पहरके जंगल में एक ब्राह्मण तपस्या करताथा धूंआपीके रहताथा और भूख प्यासका दुःख सहता था ब्राह्मण की तपस्या देख के देवता खुशहुये वर उसे देनेलगे और उसने न लिया तब आकाशवाणीहुई कि हम अमृत भेजते हैं सो तूले। एक आदमी की सूरतमें आकर देवता उसे फलदे यह कहगयाकि जो इसको तू खावेगा चिरंजीव होगा फललेकर वह तुर्तचला खुशी२ अपने घरको आया ब्राह्मणीके हाथ में वहफलदिया और कहाकि आजदेवताओंने अमृतफल मुझे देकर कहा जो इसे खावेगा अमरहोवेगा यह बात सुनकर ब्राह्मणी व्याकुलहो रोनेलगी फिर बोली यहअब दुःख और पाप हमकिस तरह काटेंगे और हमेशहभीख क्योंकर मांगेंगे खाल मांस सब हाड़में मिलजायगा ऐसे जीने से मरजाना बिहतर है मरजाने वाले को इतना दुःख नहीं होता इसफलको यह खावेगा जो हमेशदुःख सठावेगा इससे योग्य यह है कि तुम यह फल लेजाकर राजाको दो उससे कुछधनलो यह सुनकर ब्राह्मण अपने जीमें समझा यह सचहै इस संसारमें इतना जंजालकौन सहै। इसीतरह आपसमें बातें सलाह की करके ब्राह्मण वहां से राजाके पासचला जब राजा के द्वारेपर पहुंचा द्वारपाल से कहा राजा को खबर दो ब्राह्मण आपके लिये एकफल लाया है। दरबान ने राजा से जाकर अर्जकी

महाराज एकब्राह्मण फल आपकी खातिर लाया है और दरवाजेपर हाजिर है जोकुछ हुक्महो राजाने उसीवक्त हुक्म किया उसे अभीलाओ अहलकारोंने वोहीं हाजिर किया। ब्राह्मणने राजाको आकर आशीषदी कि धर्मलाभ हो और वह फल राजाके हाथदिया राजा ने उसको हाथ में लेकर पूछा इसका वृत्तान्त कहो तब ब्राह्मण कहनेलगा स्वामी मैंने जो तपस्या की थी सो देवताओंने उसका वर अमरफल दिया मैं अमर होकर क्या करूंगा इसफलको तुम खाव और अमरहो इसवास्ते कि तुमसे लाखोंजी पलते हैं। यह सुनकर राजा हंसा और उसे लाखरुपये दिये और गांव दृत्तिकरके बिदा किया फिरजी में विचारकरने लगा मैंतो पुरुषहूं कमजोर न हूंगा यह फल रानी को दियाचाहिये वह मेरे प्राण का अधार है वहजीती रहैगी तोमैं सुखभोग करूंगा। यह दिलमेंठान कर राजामहलमें दाखिलहुआ फलरानी को दिखाया। रानी हंसकर पूछनेलगी महाराज यहक्या चीज है जिसे बड़े यत्नसे लियेहुये तुम आयेहो इसका व्यौराकहो तब राजाने कहा सुनसुन्दरी तूजो इसफलको खायगी सदा योवनवती रहैगी दिन २ रूप बढ़ेगा और अमर होगी। रानीने यह अहवाल सुनकर फलराजाके हाथसे लेलिया और कहा महाराज मैं इसे खाऊंगी राजा फल देकर बाहरगया और रानीका जोएक मिचकोतवालथा रानी ने उसे बुलाकर वहफलदिया और कहा यह हमेंराजाने देकर कहाहै जोइसेखावेगा सो अमरहोगा तुममेरे प्यारे हो इसेखाओ और अमरहो तो मुझे बड़ी खुशीहो सुनतेही कोतवालने खुशहोकर फलहाथसे लेलिया और अपने मकानको गया। एक कसबी उसकी आशनायी उसे फल देकर कहा यह अमरफल मैं तेरेवास्तेलायाहूं तूइसेखा यह सुनकर उसनेहाथमें लेलिया और उसे बिदा किया फिर अपनेजीमें बिचारा एकतो मैं कसबीहूं और अमर हूंगी तो कितनापाप मैं कमाऊंगी इससे बिहतर यह है

कि यहफल राजा को जाकर दीजिये जो राजा जियेगा तो मुझे यादकरेगा और पुण्य होवेगा पाप सभी कटैंगे। यह सोचकर राजाके दरबारमें गई वहफल राजाकेहाथ दिया राजा फलको देखकर बेसुधहुआ अपनेदिलमेंकहने लगा कि फलतो मैंनेरानीको दियाथा। जीमेंयहविचारा और हंसकर उससे पूछनेलगायह फल तुझे किसने दिया। वह बेश्या सबबातें जानतीथी पर राजासे फक्त यह कहा कि मुझे कोतवालने दिया है वह सुनकर वह समझा कि रानीने बुराकाम किया उसे कुछरुपया देकर विदाकिया और आप सोचकरहगया फिर समझकर कहनेलगा मैंने तो मनअपना रानीकोदिया और उसने अपनादिल कोतवाल को। मनका भेदी कोई न मिला ऐसे जीने को और मेरीबुद्धिको धिक्कार जो मैं फिर राजकरूं और फिर उस रानीके तईं और अत्यन्त उस कोतवाल और उस बेश्या को औ धिक्कारहै कामदेवको जो यहमत संसारको हरताहै कि जिससे संसार अहमक़ होजाता है। बाद उसके फलउसिये छुये महलमें गया। अपने चित्तमें कहनेलगा यह तनमन धन जीवसब चंचल है और यह संसार जानहार है इन्होंमें कोई क़ायम न रहेगा जबही पैदाहुआ तबही कालनेखाया और अब मरताहै तो कुछसाथ नहींजाता और मेरा २ करके जन्मगंवाताहै सुखके सबसाथीहैं और दुःख कोईनहीं बांटता। यह संसार जोहै असुद्र है और मायाइसका जलहै तृष्णा मछलीहै ऐसा बधिक कोई न मिला जो इसको मारखेखाय योंविचारकरताहुआ रानी के पासगया। और उससे पूछा तूने वहफल क्याकियातब वहबोली महाराज मैंनेखाया। सुनकर राजाने वहीफल रानीको दिखाया वह देखकर जर्दहोगई तब राजा उस फलको लेकर बाहर आया धोकर खाया तिसपीछे सोच उसको हुआ निदान बनके जानेका सामान किया राज पाट धन दौलत और रानी की मुहब्बत तजकर चला न किसी से पूछा न किसी को साथ लिया ऐसा निर्मोही

होकर निकला कि किसी का ध्यान न किया। देश देश और नगर २ में चर्चा हुई कि राजाभर्तृहरि राज तज कर योगी हुआ और यह बात घड़ती २ राजा इन्द्रके अखाड़े में पहुंची कि वहतो देश छोड़केगया और उसके देशमेंबड़ा हल्लड़हुआ। तब यह बात सुनकर सब देवताओंने मिलकर यह विचारकिया कि एक देवको रखवालीके वास्ते राजाभर्तृहरिके देशमें भेजो कि कोई बिहत रैयतपर नकरे। देवको बुलाकर वहांभेजदिया और कहा वहां निगहबानीकर। यहां तो वह रखवाली करताथा और वहां राजाविक्रम का योग पूरा हुआ वह अपनेमन में मनसूबा करता था कि मैं छोटे भाई को राजदे आया हूं चलकर देखूं कि वह किस तरह राज करता है। यह अपने दिलमें कहके चला और रातको अपने नगरके पास पहुंचा देवने उसे आते देखा तब वहपुकारा तू कौन है जो इसवक्त शहरमें आताहै या तोअपनानाम बता नहीं तो तुझे मारडालताहूं तब उसने कहा मैं राजाविक्रम हूं तू कौन है जो मुझे टोकता है देवबोला मेरे तईं देवताओं ने भर्तृहरि के राज की रखवाली के लिये भेजा है राजाने पूछा भर्तृहरि क्याहुआ उसने जवाबदिया भर्तृहरिको कोई यहांसे छलकर लेगया यहबात सुनकरराजाहंसा और उससेकहा वहतो मेरा छोटा भाई है फिर दैत्यबोला मैं नहींजानता कि तुम कौनहो और जो तुम विक्रम इस देशके राजाहो तो मुझसेलड़ो और मुझेमारकर जाओ बिनालड़े मैं तुम्हें इस शहरमें नहीं पैठनेदूंगा यह सुन राजा बिगड़के बोला तू मेरे तईं क्या डराता है और जो लड़नाचाहै तो तैयारहो इसतरह दोनों बातेंकर तैयारहो लड़नेलगे और राजा उसदेवकोपछाड़कर छातीपर चढ़बैठा तब वहबोला राजा तू मुझसे वरमांग मैं तुझे जीदान दूं। यहबात उसकी सुनकर राजा हंसकर बोला मैंने तुझेपछाड़ा है और मारडालूं तू मुझे जीदान क्यादेगा तब वहबोला राजातू मुझे छोड़देमैं तेरेआगे इस-

का सब ब्यौरा कहताहूं। तेरेराज की धूम सब देशमें है और सबराजा तुझसे डरतेहैं पर मैं जो बातकहूं सो तू कान देके सुनतेरेशहरमें एकतेलीहै और एककुम्हार सोतेरे मारनेकी फिक्रमेंहैं पर तुम तीनोंमें से जो देाको मारेगा वही अचल राज्यकरेगा। तेलीतो पातालका राजकरता है और वहकुम्हार योगीबनाजंगलमें तपस्या करताहै अपनेदिलमें कहताहै कि राजा को मारके तेलीको तेलके जलते कढ़ावमें डालूं और देवीको बलिदेकर मैं निश्चन्त राजकरूं और तेली कहता है राजा और योगी को मार के त्रिलोकी का राज मैं करूं और तू इसबात को न जानता था मैंने इसवास्ते तुझे खबरदार किया तू उनसे बचारहना और आगे जो मैं कहताहूं सो तू सुन योगी ने उसतेलीकोमारकर अपनेबशमें कियाहै सोतेलीएकसिरस के दरख्तपररहताहै अब वहयोगी तुमको न्योतादेनेआवेगा छलकरके तुझे लेजायगा तू न्योतालेकर वहांजाइयो जब वह कहैकि तू दण्डवत्करे तबतू कहियो मैंदण्डवत्करना नहींजानता मेरेतईं एकजन दण्डवत् करताहै जो तुम झुकहो और मैंचेला तो मुझै दण्डवत्करना बताओ उसी तरह मैं दण्डवत् करूं जबवह शिरनिकालावे तब तू खांडा मारना कि उसका शिरजुदाहोजावे और वहां कढ़ाव जो देवीके आगे तेलका खौलताहोगा उसमेंउसको और दरख्त से तेलीको उतारके दोनोंको उसी कढ़ावमें डालदेनाय्ह मेरी बात गांठ बांध इसे हरगिज कभी न भूलना। यह बात कहकर वह देवचलागया और राजा अपने महल में आया। और ज्यें शारे नगरमें खबरहुई कि राजा विक्रमादित्यआये दीवानसुतसही और सब अहलकारनजरेंलाये तमामशहरमें आनन्दहोगया। घर २ मंगलाचार होनेलगे यहांतो खुशीके नक्कारे बजरहेथे इतनेमें एक योगी आया और राजाको आदेश सुनाया एक फल उसके हाथदिया उसने हंसकर वह फल हाथमें लिया योगीने कहा राजा हमारे यहां यज्ञहोताहै एकदिनका तुम्हारा न्योताहैतब

राजाने कहा हम आवेंगे तुम अपने मनमें चिन्ता मत करो सांझ हुये पहुंचेंगे। योगी यह सुनतेही ठिकाना बता अपनी मढ़ीको गया जब शामहुई राजा भी खांड़ा फरीले तैयारहुआ औरकिसीसे न कहा अकेला चलागया तुर्तयोगी के पासपहुंचा और आदेशकहा। योगी बोला कि देवी के आगेजाकर दण्डवत्कर जोदेवी तुझसे खुशहो राजाबोला स्वामी मैं दण्डवत् करना नहीं जानता कि किस तरह करतेहैं जो मुझे बताओ तो करूं योगी बतानेलगा और ज्योंही शिरझुकाया राजाने देवकी नसीहत याद करके एकखांड़ा ऐसा मारा कि शिर धड़सेजुदा होगया और उसे मारते खतरा न किया और उसदरख्तसे तेलीको भी उतार देनेको जलते कढ़ावमें डालदिया * तब देवीबोली धन्य है बिक्रम तेरे साहस को। मैं तुझपर प्रसन्न हुई तू मुझसे वरमांग और धन्यहै तेरेमाता पिताको कि जिनके घरमें तूने अवतारलिया देवी जब यह कहचुकी तब वे बीरआकर हाजिरहुये राजासे कहनेलगे कि हमआगिया और कोयला देवीने तुम्हारी सेवाको भेजेहैं जो तुम्हारी कामना हो सो हमसे कहो तुर्त पूरी करदें सब जगहके जानेकी हम सामर्थ्य रखते हैं जल थल मही आकाश में पवनके रूप होकर जहांकहो हमचलेजांय जैसे हनुमान तुरन्त लंका पहुंचे वैसेही हमभी जासक्ते हैं * यह सुन खुशहो राजाने कहा मुझे तो कुछ कामनहींहै अगरमेरे तईं वचन दो तो देवी से तुम्हें मांगलूं लेकिन ऐ बीरो। जो तुमसे वचन देकर निर्वाहकिया जाय तो वचन दो। उन बैतालों ने कहा कि अच्छा तब राजाने उनको वचन बन्दकर मांगलिया और कहा जिस जगह मैं याद करूं तुम उसजगह मेरेपास पहुंचना तब बीर बोले कि राजा तू जिसजगह हमें यादकरेगा वहां हम पवनरूप होकर पहुंचेंगे। यह बात उनसे कहके राजा घरको गया। ये बातें चित्ररेखा पुतलीने राजासे कहीं कि राजा बिक्रमके ये काम थे इतनेयोग तो तू नहीं है * फिर वे बीर राजा

के ताबेदार थे और आगे बक्तपर जो काम किये जहां विक्रमको गाढ़पड़ी वे दोनों आकर हाजिर हुये जोकोई ऐसा काम करे तो सिद्धहो। राजा तू अपने जोरपर ग़रूर मतकर तुझसे ऐसे पृथ्वी में करोंड़ों होगये हैं। इतनी बात जब पुतलीने कही राजाकी वह भी साइत टलगई तब दूसरे दिन शुभदिन राजाने फिरपाट बैठने की तैयारी कीऔर ज्योंहीं चाहा कि सिंहासनपर पांव धरै कि॥

तिसरिवामा तीसरी पुतली बोली॥

तुम्हारा यह कामनहीं जो इसपर बैठो पहिले मुझसे एक कथा नई सुनलो। एकदिन राजा बीरबिक्रमादित्य दरियाकिनारे एक महलमें खिलवतकरके बैठे थे रागहो रहा था और हरएकरङ्गकी चुहल मचरहीथी कि दिल फरेफ्तह होजावे और एकसे एक अलबेली खूबसूरत पास बैठीथी राजाका दिल बड़ा बेअख्तियार लगरहा था कि पंथी चिया सङ्गलियेहुये और उस चिया की गोदमें एक बालक घरसे खफ़ा होकर निकले थे दरिया के किनारे पास उसीमहलके आकर गुस्से के मारे कूदपड़े मर्दके एक हाथमें हाथ रण्डीका और एक हाथ में लड़के का हाथ यों तीनों डूबनेलगे तब वह पुकारे ऐसा धर्मात्मा कौनहै जो इनतीनों आदमियोंकी जानेंबचावै। उनमें से वहमर्द हायकरके पुकारा जो कोई गुस्सहमार न सकै तो इसी तरह वे अजल मरजाता है और गिरके बक्त पछताता है। उसकी आवाज राजाने सुनतेही लोगों से पूछा यह कौनदुखी पुकारता है तब हरकारोंने खबरदी कि महाराज एक मर्द और रण्डी लड़के समेत डूबते हैं उनमें से वहमर्द चिल्लारहा है कोई ऐसा परउपकारी होकिहम डूबतोंको निकाले * यह हरकारा कहताही था किवह फिर पुकारा हम तीनजीव डूबते हैं कोई हमें भगवान् का बंदा पारलगावे यह सुनकर राजा वहांसे धायाऔर आकर उसदरियामें कूदपड़ा जाकर एक हाथ में रण्डी

और दूसरे हाथ में लड़के को पकड़लिया। वह मर्द भी राजा से लिपट गया तब राजा घबराया और आप भी डूबनेलगा अपने ईश्वर को यादकिया और कहा कि हे नाथ मैं धर्मकेवास्ते आयाथा और इसमें मेराहीजोजाता है धर्म करते अधर्महोवे। राजा यह कहकर बहुत जोर करनेलगा और जोर उसका कुछकाम न आताथा तब उसने अगिया बेताल दोनों वीरों को याद किया यादकरतेही वे वीर आकर हाजिर हुये और चारों को उठाकिनारे परधरदिया तबवह विदेशी राजाके पांवपर गिरपड़ा कि महाराजतुमने हमतीनोंको जीदान दियातुम्हींहमारे भगवानहो क्योंकि जीदान तुमसे पायाराजा हाथ पकड़कर उनतीनों को रंग महलमें ले आया और बिठाकर कहा तुम्हेंजो चाहिये सो हमसेमांगलो तबवह बोला महाराज हमेंक्षमा कीजियेतो हमघरको जांय और जबतलक जियेंगेआपको आशीर्वाददिया करेंगे ऐसा कुछ तुमने होदियाहै। तबराजाने अपनी तरफ़से लाख रुपये देकर उसको घर भिजवा दिया। इतनी बात कह पुतली फिर बोलीराजा इतनेलायक तुमहोतो इससिंहासन पर बैठो और यों बैठोगेतो तमामलोग हंसेंगे। वह भी मुहूरत राजाका टलगया दूसरे दिन फिरराजा दिलमें सोच करताहुआ सिंहासन पर बैठनेको आया तब॥

चन्द्रकला चौथी पुतली बोली॥

सुनो राजा तुम मन मलीन क्योंहो बैठो हमारे पास और सुनोजो मैं कथाकहूं। एकरोज एकपण्डित कहींसे राजा विक्रमादित्यके पासआया और उसनेआकरबयान कियाजो कोई एकमहल बनानेकी विना सुआफ़िक मेरे कहनेके धरे चैनउठावे और बड़ा नामपावे तब राजाने कहा आच्छाजाकिरकर वहब्राह्मण कहने लगा तुलालग्न जबआवे जो उसमन्दिरको उठावे जबतलकवह लग्न रहे तबतलक काम उसमें जारीरक्खे और जब तुला लग्न

होचुके तब उसका काममौकूफकरेइसीतरह तुलालग्नही में वहसारा मकानतैयारी परलावे उसका अटूट भण्डार होा और लक्ष्मी उसके यहांसे कभी न जाय। यह सुन कर राजा मनमें खुश हुआ दीवान को बुलाया और मन्दिर उठानेकी इजाजतदी कि तुम अच्छीजगह ढूंढ कर महल बनाओ इतनेमें तुलालग्न भी आनपहुंची उसमन्दिर की नींवदी देश देशमें यह अवाई हुई कि राजा तुलालग्न में महल बनवाता है जितने कारीगर उसमें काम करते थे वे उठकर तुलालग्न मनाते थे जबलग्न आती थी खुश होहो बनातेथे कहीं उसमें कामसोनेका और कहींरूपे का और कहीं लोहेका और काठका नईनईतरह से बनवाता था। चुनाचिदरियाके किनारे पर वह हवेली बनाई चार दरवाजे और सात खण्ड उसमें रक्खे जगह जगह जवाहिर अनमोल उसमें जड़े और दरवाजे पर दो नीलम के बड़े नगीने लगाये जो किसी को नजर न लगे वह जड़ाऊ महल कितने बरसोंमें ऐसा तैयार हुआ कि दुनियांके परदे पर किसीने दूसरा न आंखोंदेखा न कानों सुना। तब दीवान ने जाकर राजाकोखबरदी महाराज वह मन्दिर अब तैयारहुआ आपचलकर उसेदेखिये और जोकोई उस महल को देखताथा मोहितहो रहताथा। राजावहां से मकान देखनेकोगया। एकब्राह्मणभी साथगया महलको जब राजा ने सुलाहिका कियातब ब्राह्मणदेखकरऔर हंसकर कहने लगा अय राजाऐसा घरजो मैं पाऊं तो बैठ यहां पातुर नचाऊं। यहबात सुनकरराजानेमनमें कुछसोच न किया गंगाजल और तुलसीदल लेकरघर ब्राह्मण को संकल्प कर दिया। वहघरपाकर ब्राह्मणकोऐसाहुआ आनन्दकि जैसे चकोररातको पावेहै चन्दतुर्त अपनेबच्च कुनबेको ले आया और वहां आकररहा रातको खुशीसेपलंगपर सोता था कि पहररातगयेलक्ष्मीआई और कहनेलगी कि बेटा हुक्म देतोमैं गिरूं और घरबाहर संपूर्ण भरूं खौफसे उसनेकुछ जवाब न दिया तब वहदो पहररातको फिर आई और

कहा कि अयब्राह्मण अज्ञानीमुझे आज्ञा दे उसने चिन्ता करकेरात गंवाई और सुबहउठ राजाके पास आया मन मलीन और रातकेअहवालसे डराहुआ रंगपीलचहरे का और डरसे कुम्हलाया हुआ। राजाइस हकीकतसे देख उसे हंसने लगा फिर कहा कि कलकीसी खुशीहमने आज न देखी ऐ ब्राह्मणयह अचंभेकी बातहै तब ब्राह्मण बोला सुन खामी मेराहुःखतुमदाताहो प्रजाके सुखदेने वालेऔर तुम सा केवंश नरेशहो जैसे राजाकर्ण और राजाइन्द्र अपनेवक्त में दानीथे ऐसे इससमयमें तुमहो। आपने जोमन्दिर मेरे तईं दियाहै उसकी हकीकत मैं कहता हूं मालूम नहीं कि उसमेंभूतहै यापिशाच मेरेतईं उसने सारीरात सोने नहींदिया आपके प्रतापसे या लड़कोंके भागसे जीतावच के मैं यहां आयाहूं। ये चौखांगखाना मुझेविहतरहै पर उस महलमें न रहूंगा यह बात सुन राजाने प्रधान को बुलाया और उसे कहा जो उस मकान की लागतहै सो हिसाबकरके इस ब्राह्मणको दो। राजा की आज्ञा पाय दीवानने हिसाबकर तोड़े रुपयों के लदवाकर ब्राह्मण के साथ करदिये और वह अपने घरको गया। उसदिन सा इत देख हवेलीमें राजाजारहा और बैठकर कुछविचार करने लगा। इतमें हाथ बांधकर लक्ष्मी आनखड़ी रही बोलीधन्य राजाविक्रम तेरे धर्मका इतनाकह लक्ष्मी उस बक्तातो चलीगई राजाने वहां आरामकिया जबरहरात रही तब लक्ष्मी फिरआई और कहनेलगी राजाने कहां गिरूं राजाने कहा जोतू पड़ाचाहतीहै तो पलंग छोड़के जहां तेरी इच्छा होवे तहां गिर। इतने में खूब तरहसे सोनेका मेह तमाम नगरमें बरसा सुबहउठी राजा उठा, देखकर यहकहनेलगा हमारी रैयतपर बहुत सख्ती थी लेकिन अब कोई दिन निश्चिन्तहो आरामसे रहेगी इतने में दीवान आया और खबरदी महाराज तमाम नगरमें कंचनबरसाहै अबजो हुक्महो सोहमकरें तबराजाने कहा शहरमें ढोल बजवादो जिसकी हदमें जो दौलत है सोले

और कोईकिसीको मना न करे। यहराजाका हुक्मपाकर सब रैयत ने दौलत अपने २ घरमें भरी। येबातें कहकर पुतली राजा भोजसे कहने लगी सुन राजा विक्रमके गुण वह ऐसाराजाथा और प्रजाका हितकारी तूकिसतरह उसके सिंहासन पर बैठताहै तेरी क्या जानहै। यहबात पुतलीकी सुनकर राजा अज्ञान हुआ और वररुचि पुरोहितभी शरमिन्दः हुआ वहसाइतभी गुजरगई दूसरेदिन राजा फिर सिंहासन पर बैठने चला और चाहे पांव अपना धरे कि॥

लीलावती पांचवीं पुतली बोली॥

सुन राजाविक्रमके गुण। एक दिन दोभक्ष आपसमें झगड़नेलगे एकनेकहा कर्मबड़ा और एकनेकहा बलबड़ा किसमतका तरफदार बोला नसीब बड़े हैं कि अदनाको आलाकर देतेहैं और जोरका जानिबदार कहनेलगा जोर बड़ा है जोरावर होवे तो तमाम जहान को जेर करदे। इसीतरह दोनों झगड़ते राजाइन्द्र के पास गये हाथजोड़ कर कहनेलगे स्वामी हमारा न्यायकरो जो दोनों में सच्चा हो उसे फरमाइये और झगड़ा निबेड़िये तब राजा इन्द्र बोला यहहमसे न होगा इस इन्साफको यह करेगा जिसने योगकिया होगा इससे बिहतर यह है कि तुम मृत्युलोकमें राजाविक्रमादित्यके पासजाओ इस न्यायको वह चुकावेगा उन्होंने राजाइन्द्रकी आज्ञापाय राजाविक्रमादित्यके पास आय यह जाहिरकिया कि हमतीनों भुवन में फिर आये और किसी ने हमारा न्याव नहीं चुकाया इसका धर्म अधर्म बिचार हमारा न्यायकरो। यह बात सुन राजा ने कहा आज तुम अपने २ घर को जाओ छः महीनेके बाद हमारे पास आना तब हम जवाब इसका देंगे। यह सुनकर वे दोनों अपने घरगये राजा मनमें अपने चिन्ता कर चरना पहन काछा चढ़ा खांड़ापरी ले विदेश निकला और अपने दिलमें यह अहद किया कि जबतलक इसकाभेद न पावेंगे तबतक देशमें फिर न आ-

वेंगे जब फिरते २ समुद्र किनारे पहुंचा वहां एक नगर उसमें बहुतबड़ा निपट सुहावना खूब आबाद पाया और उसमें तरह २ की हवेलियां जिनमें करोड़ों रुपये लगे थे और उनमेंसिवाय जवाहिरके कुछनजर न आताथा देख कर राजा कहनेलगा कि जिसका यहनगरहै वह राजा कैसाहोगा। शहरमेंफिरते २ शामहोगई और शहरआखिर न छुआइतनेमेंदेखताहै कि एकदूकानमेंमहाजन शिर निहुरायेहुये बैठा है। राजा उसके सामने जा खड़ा हुआ तब सेठने राजासेकहा तू किसदेशसे आयाहै और तेरा मनमलीन क्योंहै किसेढूंढ़ताहै और क्या तेरा काम है अपना अर्थ मुझसे कह। किसका बेटाहै तू और क्या तेरानामहै। तबवह बोलासेठजी। मेरानाम विक्रमहै मैं आज तुम्हारेपास आयाहूं मेरेदिलमें एक मक़सदयहथा किमैं राजासे मुलाक़ात करूंगा आज मुलाक़ात न हुई कलमैं राजासे मिलूंगा और उनकी सेवा करूंगा जो वे मुझेनौकररक्खेंगे और मेरामहीना करदेंगेतो मैं रहूंगा यहबात सुनकर वह महाजन बोला तुम क्या रोज लोगे राजा कहनेलगा जो कोई लाखरुपये रोज़दे तो हम रहैं तब वह साहूकार बोला भाईतुम क्या काम करतेहो जो तुम्हें लाखरुपये रोज़ कोई देवे वह काम मुझे बतलाओ तब उसने कहा जिसराजा के पास मैं रहताहूं उसकी गाढ़ी मुशकिलमें काम आताहूं सेठ हंसकर बोला लाख रुपये रोज़ हमसेलो और सहीमें हमारे सहायहो सुबह हुये नौकर रक्खा और दूसरे दिन लाख रुपये गिनदिये इसने उनमेंसे आधेरुपये अपने भगवानके नाम संकल्पकर ब्राह्मणों को दिये आधे कंगालों को और जो बाकी रहे उनकाखाना पकवा कर भूखोंको खिला दिया रात हुये घर फिरजो एकफक़ीरने सवाल किया उसेभी खड़ा बन्धक रखवाकर भोजनकरवा दिया आप चनेचबाकर गुज़रान की। कितनेदिन उससाहूकारके पास रहकर रुपये हर रोजयोंहीं खर्चकरतारहा। ग़रजक़िसमत ने तो यावरी

की तबज़ोरबोला अब मेरीबारी है कि यकबयक सेठ के दिलको कुछ खटाटी हुई एक जहाज़ तैयार कर किसी देशके जानेकाइसने इरादाकिया और बिक्रम से कहा मैं किसी देश जाताहूं यह बोला स्वामी मैंने यहवचन दिया था कि साढ़ीभीड़में मैंतुम्हारेकाम आऊंगा अबमैं तुम्हारे साथ हूं कि तुमने मेरा प्रतिपाल किया है तब उसे भी सेठने जहाज पर चढ़ा लिया और रवाना हुआ कितने दिनोंकेबाद जहाजमांझधारमें तूफ़ानसे तबाह होनेलगा तब बड़ा लंगर डाल कर उसी जगह चन्दरोज रहा। उसे आगे जो टापू था उसमें सिंहावती नाम राजकन्या रहतीथी कुमारकन्या उसकेसाथथीं इसमें अचानक तूफ़ान थम्हगया तब सेठनेकहा लंगर उठाओ और चलो। लंगर कहीं अटकरहाथा किसीसे उठ न सकाथा जोर करके थे निदान निराग्रहोकर सब अपनेखुदाको याद करनेलगे और कहनेलगे इस मांझधारा से सिवाय तेरे पारलगानेवाला कोईनहीं जहां २ जिस २ के तईं मुश्किल पड़ीहै तहां तूहीसहायहुआहै और दीनदयाल तेरानामहै हम परमीदयाकर। इतनेमें बनियांघबरा बिक्रमसे यहकहने लगा अब अथाह में पड़े हुयेहैं किनारा हमें नजर नहीं आता और एकबात तेरीही इसवक्त याद आईहै जब तू हमारेपास नौकर रहाथा तबतूने इक़रार कियाथा कि मुश्किलकाममें अवसान करूंगा इसजगह खुदा नजात दे यातू इसे और क्या कठिन होगा कि कालके मुंहमें पड़हैं यह सुनकर बिक्रम उठा और फरीखांड़ा हाथमें ले रस्सापकड़ जहाज के नीचे उतर गया जाकर बहुतसी हिकमत कीपर कोई हिकमत न चली तबसेठसे कहा कि पालें इसकीचढ़ादो। लोगोंने पालेंचढ़ाईं और उसने कूद कर लंगर काटदिया पानीकी तेजीसे और हवाकी तुन्दी से जहाज चलनिकला और कोई रक्षा उसकेहाथ न लगा उसजगह रहगया। जोकुछ विधाताने कर्ममें लिखाहै उसे कोई मिटानहीं सका अलक्रिस्सह वहराजा वहांसे बहता

हुआ चला और जाते जाते उसे एक नगर नजर पड़ा यह वहांजा लगा। उसनगरका जो दरवाजाथा उसपर जोहीं निगाहकी देखा चौखटपर लिखा हुआहै। सिंहावतीको राजा विक्रमसे शादीहोगी यह देख राजाको अचरज हुआ कि यह किस पण्डितने लिखाहै जब उस दरवाजेके अन्दर गयातो वहांजाकर एक महलदेखा और वहांरंडियांहैं मर्दकोई नहीं और पलंगपर सिंहावती सोती है चौकी की सहेलियांबैठी हैं। यहभी जाकर पलंगपर बैठ गया और तुर्त उसको जगादिया। वह उठबैठी तब राजा ने हाथ पकड़लिया और दोनों सिंहासन पर जाबैठे सब सखियां हाजिर हुईं और इसभेदसे वाकिफथीं कि राजा विक्रमादित्य यहां आवेगा और उसे इसकी शादी होवेगी। राजाको जोदेखातो फूलों की माला लेआईं और गांधर्व व्याहकिया। राजा जैसा दुःख पाकर पहुंचा था वैसा वहां उसने सुखभोगकिया। अलगरज वेदोनोंआपस में रहनेलगे और नौजवानों के ऐश करने हरएक तरह का लुत्फ़ उठानेलगे। सखियांभी खिदमत में हाजिर थीं और मानिन्द चकोरके चांदमा राजाका मुंह देखतीथीं चंद मुद्दत राजाको इसीतरह गुजरी अपने राजकीकुछ सुध न रही। येबातें कह लीलावती पुतलीने फिर कहा कि तुम राजा भोज जैसा राजा ने बन्न किया तैसाही विधाताने उसे सुखदिया क़िस्मतने वहतमाशा दिखाया फिर कहनेलगी इन सखियोंमें एकसखीसे राजाकोबहुत प्रीतिहुई और वह राजाकी दया विचार भेद वहां का कहनेलगी। अब राजा तुम यहां आनफंसेहो जीते यहां से कभी न निकलोगे तुम्हारा नाम सुनकर और तुम्हारे राजकाजका ध्यान करके मुझको रहम आता है क्योंकि तुम ऐसे धर्मात्मा दयावन्त दाता परोपकारी हो यहां रहना तुम्हारा भलानहीं लाखोंआदमी तुमबिन दुःखपाते होंगे। उसकी बात सुनकर राजाको ज्ञानहुआ राजाका ध्यान आया तब उसे पूछा यहांसे जानेका भेदमुझे बता

वह बोली एक घोड़ी इस राजकन्याकी घुड़साल में है जो दय से अस्तबल में जा निकला घोड़ीको देखकर तारीफ करने लगा रानी बोली जो तुम्हें शौक होतो इन घोड़ों में से किसी घोड़ेपर चढ़ा करो। भेदतो इसे वहांका मालूम होगा दूसरे दिन घोड़ा उसने वहांसे मंगाया और उसपर सवार हो वहीं फेरने लगा रानीभी खुश होती थी और राजाभी खुश होताथा इसी तरह कईदिन कितने घोड़ों पर सवार होता रहा एक दिन उसघोड़ीको मंगाया और रानीके हुक्मसे उसघोड़ी पर भी सवार हुआ रानी तो गफलत में रही कि इसने कोड़ाकिया घोड़ी सानन्द हवाके राजाको ले उड़ी रानी और सखियां अकतापकता रहगईं। राजाअंबावतीनगरी में आन पहुंचा वहां नदी किनारे एक सिद्ध बैठा देखा राजा उतर दण्डवत्कर उसकेपास जा बैठा सिद्धका जब ध्यानखुला तब उसने इसेदेखा देखकर खुश हुआ एकफूल कीमाला इसेदी और कहा विजयमाल मैंने तुझेदीइसका गुण यहहै जहां जायगा वहां फतह पावेगा और तू सब को देखेगा तुझेकोई न देखेगा फिर एकछड़ी राजाकोदी और उसका व्यौरा भी समझाकर कहा कि इस छड़ी का यह खुवासहै पहले पहररात को सोनेका जड़ाजग-ह्ना जो इसे मांगोगेतो यहदेगी और दूसरे पहररात को एक खूबसूरत नारीऐसीदेगी कि जिसेदेख राजातुम आशिक होजाओगे और तीसरे पहररात को जब इसे हाथमेंलोगे तोतुम सबको देखोगे और तुम्हें कोई नदेखेगा, चौथेपहर रातको मानिन्दकालके यह होजायगी इसके डरमेकोई दुश्मनतुम्हारे पास न आसकेगा। यहबात कह योगीने राजाको रुखसतकिया राजा जब उज्जैननगरीके पासपहुंचा तब उधर से एक ब्राह्मण और एक भाटको आतेदेखा और जबनजदीकपहुंचे तो उन्होंने आशीषदेकर कहा महाराज आपकेद्वारेपहमनेबहुतदिनों सेवाकी पर

हमारा भागही ऐसा था कि कुछ उसका फल न मिला। तब राजा ने सुनतेही ब्राह्मण को छुड़ीदी और भाटको माला और उसका भेद सब कहदिया आशीषदेकर दोनों कहनेलगे महाराज। इससमयमें तुम राजाकर्णहो तुम्हारे बराबर दानी आज पृथ्वी में दूसरा और नहीं। यह कहा और विदाहोकर गये। राजाभी अपने स्थानमें गया दीवान प्रधान सब आन हाजिर हुये शहरकी तमाम रैयत खुश हुई और वे दोनों झगड़ालू भी यह खबर सुन तुर्त आकर राजा के सामने खड़ेरहे और कहा महाराज। आपने जो छःमहीने का क़रारकिया था सो बीतगया अब हमरा न्यायकरदीजिये यह सुनकर राजाबोला कि बिना बल कर्म कुछकाम नहीं आता इसे ये दोनों बराबर हैं इसको सुन सन्तोषकर वादछोड़ दोनों अपने२ घरको गये ऐ राजाभोज यह अहवाल मैंने तुझसे इसलिये कहा है कि तू समझकर यह खयाल अपने जीसे उठा इस वास्ते कि जो यह लियाक़त रक्खे सिंहासन पर बैठे। वह भी योग राजा का बीतगया फिर उसके दूसरेदिन भोरहोतेही सिंहासनपर बैठने को तैयारहुआ कि इतने में॥

कामकन्दला छठी पुतली॥

हंसी और कहनेलगी कि जिसआसन के ऊपर राजा बिक्रमने पांवधराहो तू उसके बैठनेके लायक़ कब है। ऐ पापी तू अपने होशको गुम न कर क्योंकि तुझे देख मेरा मनमलान होता है और इस सिंहासनपर वही बैठे जो बिक्रमसा राजाहो तब राजबोला तू कह बिक्रमने क्या२ कर्मकिये हैं वहबोली तू सुचितहोकर बैठ मैं नृपतिकी कथा कहतीहूं एकदिन नृपति अपनीसभा में बैठाथा एक ब्राह्मणने आनकर एकअचरजकी बातकहीकि उत्तरदिशा में एक बड़ाबन है और उसबन में एकपर्वत और उसके आगे एक तलाव और उसमें एकखंभ फटिकका है जब सूरज निकलता है तब उस सरोवर मेंसे वह खंभ भी

निकलताहै और जों२ सूरजचढ़ताहै तों२खंभभी बढ़ताहै जब ठीकदोपहरहोतीहै तब वहखंभ सूरजके रथके बराबरजा पहुंचता है तब उस जगह रथखड़ारहता है और वहां जब सूरज कुछ भोजनकरलेता है तब रथचल निकलताहै और खंभ भी घटताहै निदान शामकेवक्त पानी में लोपहोजाता है इसको देवता यादेव कोईनहीं जानता यहबात ब्राह्मणसे सुनकरराजाने अपने मनमें रक्खी जाहिर न की। उसकेतईं कुछरुपयेदे विदाकिया और तालबैताल को यादकिया वे दोनों वीर आकर हाजिरहुये उन्हों ने कहा हमें जो इसवक्त आपने यादकियाहै सो आज्ञाकीजिये कहिये स्वर्ग को लेजावें कहिये पाताल को कहिये समुद्रपार इनतीनों लोकमें जहां आपकी मरजीहोतहां लेचलें तब हंसकर राजाने कहा एक कौतुक देखने हम जायाचाहतेहैं सो वह उत्तराखण्डमेंहै वहां तुमलेचलो। यहबातसुनकर वीरकान्धेपरचढ़ा राजाकोलेउड़े और उस जगह तुर्तजापहुंचाया राजाने वह तलाब देखा किचारों घाट उसके पक्केबधेहैं हंस बगलेउसमेंफिरतेहैं और सुगंधियां चकोरें पनडुबियांकलोलें करतीहैं कमलकेफूलोंपर भौंरे गूंजरहेहैं मोर बोलरहेहैं कोयल कूकरही है और तरहबतरहके पक्षी झुलासमें हैं फूलोंकी सुगन्धों के साथ पवन चलीआती है और मेवःदार दरख्तों की डालियां लचके खाती हैं राजा यह समा देखकर बहुत खुशहुआ रातभर वहींरहा जब सुबहहुई सूरजनिकला जो कुछकि ब्राह्मण ने कहा था वह सब वहां देखकर वीरों से कहा एक बात मेरेजी में आती है कि मेरेतईं लेजाकर इस खंभपर बिठलादो और भगवान्का ध्यानकर अपने स्थान को जाओ तब वीरोंने खंभपर ले जाकर बिठलादिया और वे अपने मकानको गये जों२ वह सितून बढ़ने लगा तों तों राजा अपने दिल में खौफ करने लगा जितना सूरज के नजदीक पहुंचता था उतनाही गर्मी से जला जाता था निदान सूरज के निकट पहुंचा जलकर अंगा-

रा होगया। जब खंभ बराबर रथके पहुंचा और रथवान ने एक मुर्दा जला हुआ देखा अपने रथके घोड़ों की बाग खेंची। घोड़े ठिटके सूरज ने झुक कर देखा कि खंभपर जला हुआ एक आदमी लगरहाहै। सूरज चाहि चाहि कर बोला यहसाहस आदमी का नहीं यह कोई योगीहै या देवता या गन्धर्व इस मुर्देके होते इस जगह किसतरह भोजन करूंगा। यह कहकर सूरजने अमृत ले उसपर छिड़क दिया। राजा रामराम कह पुकार उठा और देखकर सूरजको दण्डवत् कर हाथबांध कहनेलगा धन्यभागहैं मेरे और मेरेकुलके जो आपके दर्शनपाये और मैंने इसजन्म यज्ञदान जोकियेथे उसीकेसबब तुम्हारेचरण देखे जिन्दगीका जोफलथा सो मुझेमिला। इच्छा संसार में सबको है लेकिन जिसपर तुम्हारी मिहरबानगी हो उसीको दर्शन मिलतेहैं यह सुन सूरज बोला तू कौन है और तेरा क्यानामहै तुझे देखकर मेरेजीमें तरसआताहै अपना नाम तू जल्दी कह तब राजा बोला स्वामी नगर अम्बावती में गन्धर्वसेन जो राजाथा उसकाबेटा मैंविक्रम हूं आपकी कथा मैंने एकब्राह्मण से सुनी थी। मुझे आपके दर्शनकी इच्छाहुई और आपकी तवज्जोहसे आपके चरण देखे अब मेरेतईं आज्ञा दीजिये तो मैं विदाहूं। यह सुन सूरजने हंसकर अपना कुण्डल उतारकर राजाको दिया और कहा अबतू निडर राजकर फिर सूरजका रथ आगे बढ़ा और खंभा भी घटनेलगा जब राजा अकेला रहगया तब बीरोंको बुलाया। बीरआकर हाजिरहुये उनके कांधों पर सवारहोकर अपने मकानको आया जब शहरमें दाखिलहोनेलगा सामनेसे एकगुसाईं आया उसने राजा से अपने योगकी मतिसेकहा महाराज। जोतुमकुण्डलला ये हो वहमुझे दानदीजिये और यशधर्मबड़ाईलीजिये राजा बोला अय योगी मतिहीन ऐसायोग तूने कबकमाया जो तू कुण्डल मांगताहै वहसन्यासीकहनेलगा महाराज मैंने योग तो कुछ नहींसाधा पर सुना था कि राजाबड़ादानी

है इससे मैंने आपको यांचा। राजाने हंसकर कुण्डल उतार उसके हाथ दिया आप खुश होताहुआ अपने घरमें आया। कामकन्दला ये बातें कहकर कहनेलगी राजातुझमेंभी इतनी क़ुदरतहो तो इस सिंहासन पर बैठ यहबात सुन राजा मनमलीनहो फिरगया दूसरेदिन राजा दिलमें शुद्ध: खाताहुआ फिर सिंहासनपर बैठनेचला औरपुरोहितसे कहा इसबेर मैंपुतलीके रोकनेसे न रुकूंगा आज सिंहासन पर जरूर बैठूंगा जब राजा ने पांव उठा कर सिंहासन पर चाहा कि रक्खूं कि इतनेमें ॥

कामोदी सातवीं पुतली ॥

पांवतले आनगिरी राजाने यहतौर देखदुचितहो पांव खेंचलिया और उस पुतलीसे कहा तू किसकारण चरण में आनगिरी तब उसने कथा शुरू की। हम जोहैं अबला सतयुगकी हैं राजातेरा अवतार कलियुगमें हमनेएकही मर्दका मुंहदेखा और दूसरेका मुंह नजरसे नहींदेखाहम पहले अपना माजरा कहतीहै कि विश्वकर्मा ने तो हमें जन्मदिया और बाहुबल राजाके पास हमलाकर रहींउसने राजाविक्रमादित्यकोहमेंदिया। वह अपनेघरलेआया जबसे हम उससे बिछुड़ीहैं तबसे कभी सुख नहींपाया जो उसराजाके बराबर होवै सो इस सिंहासनपर बैठे राजा बोला विक्रममें वस्फ क्याथे तू वे मुझसे बयान कर तब वह कहनेलगी। सुन राजाविक्रम का अहवाल। एकदिन वह अपनेघरमें दोपहर रातको सोता था और तमाम शहर नींदमें ग़ाफ़िलथा कि किसी आदमीकी आवाज न आती थी इतनेमें उत्तरदिशा नदीकेपार एकस्त्री ढाढ़ेंमारकेरो उठी वह आवाज राजाके कानपड़ी राजा मन में चिन्ता करनेलगा हमारे नगरमें कोईदुःखी आयाहै कि वह अपने दुःख से कूकमारमार कर रोरहा है यह बात दिलमें विचार ढालतलवार हाथमें ले उधरको चला और नदी किनारे पहुंचकर बखतोर लङ्गोटमार पैरकर पारहुआ

क्या देखता है कि एक अतिसुन्दर जवान नारी खड़ीकूक रही है उसके पास जाकर राजा ने पूछा पुरुष का तुझे वियोग है या पुत्रका तुझेसोगहै या तुझे सौत का साल है इतने दुःखोंमें किसदुःखसे तू रोतीहैजो कुछ तुझेव्यापा है सो मुझसे कह तब वह कहनेलगी सुन राजा हमारा बालम चोरीकरता था शहरके कोतवालने उसे पकड़कर सूलीदियाहै और मैं उसको मुद्दतसे कुछखाना खिलाने को लाईहूं चाहतीहूं उसे भोजनकरवाऊं परसूली ऊंचीहै और मेराहाथ उसके मुंहतलकनहीं पहुंचता इस दुःख से मैं रोतीहूं और बहुत यत्नकरतीहूं पहुंचनेनहीं पाती नरपतिनेकहा यह तो थोड़ीसी बातहै इसकेवास्ते तू क्या रोतीहै उसने जवाब दिया कि मुझे यह थोड़ी बहुतही बड़ीहै तब राजाबोला मेरे कांधेपर चढ़कर उसेखिलादे वह कंकालिन राजाके कांधेपर चढ़कर उससूलीपर चढ़ चोर नोटंगाथा उसे खानेलगी रक्तमुख से उसके बदनपर गिरनेलगा राजामनमें सोचाकि यह कोई और है और इसने मुझे धोखादिया अपने जीमें राजा ने यह सोचकर पूछा कहसुन्दरी तेरापिया भोजनकरताहै या नहीं तब कंकालिन बोली रुचसे खाचुका अब इसका पेटभरा मुझे कांधेसे नीचेउतार। जबनीचे उतरी राजाने कहा उसने चाह से खाया तब कंकालिन हंसकर बोली तू मांग जो तुझे चाहिये मैं तुझसे बहुत खुशहुई मैं कंकालिनहूं तू मुझसे अपनेजीमें मतडर। वह बोलामैं तुझसे क्याडरूंगा और क्या मांगूंगा तूनेतो मुर्दामेरे कांधेपर चढ़के खाया तूमुझे क्यादेगीवह फिर बोली कि राजातू इसके ख़याल मतपड़कि मैंने क्या किया औरक्या न कियाजो तुझेइच्छा है सो तू मुझसे मांगले राजा ने हंसकर कहा अन्नपूर्णा मुझेदे और जगमें यशले। वह बोली अन्नपूर्णा मेरी छोटी बहनहै तू मेरे साथचल मैं तुझेदूंगी इसतरह आपस में दोनों बहनों से बचनकर चले आगे आगे कंकालिन और पीछे पीछे राजा नदीकिनारे जापहुंचे वहां एक मन्दिर

था उसके द्वारे कंकालिनने तालीमारी और अन्नपूर्णा ने प्रगटहो के उसे कहाकि यह भूपाल कौन है वह बोली यह राजा विक्रम है इसने मेरी सेवाकीहै और मैंने इसे बचन हाराहै अगर मेरी सुफ़ब्बत तेरे दिलमें है तो अन्न पूर्णा इसदे। हसकर उसने राजा को एक थैली दी और कहा इसमेंसे जितनी खानेकी चीजमांगोगे सब पाओगे। राजाने हाथफैलाकेली वहांसे खुशहो नदी किनारे आन स्नानध्यानकर निश्चिन्तहुआ कि एकब्राह्मण आन पहुंचा। उसको राजा ने बुलाया और कहा कुछ भोजन करोगे उसने कहा मुझे भूख लगी ऊई है आपदें तो मैं खाऊं। राजा बोला क्या खाओगे किस चीज़पर तुम्हारी सूरत है वह बोला इसवक्त पकवान खाऊंगा। राजा अपने जीमें सोचनेलगाजो इसदम पकवान न पहुंचेगा तो मैं ब्राह्मण से झूंठा हूंगा। इतनी बात मनमें बिचार थैलीमें हाथ डालकर जो निकाला तो देखा कि पकवानही निकला ब्राह्मणने पेटभरकर खाया और बोला महाराज। भोजन तो मैंने किया अब इसकी दक्षिणा भी दीजिये राजा ने कहा जो दक्षिणा मांगोगे सो मैं दूंगा ब्राह्मण बोला कि यह थैलीमैं दक्षिणापाऊं तो आनन्दमें अपने घरकोजाऊं थैली ब्राह्मणकोदेकर राजा अपने घरकोचला वह इतनी कथा कहकर राजाभोजसे फिर बोली कि इतनी मेहनत से थैलीपाई और ब्राह्मणको देते बार न लगाई ऐसा साहसी और ऐसादानीहोतो सिंहासनपर बैठ और नहीं तो पातकहोगा वह भी मछरत राजाका टलगया दूसरे दिन फिर राजा सिंहासनपर बैठने को आया तब॥

पुष्पावती आठवीं पुतली ने कहा॥

राजातूने जो सिंहासनपर बैठनेका चित्तकिया है सो इसकी आश मन से छोड़ दे राजा बोला मैं किस तरह छोड़ूं तबपुतलीने कथा शुरूकी कि एकदिन बीरविक्रमादित्य अपने दरबारमें बैठाथा.सबराजा सुजरेको हाजिर

थे उसवक्त एक बढ़ई ने आकर सलामकिया और कहा महाराज मैंआपके दर्शनको आयाहूं और एक तुरफह घोड़ा आपके लिये लायाहूं राजाने आज्ञा की कि लेआ बढ़ईने जो हिकमतका घोड़ा बनायाथा नजरकियाराजा ने घोड़ेको देख उससे पूछाकि इसमें क्या२ गुणहैं तुझार ने कहा महाराज। इसमेंये गुणहैं न कुछखाताहै न कुछ पीताहै और जहांचाहेतहांलेजाताहै दरियाई घोड़े के बराबर है। घोड़ा उसवक्त चालाकीसे एकजगह ठहरता न था कूदफांद रहाथा ज्योंज्यों राजा देखताथा रीझता था आखिरपसंदकरके कहा कि इसको मैदान में फेरकर दिखादे। ज्योंहीं उसने घोड़ाकिया फिरतोगर्दही नजर आतीथी और घोड़ा मालूम नहोताथा जब ऐसेगुणघोड़े में राजानेदेखे दीवानको बुलाकर कहा लाखरुपये इसेदो दीवानने अर्ज की महाराज। यह काठ का घोड़ा और लाखरुपये इनाम सुनासिब नहीं राजाने दोलाख रुपये फ़रमाये और उसेदीवानने चुपके हवालेकर दिये और अपने दिलमेंसोचा जोकुछ और तकरार करूंगातो और बढ़ैगे। वहबढ़ई रुपयेले अपने घरकोगया घोड़ा थानपर बांधा और बह चलतेहुये कहगयाथा कि इसपर सवार होते न कोड़ा कोजो न एड़मारियो पर क़िसमत का लिखाकोई मिटा नहीं सक्ता जो बातहुआ चाहतीहै सो होती है। कई दिनके बादराजाने घोड़ा मंगवाया और अपने मुसाहिबोंसे फर्माया कि कोईतुममेंसे सवारहोकर इसघोड़ेको फेरे तो हमदेखें। यह बात राजासे सुनकर एक २ का मुंहदेखनेलगा घोड़े की चालाकीसे कोई न चढ़ा तब राजाझुंझलाकर बोला घोड़ेको साजलगाकर तैयार करलाओ। यहबात सुनतेही एककी जगहदशबार आदमी दौड़े और जल्दी तैयारकरलाये। राजा सवार होकर वहां फेरनेलगा जितना कि वहचाहता था कि आसनजमाकर घोड़ेको अपने क़ाबूमेंलावे रानीसेनिकला जाताथा और पारेकी तरह एक जगह ठहरता न था

छलावेकी मानिन्द छलबल कररहा था। राजा ख़ुशी के मारे बढ़ई की बात भूलगया और घोड़े को कोड़ाकिया चाबुक लगतेही आग बबूला होकर वह ऐसा उड़ा कि समुद्रपार लेगया और एक जंगल में दरख़्त के ऊपर से गिरा आप रानोंसे निकलगया। राजा भी दरख़्तपर से लड़खड़ाताहुआ नीचेगिरपड़ा और यह हालत हुई कि मानो मृतकसाहोगया। जब कितनीदेर गुज़री कुछउसे होशआया तब अपने दिल में कहनेलगा देश नगर राज पाट रैयत और अपने पराये सबकेसब छूटे क़िसमत सुझे यहां लेआई देखिये आगे क्याहो यह मन में विचारकर धीरजबांध उठकर वहांसे आगेचला तो ऐसे महा बनमें जापड़ा कि निकलना फिर मुश्किल हुआ फिर जों तों उस जङ्गलमेंभूलाभटका दसदिनमें सातकोस राहचलकर एक बनमें जा पहुंचा। उसमें ऐसा अंधियारा था कि हाथकोहाथ न सूझताथा और चारोंतरफ शेरगेंड़े चीते बल्कि सब दरिंदे बोलरहे थे उनकी डरावनी आवाज़ें सुनकर राजा सहमजाता था कभी पूर्व कभी पश्चिम कभी दक्षिण कभी उत्तर भटका २ फिरताथा पर कहीं राह न मिलतीथी। इसतरह दुःखभोगता हुआ पन्द्रह दिनके बाद एक तरफ जानिकला वहां एक तमाशानज़र आया कि एक मकान है और उसकेबाहर एक बड़ादरख़्त और दो बड़े कुएहैं उस दरख़्त एर एक बन्दरिया बैठी है कभी नीचे उतरतीहै और कभी ऊपरचढ़ती है। राजा यह कौतुक छिपाहुआ देखरहाथा इतनेमेंनिगाह उसकी ऊपरगई क्यादेखता है कि उस हवेली पर एक बालाख़ाना है जब दरख़्तपर चढ़गया तोदेखा कि वहां एक पलंगबिछाहै और सब ऐशआरामका असबाबधरा है तब मनमें कहा अभी जाहिरहोना अच्छानहीं पहिले यहमालूम करूं कि कौनआताहै और कौनजाता है जब ठीक दोपहर दिनहुआतो एकसिंह वहांआया। बाईंतरफ एककुआंथा उसमेंसे उसने एकतूंबा जलनिकाला कि वह

बन्दरिया उतरआई। सिद्धने एकचुल्लू पानी उसपर डाल दिया तब वह ख़ूबसूरत स्त्री होगई और उस रूपवती त्रियासे योगीने भोगकिया। अबतीसरापहर हुआ योगी ने दूसरे कुएं से पानी खैंच उसपर छींटामारा फिर वह बंदरीकी बन्दरी बनगई और दरख़्तपरजा चढ़ी योगीभी पहाड़की गुफामें जा बैठा और अपना योग करनेलगा। राजाने प्रगटहो चतुराईकर बांएकुएसे जलनिकाल उस बन्दरीपर छींटामारा फिर वह ऐसी सुन्दर नारी हुई कि मानो इन्द्रके अखाड़ेकी अप्सराहै और राजाको देख लाज से मुंहफेर लिया। कामके बाण राजाको आनलगे प्रेमकर उसको अपनेपास बैठालिया जब उसने आंखपार की देखी तब हंसकर बोली महाराज। हमारी ओर और दृष्टिसे मतदेखो क्योंकि हमतपसी हैं जो हमशापेंगे तो तुम भस्म होजाओगे। राजा बोला कि आप मुझे न लगेगा मैं राजाविक्रमादित्य हूं कोई मेरा क्या कर सक्ता है कि मेरे हुक्ममें ताल बैताल हैं विक्रम का नाम सुनतेही वह बाला राजाके चरणपर गिरपड़ी और कहा महाराज तुमतो नरेशहो। हमारा उपदेशसुनोजल्दी यहां से जाओ अभी यतीआताहै तो मुझै तुम्हें दोनों को आप देकर जलाताहै तब नरपति बोला कि हमयतीके सामने न होंगे हमारा तो कुछ वह न करसकेगा परस्त्री हत्या हमेंलेनी उचितनहीं क्योंकि स्त्री हत्या लेनेसे आखिर को नरक भोगकरना पड़ताहै। फिर राजा ने कहा कि उस सिद्धने तुझे कहांपाया तब वहबोली कामदेव मेराबाप है और पुष्पावती मा है। मैंने उनके कुलमें अवतार लिया था जब बारहबरसकी मैं हुईतब उन्होंने मुझे एकआज्ञा की और मैंने भंगकी तब माता पिताने क्रोधकर यतीको दंडाला और यह मुझे अपने वश करके इसबनमें ले आया बन्दरी करके रूखचढ़ाया। इस सकलसे एक बरसगुजरा किमैं इस बनमें हूं सचहै कि किसमत के लिखे को कोई मिटानहीं सक्ता यही सोचकर मैं चुपकी हूं। तब राजा

बोला मेरा जी चाहता है कि तुझे अपने घर लेजाऊं वह बोली महाराज मेरे दिलमें यही है पर क्योंकर जाऊं कि तुम्हारा नगर समुद्रपारहै तब राजाने वचन दियाकि मैं तुझे लेचलूंगा समुद्रनांघने की फ़िक्र कुछ मतकर। इस तरह ले जाऊंगा कि तुझे मालूम न होगा। यों दोनों ने आपस में बातैंकर रैन आनन्द से भोर की और सबेरा होतेही पानी दूसरे कुएसे निकाला उस पर छिड़का कि फिर वह बंदरिया होकूद दरख़्त पर जाचढ़ी राजा वहीं छिपरहा। उसी दम जोगी आनपहुंचा वही यतन योगीनेकर छिन एकवहांसुखा खुशी की जब चलनेलगा तब वह सुन्दरी बोली महाराज मेरी एक बिनती सुनिये कुछ प्रसाद मैं तुमसे मांगती हूं सो तुम मुझेदो। यह सुन योगीने हंसकर एक कमल का फूल उसेदिया और यह कहाकिएकलाल यह हरदोजदेगा और कभी न कुम्हलायगा इसे तू अच्छी तरह रखना यह सुनकर उसने अपनी चोलीमें रखदिया और दिल उसका खुशहुआ योगी फिर उसे बंदरीबना के चलागया राजाने फिर कुए से पानी निकालकर उसे नारी बनाया और उसने वह कमल का फूल राजाको दिखाया और कहा महाराज एकअद्भुत चरित्रहै कि इसमेंसे एकलालरोज निकलेगा वह बातबुद्धि से बाहरहै। राजाने कहा इसका अचरज नहीं भगवान की सब क़ुदरत है और वह क्या क्या नहीं करता ये बातैंकर रात ऐशसे काटी प्रभातहुआ तब उस कंबलमेंसे एक लाल गिरा दोनोंने वह तमाशा देखा तब राजाने कहाकि चंचल अब यहां ठहरना उचितनहीं बिहतर यहहै कि मेरेदेशको चल। यह बात राजाकी सुनकर वह बोली सुनों महाराज एक मेरी आधीनीमें पांवपड़ करजोड़ कहतीहूं कि तुमबड़े दानीहो ऐसा दानी मैंनेकहींनहीं सुना ऐसानहोकि किसी को मुझेदानकरदो मैंदासीहो हरवक्त तुमारीसेवाकरूंगी। तब राजा बोला यह नहीं होसक्ताकि कोई अपनी नारीपर पुरुषकोदे यहकर्मविरुद्ध और लोकविरुद्धहैइसतरह उसकी ख़ातिरजमाकर दोनोंवीरोंकोबुलाया। वे आकर हाजिरहुये

उनसे कहा हमारेदेश लेचलो वीरतख़्तपर बिठा उनकोहवा की तरह लेउड़े। वे तो यों अपनेशहर की तरफ़ गये और योगी वहां जो आया और उस सुन्दरी को न पाया तो अ-छता पछता मनमार सुरझाकर रहगया निदान राजाअप-ने नगरकेपास आया और सिंहासन से उतर उस राजकन्या का हाथ थांभ शहरको चला रस्तेमें देखा उसने कि किसी का एक खूबसूरत लड़काद्रवाजे पर खेलरहाहै राजकन्याके हाथ में कमल का फूल देखकर वह लड़का रोनेलगा और बिलख २ बोला कि मैं यह फूललूंगा। राजाने कमल उसके हाथसे ले लड़केकोदिया लड़का फूलले हंसताहुआ अपनेघरमें गया राजाभी अपनेमन्दिरमें जा बिराजा। जब सुबहहुई तब उसकमलके फूलमेंसे एकलाल गिरा लड़के के बापने उसे देख उठालिया और कमल को छिपा रक्खा इसी रंग से हररोज़ लालनिकलाकिया कि एकदिन कितनेलाल बहलेकर बाज़ार में बेचनेगया। यह ख़बर कोतवालको हुई कोतवालने उसेप-कड़वामंगवाया कि तूबनियां तूने लालकहांपाये। योंकहउसे बहुत सियासतकर लालले कर राजाके पास आया और सब वह अहवाल जताया तब राजानेकहा उसकोभी लाओऔर उससे पूछो तूने वे लाल कहांपाये। बनिये को बुलाकर पूछा ये लाल तू कहांसेलाया और राजाने उससे कहा जो तू सच मुझसेकहेगा तो मैंतुझे औरभी दौलत दूंगा और झूठबोले गा तो देशसेनिकालदूंगा उसने अर्ज़की सुनो भूपाल। हारे खेलताथा मेराबालक उसकेहाथमेंकोई कमलकाफूलदेगया। और उसनेआन मुझेदिया मैंने रातभर उसे अपनेपासरक्खा सुबहहे।तेही उसमेंसे लालझड़ा और हररोज़ एक २ लाल योंहीनिकलताहै और अबभी वह फूल मेरेघरमेंहै। राजाने कहा यहतोतूने सबसेबीबातेंकहीं अबतू येलाल अपनेलेकर घरको जा कोतवालने बहुत बुरा कामकिया जो बेतहक़ीक़ तुझे पकड़लाया इसकान्याव अब यह है कि लाखरुपये तुझे कोतवाल डांडदे यह कहके कोतवाल से लाख रुपये दिलवा उसे घरको भेजदिया। ये बातेंकह पुतली फिर बोली सुन

राजा वीरविक्रमादित्य के गुण और धर्म। तू मूर्ख है कुछ उसकी हकीकत नहींजानता इससेही राजाको तू अपनेआगे हीनकर मानता है और अपनेतईं मनमें तू अधिक समझता है। ये बात पुतलीसे सुन राजा उसदिन योंही अकृतापकृता रहगया वह सायतभी जातीरही। सुबहको दूसरेदिन राजा सिंहासन के पास आ खड़ाहुआ और पुतलीसे पूछनेलगाकि तू खुशतो है कथा सुननेसे मुझे निहायत खुशीहोतीहैऔर जो सुनता है महबूब होताहै तब॥

मधुमालती नवीं पुतली बोली॥

सुन राजाभोज यहां बैठकर। मैं एकदिन की कथा राजा वीरविक्रमादित्य की कहतीहूं एकदिन राजाने होमका आरम्भकिया जहांतक देसके ब्राह्मण थे उनको न्यौता भेज बुलवाया और जितने उसके देशके राजा और साहूकारथे वेभी हाजिरहुये। भाटभिखारी भिक्षुक सुनकर सब देश२केराजा अपने सब लोगों को लेके आये और जितने देवता थे वेभी सबकेसब आये राजा अपने सिंहासनपर बैठा यज्ञ होनेलगा कि एकबूढा ब्राह्मण उससमय आया। राजा अपनेयज्ञकेमंच पढ़ताथा ब्राह्मणको दूरसेदेखमनमें दण्डवत्की। उसपण्डित ने आगम विद्यासे मालूम किया हाथ बढा राजाको आशीस दी कि चिरंजीव हो जब राजा ने मंत्र से फुर्सत पाई तब उस ब्राह्मणसेकहा कि महाराज। आपने बड़तमन्द काम किया कि बिनाप्रणाम आशीर्वाद तुमने दिया जब लगपांव न लागे कोई। तो वह अशीस आप सम होई। ब्राह्मण ने कहा राजा जब तूने मनमें दण्डवत की तब मैंने अशीस दी यह बात सुन राजाने लाख रुपये ब्राह्मण को दिये ब्राह्मण कहने लगा महाराज इतने रुपयोंमें मेरा निर्वाह न होगा ऐसा कुछ विचार करदीजिये जिसमेंमेराकामहोवे। राजानेपांचलाखरुपये उसेदियेबहलेकर अपनेघरकोगया और जो२ ब्राह्मणउसयज्ञ मेंथेउनकोभी बड़त कुछदिया। इसवास्ते राजाभोज। मैंने तेरे आगे यह बात कही कि तू सिंहासन के बैठने योग्य नहीं

सिंहकी बराबरी सियारनहीं करसक्ताहै और हंसकी बरा-
बरी कौवेसे नहीं होती और बन्दरके गलेमें मोतीकी माला
नहीं सोहती और गधेपर पाखलनहीं फबती मेराकहामान
और इस ख़याल से दूर गुजर नहीं तो नाहक़ किसीदिन
तेराप्राण जायगा। यह सुनकर राजा चुपरहा और वह
दिन भी गुजरगया जब रातकुई अंदेशा कर सुबहको बद-
सूर सिंहासनके पास आया और चाहे कि पांवधरे तब॥

प्रेमावती दशवीं पुतली॥

हंसके बोलीराजा। पहले तुमसुझसे यहबात सुनलोपीछे
इस सिंहासन पर बैठो राजा बोला तू कथा कह मेराभी जी
सुन्नेकोचाहताहै। राजावहां आसनबिछवाबैठा और पुतली
कहनेलगी सुनराजा एक दिन बसन्त रुतमें टेसू फूला हुआ
था और मौराया हुआ कोयल कूकरही थी हवा चलरही।
राजा बिक्रमादित्य अपने बागमें बैठाहुआ हिंडोला सुनता
था इसमें एकवियोगी किसी देशसे भूलाभटका आनिकला
राजा के पांव पर गिर पड़ा और कहने लगा। स्वामी। मैंने
बहुत दुःख पाया है और अबमैं आपकी शरण आया हूं।
और उसकी यह सूरत बनगई थी कि तमाम लहू बदनका
सूखगयाथा और आंखसे कमसूझता था अन्नपानी सबछोड़
दिया था किसी तरह धीरज नहीं धरता था राजा जों जों
समझाताथा तों २ वह विरहसे व्याकुल होहो रोताथा तब
राजाने कहा तुम अपने जीको संभालो और इतने दुखी क्यों
होा और अब जो यहां आये होतो आपको तसल्लीदो किस
कारण तुम्हारी ऐसी गतहुई है और किसके ग़म से तुम्हारी
यह शकल बनगई है सुहा अपनाकहो किस देशसे आयेहो
और क्या तुम्हारा नाम है वह एक आह सर्ददिल पुरदर्दसे
खैंचकर बोला नगर कलंजर देशहै मेरा मैं मतिहीन निर्बु-
द्धिहूं एकयतीने मेरेआगे यहबात कही थी कि एक खूबसू-
रत स्त्री एकजगहहै वैसी सुन्दरकोई जगमेंनहीं गोया काम-
देव से पैदाहुई है बल्कि तीनों लोक में वैसी न होगी और

लाखों राजाजीलग उसके यहां आते हैं और जब २ जाते हैं फिर वह यह हकीकत कहनेलगा कि उसके बापने वहां एक आग भड़काई है और एक कढ़ावभरघी चढ़ा रक्खा है वहबी पड़ा खोलताहै और यह मतहै उसकी जो उसकढ़ाव में स्नानकर जीता बचनिकले उससे कन्याकी शादी करूंगा यहबात उसयोगीसेसुनकर मैंभी वहांगया था सोमैंने अपनी आंखों से यह तमाशा देखाहै स्नानकिया और वहां हजारों राजा देश २ के लाखों नौकर चाकर साथलेकर आते हैं यह देख पछताकर जातेहैं उनमें से जो इरादा करता है कढ़ाव में गिरकर जलभुन जाताहै। जबसे शक्ल उस राजकन्या की नजर आई है सुध बुध मैंने गंवा अपनी हालत यह उसके इश्कमें बनाई है। यह बात सुनकर राजाने कहा आजतुम यहां रहो कल हमतुम मिलकर वहां चलेंगे और उसे तुम्हें दिलादेंगे अपनी खातिरजमा रक्खो यहबात कह उसे स्नान करवाकुछ खिलवा अपनी सभामें बिठलायह हुक्मकिया जितने संगीत विद्या वाले हैं सब तैयार होओ आज जहां आकर हाजिर होवें और अपना २ सुघरा बजावें। राजा की आज्ञा पा सब आनहाजिर हुये और अपना २ गुणजाहिर करने लगे। राजा ने उन्से कहा कि इनमें से जिस बातुर को तुम चाहो हम तुम्हें दें तुम यहां बैठकर सुखभोगकरो और उसका खियाल दिलसे भुलादो। सुनकर वह वियोगीबोला महाराज सिंह अगर सातदिन उपासकरे तोभी घास न चरे सिवाय उसके मुझे किसी और की इच्छा नहीं इसी तरह तमामरात बीती जब तड़काहुआ तब राजाने स्नानपूजाकर उनवीरोंको यादकिया वे तुर्त आन हाजिर हुये और अर्ज की महाराज। क्या हुक्म है हम किसदेश को तुम्हें लेचलें। राजा बोला जहां यह प्रेमी कहे। उसने कहा राजकन्या के नगर में लेचलो जिसजगह वह घीका कढ़ाव खौलरहा है और सारा आलम वहां जमाहै उसीदेश कोलेचलो राजा ने तख्तपर उसकोभी बिठला अगिया बेताला दोनों वीरोंको हुक्मकिया कि उसीदेशमें लेचलो वीर सुनतेही लेउड़े और

एक दममें सिंहासन उसी घरमें जाकर रखदिया राजाने वहां जाकर देखा बाजेबाजरहे हैं और मंगलाचार होरहा है। वह राजकन्या हाथमें फूलोंकी माला लिये फिरती है और राजपुत्र वहां उसके लिये कामना करके जोगये हैं सो सब वहां खड़ेहैं लेकिन हियाव किसी का यह नहीं पड़ता जो उस कढ़ाव में कूदे और जो कोई जानपर खेलकर कूदता है तो जलभुन जाताहै। राजाने जब उसकन्याके पासजाकर देखा उसके रूपको देखमोहित होरहा और कहा जिसकोख से यह कन्या पैदाहुई है धन्य है उसकोख को आदमी की तो क्या जानहै इसे देवता देखतो बेसुध होजावे इतनीबात राजाने कहकर वीरोंको कहा कि हम इसकढ़ाव में कूदते हैं तुम खबरदार रहना वीर बोले महाराज। निश्चिन्ताई से कूदिये और किसी बात का खौफ़ न कीजिये। इतनी बात कह राजा कढ़ावके पास जा झड़ाकसे कूदपड़ा कूदतेही जल भुनराख होगया। बैताल ने देखा और तुर्त अमृतले आया और राजा के ऊपर डाला पड़तेही उसके राजा राम २ कर खड़ा होगया और जितने ब्राह्मण वहांथे जय जयकारनेलगे। वह जो राजकन्या थी उसने आतेही फूलों का हारगले में राजाके डालदियावह जयमाल जब उसने राजाकोपहिनादी तब सबलोग अचंभेमें रहगयेकि यहराजा कोईअजबतरहका आया जो जलगया और फिर जी उठा वह कोई मनुष्य का नहीं है कोई देवताहै जिसने ऐसा काम किया। राजा की निबत पूरीहुई। तब उसकन्यासे ब्याहकी तैयारीहुई। राजा के मुल्कके जितने लोग थे सब खुशहुये और मन्दिर में भी रानियां मंगलाचार करने लगीं। इसतरह राजा से शादी करदी दहेज में जवाहिर जोड़े घोड़े हाथी पालकी और तमाम माल असबाब कई कड़ोड़का दिया यह देकरआधा राज संकल्प करदिया और दासीदास भी बहुतसे दिये तब वह बिरही जो इसकेसाथ था देख २ बहुत खुशहुआ। जब ये सब देलेचुके राजाने बिदामांगी उसराजाने सब असबाब और माल उसब्याहीहुई दुलहन समेत साथउसके करदखुसत

किया और कहा अपने देशको तुमजाओ राजाने कहा हम पर दयामया रखियो वहबोला हमारासुंह हमलायक़ नहीं कि तुम्हारी कुछ तारीफ़ करैंजैसा साहस तुमने किया ऐसा न हमने आंखोंदेखा न कानों सुना इस कलियुग में तुमकोई अवतारहो एक जबानसे हम कहां तलक तुम्हारी सिफ़त कर सकैं एक सिर है हमारा हम तुम्हें क्या चढ़ावें तुम्हारे पराक्रम पर करोड़ों सिर सदक़े है जो नियत हमने कीथी सो तुमने पूरी की इसका भरोसा हमें न था कि यह इरादा हमारा पूरा होगा। राजकन्या हाथजोड़ कर राजासे कहने लगी महाराज। मेरा यह दुख तुमने छुड़ाया नहीं तो मेरे बापने ऐसा पाप कियाथा कि आपतो नरकभोग करता और मैं उमरभर अनब्याही रहती इतनी बातकह प्रेमावती पुतली बोली कि सुनराजा भोज। ऐसा पराक्रम करके उस कन्याको राजालाया और उस विरहीको उसे देते बार न लाया राजकन्या और सबमाल असबाब देकर खाली हाथों अपने मन्दिरमें आदाखिल हुआ और तू विद्यार्थी है ऐसा साहस तुझसे न होसकेगा। यह सुनकर राजा हैरानहोसिर नीचेकरलिया बह सायतभी गई गुजरी फिर दूसरे दिन राजा जब सिंहासनके पासगया और चाहे कि बैठे तब॥

प्रमावती ग्यारहवीं पुतली

हंसकर बोली राजा। पहले मुझ से कथा सुनले पीछे सिंहासन पर पांवदे। फिर कहने लगी एक दिन राजा बीर विक्रमादित्य उज्जैन नगरी को गया और अपने सब आदमियों को विदाकर आप वहां रात को रहा सोता था कि उत्तर दिशा की ओर से एक स्त्री धायमार उठी और पुकार २ कहनेलगी कोई ऐसा है कि मेरी आकर खबर ले इस पापीसे मुझेबचावे और जीदान दे। दममें मरी२ पुकारती थी और दममें चुपहोजाती थी। उसकी आवाज सुन कर राजा चौंकपड़ा ढालतलवारले अंधेरीरात में उधरअकेला उठचला किसीको खबर न हुई जब बनमें राजापैठा वह

सुन्दरी फिर रो२ पुकारउठी कि राजा कहींजापहुंचा देखा कि कहांएकदेव उसस्त्रीसे रतिमांगता है और वह नहींमानती तब सिरके बाल पकड़ २ कर जमीनपर देदे पटकता है राजाने कहा ऐपापी त्रियाको क्यामारता है नरकसेभीनहीं डरता राजाकी बात सुनकर फिर वह उसे मारनेलगा राजाने कहा तू इसे छोड़दे नहींतो मैंतुझेमारताहूं। यहसुनकर वह राजा के सन्मुखहोगया गुस्से से घोरकर बोला या तो तू भागजा मैंतुझे खाजाताहूं और तूकौनहै जो यहांआया है तब राजा ने गजब में आकर एक तलवार ऐसीमारी कि सिर उसका धड़से जुदाहोगया तो कहांसुरासे दो बीर निकले। राजाके दोनोंहाथों से लिपटगये राजाने छलबल कर उनमें से एकको मारा दूसरा रैनभर लड़ता रहा भोर होते भागगया दैत्य जब भागगया तब उसस्त्रीसे राजाने कहाअब तू जल्दी मेरेसाथ चल और कुछ जीमें अंदेशा न कर। वह राक्षस मेरे डरसे भागगया फिर न आवेगा। तब वह सुन्दरी बोली कि सुनो भूपाल जो मैं सातदीप नवखण्डपृथ्वी में जहां भागकर छिपरहूंगी पर उससे बचने न पाऊंगी वह आकर ले जायगा उसकेबिना सरमेरी जिन्दगीनहोगी। उसकेपासएक मोहनी पुतलीहै वह उसकेपेटमें रहतीहै जहां मैंछिपूंगी उसके बलसे वहढूंढ़निकालेगा और उसपुतली में यह ताक़त है कि एकदेव मरनेसे चारदेव बनासकीहै यह बात उसकी सुनकर राजा उसीबनमें छिपरहा सुबहहोते वह देवआया उस औरत से फिर छेड़छाड़ करनेलगा जब उसने न माना तब बालमिरके पकड़ जमीपर पटकनेलगा वहतो धाड़करने लगी। उसकी आवाज सुनतेही राजा निकल आया और लड़ने को तैयार हुआ देवभी स्त्री को छोड़ राजाके सामने हुआ चाहे कि राजाको मारेदूसनेमें राजाने ऐसाएकखांड़ा मारा कि धड़से सिर अलगहोगया। उसधड़से वही मोहनी निकल आई और अस्मत लेनेचली राजा ने वोही बीरोंको आज्ञाकी यहजाने न पावे। बीर दौड़कर उसकी चोटीपकड़ खैंचलाए और राजाके सामने हाजिर किया। राजानेउससे

पूछा कितू चम्पावरनी मृगनैनी गजगामिनी कटिकेहरी चन्द्रमुखी नख सिख ऐसी कि हंसी से तेरे फूल झड़ते हैं और तेरी सुगन्धसे भौंरे मंडलाते हैं बतला कितू देवके पेटमें क्योंकर रही थी। तबवह बोली सुनराजा पहले मैं शिवगण थी एकआज्ञा शिवकी मैं चकगई तिससे उन्होंने श्राप दियामैं मोहनी रूप होगई और इस दैत्यने महादेवकी बहुत तपस्या की तब सदा शिवने मेरेतईं इसको बख़्श दिया फिर इसपापीने मुझेलेकर अपने पेटमें डाल रक्खा तबसे मैं मोहनी कहलाई पर शिवकी आज्ञा थी कि इसकी सेवा कीजियो और जोयह कहै सो मानियो यों इसके बश होकर मैं रहती थी मेरा माजरा था जो मैंने तुमसे कहा अबयहबैताल मुझेक़ाबूकर तुम्हारे पास लाया है और आदमीकी इतनी क़ुदरत नहीं थी बल्कि तुमभी बहुतेरा उपायकरते तौभी तुम्हारेहाथ न आती अब राजा मैं तुम्हारे बशमेंहूं। राजा बोला अब तू क्या करेगी तब वह बोली तू राजाहै और मैं मोहनीहूं तेरे पासरहूंगी ज्यों महादेवके पास पार्वती। यह कहकर वचन दिया एक वह मोहनी और दूसरी वह स्त्री जिसे देवसे छुड़ाया था राजाके साथ हुई ये बातेंकर परमावती पुतली बोली सुनराजा भोज। उसमोहनीसे राजा विक्रमादित्य ने ब्याह किया और जो कुछ आगे राजाके पराक्रम हैं मैं कहती हूं तू सुन कान देकर। वह स्त्री दैत्यसे जो लीथी उसे राजा ने यों कहा सुन सुन्दरी मैं तुझसे पूछताहूं देवने तुझेकहां पाया था कौनद्वीप और कौन नगरहै तेरा और कौन बापहै तेरा नाम लेउसका अपना सब व्यौरा मुझसेकह और सब बातें तुर्तबता देर मतकर तेरी व्यवस्था सुनकर जैसा तू कहैगी वैसाही मैं विचार करूंगा। वह नारी बोली महाराज। मेरी कथा सुनो कि क़िसमत का लिखा मिटता नहीं है और जो कुछ बिधाता ने कपाल में लिख दिया है वह इन्सान को भुगतना होता है। एक ब्रह्मापुरी है समुद्र के पास जिसे

संगलद्वीप कहते हैं ब्राह्मण की मैं बेटी हूं। एक दिन सखियोंके संग तालाब पर स्नान करने गई थी और वह तालाब ऐसा था कि घने २ दरख्तों से सूरज वहां नजर न आता था वहां सखियों के साथ स्नान पूजाकरके घरको आती थी कि सामने यह राक्षस नजर आया और रति मांगने लगा। ज्योंज्यों मैं न मानती थी त्योंत्यों मुझे दुःख देता था और मैं अनब्याही अपना धर्म क्योंकर गवांती। कितने दिनोंसे मुझेसताता था और नर्क पड़नेसे न डरता था राजा तूने मेरा धर्म रक्खा और मेरे कुलको लाज रक्खी तुझे संसारमें यश होगा जैसा तूने उपकार किया वैसाही मुझसे आशीष ले इक्कीसवर्ष तकजीतोगे और किसीके वश न पड़ दिन बदिनसत और तेजबढ़े साहस तेरा ऐसा हो कि कोई न जीते। इतनी आशीष जबवह देचुकी तब उसे बेटीकह राजाने अपने पास तख्तपर बिठा लिया और मोहनीको भी उठा बैतालों को हुक्म किया कि हमारे नगर को चलो। बैताल बांही बेउड़े पलक मारते महलमें लादाखिल किया राजाने आतेही दीवानको यादकिया वह मंत्री आकर हाजिर हुआ कहा कोई पण्डितसज्ञानी ब्राह्मण ढूंढ़करल्दी लेआवो। प्रधान ने आज्ञापाय नगर २ ब्राह्मणोंको भेज एक ब्राह्मण सुन्दर विद्यावानको बुलवाया मार्कण्डेय नाम वह ब्राह्मण जब आया प्रधान राजापास लेगया। राजाने हाथ जोड़कर कहा एक ब्राह्मण की कन्या हमारे यहां है उसे हमतुम को दिया चाहते हैं तुमभी यह बात कबूलरो। ब्राह्मण बोला राजा वह कन्या हमको दो जगमें तुम यश धर्म बढ़ाईलो। राजा यह बातसुनतेही ब्राह्मण को तिलक दे शादी का सामान कर दान दहेज तैयार किया फिर ब्राह्मण को बुला संकल्प कर कन्यादान करदिया। इतनी बात कहकर पुतली समझाने लगी सुन राजा। वीरविक्रमादित्यने कुछशोच न किया और लाखोंरुपयोंकादान दहेजदे एकपलमें ब्राह्मणके हवाले किया। तू इसलायक

नहीं है इस सिंहासनपर बैठनेसे डर अब राजाभोज। तू गुणगाहक है। दानी और साहसी नहीं तू नाहक फिर्स करताहै यह सुनकर राजा चुपहो रहगया और सुबह होतेही फिर सिंहासन पर बैठनेको तैयार हुआ तब॥

कीर्तिमती बारहवीं पुतली॥

बोली सुनराजा भोज एकदिन राजाधीरविक्रमादित्य अपनी मजलिसमें बैठकर कहनेलगा कि कलियुगमें और भी कहीं कोई दाताहै यह सुननेभी एक ब्राह्मण बोला सुन राजा प्रजाके हितकारी तेरे बराबर तो साहसी और दानी कोई नहीं पर एकबात में कहा चाहताहूं धर्मसे कहनहींसक्ता। राजानेकहा सत्यबातमेंलाज काहे की है तुम हमारे आगे साफ़कहो हम उस बातमें बुरा न मानेंगे। वह ब्राह्मण बोला एक राजा समुद्र किनारे रहता है और सदा धर्म काज करता है जब वह सवेरे स्नान किया चाहताहै तब लाख रुपये दान देता है और जल पीताहै यह तो एक मैंने उसके दानकी रीति कही औरभी बहुत कुछदान करताहै और ऐसाराजा धर्मात्मा हमने सिवाय उसके दूसरानहीं देखा। यहबात सुनकर राजाके जीमें इच्छाहुई कि उस राजाको चलकर देखिये यों अपने जीमें विचारकर बैतालोंको बुला तख़्तपर सवार हो समुद्र के किनारे चला और जब उसके नगर के पास पहुंचा तब सिंहासनसे उतर बैतालोंसे कहा अब तुमदेश को जाओ और हम इसराजा की सेवा करने पर तैयार हुये तुम वहां से हमारी ख़बर लेते रहियो। तब बैताल बोला इसका विचार क्या राजाने कहा तुम्हें इससे क्या है काम जो हम तुम्हें कहते हैं सो करो। यह बात सुन कर बैताल अपने नगर को आये राजा पाओं २ शहर में दाख़िल हुआ जब फिरता हुआ नगर में राजा के द्वारे जा पहुंचा द्वारपालों से कहा कि अपने राजाको समाचार दो कि कोई विदेशी तुम्हारे द्वारे सेवा करने के लिये खड़ा है। इसकी बात ड्योढ़ी दारों ने सुनकर जा राजा से

अर्थ की राजासुनतेही हंसताहुआ आपहीबाहरनिक-लआया बिक्रमने जुहार की राजा ने सलाम लेकर पूछा क्षेमकुशलसेहो तब वहबोला आपकी दयासे फिर राजाने कहा तुम किसदेशसे आयेहो तुम्हारा नाम क्या है और तुम्हारा अर्थ क्याहै सबसुनाओ यह बोला सुनो महाराज मेरानाम बिक्रमहै राजाबिक्रम के देशका मैं रहनेवाला हूं कुछ वैराग मेरेजी में हुआ इससे मैं आपके दर्शन को आयाहूं आपका दर्शन मैंने किया सबमेरा शोच विचार गया। राजाबोला तुम्हें हम क्यारोज करदें और कितने में तुम्हारानिर्वाह होगा तब इसनेकहा चारहजार रुपये में मेरी गुजरानहोगी। यह सुनकर राजा ने कहा ऐसा क्याकाम करतेहो जो चारहजार रुपये रोजीना हम तुम्हें दें वह कामहमसे कहो कि हम यह करेंगे। फिर बिक्रम बोला जिसराजाकेपास मैं रहताहूं उसकी गाढ़ी भीड़में कामआता हूं इसतरह से चारहजार रुपये रोज लेकर राजा वहां रहनेलगा। यहबात पुतली ने समझा राजा भोजसे कही जब इसतरहसे नवदस दिनगुजरे तब राजा बिक्रमादित्य ने अपने मनमें विचारा कि जो लाख रुपये रोज दानकरताहै उसका नित्यनेमक्याहै इसे मालूमकिया चाहिये किसदेवताका इसेबलहै इसी शोचमें रहने लगा एकदिन देखता क्याहै दोपहररातके समय राजा अकेला बनको जाताहै यह देखतेही उसके पीछे होलिया आगे २ राजा पीछे२ बिक्रमादित्य इसतरीक़ शहरसे बाहरनिकल एक बनमें पहुंचे वहांजाकर देखातो एकदेवीका मन्दिर है उसमन्दिर के बाहर कढ़ाव चढ़ाहै और उसमें ब्रह्मको आग से घी औटता है। वह राजा तलाब में स्नान करके देवी का दर्शन कर उस कढ़ाव में कूदपड़ा और पड़तेही भुनगया। वोंही चौंसठ योगिनियां आनके राजा के उस तलेहुये बदनको नोचकर खागईं इतनेमें कंकालिनअस्तले आई और उसके हाड़पंजर पर छिड़का वह रामर२ करके उठखड़ाहुआ तब देवीने मन्दिर से लाखरुपये दिये और

वह लेकर अपनेघरको आया तब योगिनियां अपने धामको गईं। यह तमाशा देखकर राजा विक्रमादित्य भी उसी कढ़ावमें कूदपड़ा और उसीतरह जलगया फिर तुर्तयोगिनियां दौड़ीं और उसकोभी खागईं उसीतरह कंकालिन ने अस्थतला इसपर भी छिडक जिलादिया मन्दिर में से लाख रुपये उसेभी देवी ने दिये रुपयेले दुबारः फिर वह कढ़ावमें गिरा। योगिनियां फिर जला भुना गोश्तबदन का नोचकर खागईं और कंकालिनने अस्थछिड़कजिला दिया फिर देवी ने दोलाख रुपये दिये। गरज वह इसी तौर सातबेर गिरा और लाखरुपये हरमरतबे में सिवा पाये जब आठवींदफ़ा इरादा गिरनेका किया तब देवीने थानके उसका करधरा और कहा मांग जो तुझे चाहिये विक्रम हाथ जोड़कर बोला मैं मांगूं जो मांगा पाऊं। देवीने कहा जोतेरी इच्छामें आवे मांगवही मैं तुझेदूंगी। राजाने कहा देवी। जिसथैली मेंसे रुपये दियेहैं वहथैली मुझे कृपाकर दीजिये यह सुनतेही उसने वहथैलीदी वह खुशहो राजाके थानपर गया और उसके दूसरेदिनरात को फिर वह राजा बनमेंगया और वहां उसने देखा कि न देवीका मन्दिरहै न कढ़ावहै थान भङ्गपड़ाहै। यहदशा वहांकी देख शोचमें डूबगया फिर जोहोश आयातो धाय मारके रोनेलगा आखिरको लाचारहो उलटाफिर अपने मंदिरआउदासहो सोरहा। भोरहुये जब सभाकेलोगआये राजाको देखा कि निढालपड़ाहैनहंसताहै न किसीसे बोलताहै बल्किजोकोई राजकाजकी बातकरताहै सुनकर मुंह फेरलेता है यहहालत राजाकी देख दीवान ने बिनतीकर कहा महाराज। आपकेमनमलीनहे।नेसे सारीसभाउदास होरहीहै राजानेयह जवाबदिया तुम बैठकरदरबारकरो मेरा शरीर मांदाहै। तब प्रधान बैठ राजकाज की बात करने लगा और जो कोई आता था अपने मनमें जो चाहताथा विचारताथा कोई कहताथा कि राजा बीमार है कोई कहता है कि राजाको कोई मोह गया और कोई

कहता था कि राजा है नहीं परजा की अवस्था किसी पर मालुम न थी। इतनेमें अपने समयपर राजा विक्रमादित्यभी गया और पूछा कि तुम्हारे मनमें क्यों दुःख है क्योंकि मैंने तुमसे प्रतिज्ञा कीथी कि मैं तुम्हारी सुधकिल में काम आऊंगा सो मेरा बचन क्या आप भूल गये मेरे आगे अपनी सब व्यवस्था ब्योरेवार कहिये। तब राजाबोला कि मैं तेरे आगे क्या अपनी बात कहूं पर एक मेरेजीमें है प्राणघात करूंगा विक्रम ने कहा पृथ्वीनाथ। एक बेर मेरे आगे अपने मनकी बिथा कहिये तब पीछे और यत्न कीजियेगा राजाने कहा एकदेवी मेरेपासथी सो मैं नहीं जानता वह कहां गई लाखरुपये रोज़ वह मुझे देतीथी वे लाख रुपये मैं नित्य दान करताथा और अब मुझे बड़ा कष्ट हुआहै मेरी नित्य क्रिया निभेगी नहीं इसीवास्ते मैं जानदूंगा और ऐसा मैं किसी को नहीं देखता जिसमे मेरा नित्यनेम चले और जो धर्म पुण्य न रहैगा तो मेरा जीना संसार में अकारथ है। यह बात उसकी विक्रम ने सुनतेही वह थैली हाथदी और कहा महाराज। अब स्नान ध्यानकर नित्यधर्म कीजिये और थैलीमे जितनेरुपये चाहोगे खर्च करोगे कमकभी न होगा वह सुनतेही खुश होकर उठ बैठा और थैली हाथ से ले अपने प्रधान को बुला उसमेंसे रुपये निकाल खर्चको दिये और कहा जितने ब्राह्मण सदा दान पाते हैं उनको उसीतरह दो दीवान माफ़िक़ हुक्म के अपने काम में मशग़ूल हुआ राजा वीरविक्रमादित्यने कहा महाराज मुझे आज्ञादीजिये तो मैं अपने देश को जाऊं बहुत दिन गुज़रे हैं तबवह राजा बोला हम तुम्हारे कहांतक गुणमानेंगे तुमने हमें जीदान दियाहै फिर कहा जो तुम अपने देश पहुंचो संदेशा हमें भेजदेना कि हम क्षेम कुशल से पहुंचे और ठीक अपना ठिकाना बताजाओ जो हमारा पत्र तुम्हारे पास पहुंचे तब उसने कहा मैं राजा विक्रमादित्यहूं अम्बावती नगरी का राज करताहूं तुम्हारा नाम और यशसुनकर दर्शनको

लिये आयाथा सो तुम्हें देखा और मेरा चित्त प्रसन्नहुआ तुम अच्छी तरह राज करो और हमें बिदा देा तुम्हारा साहस बलधर्म हमनेदेखा। यह सुनतेही वहराजा पावों पर गिरपड़ा और हाथजोड़कर कहनेलगा बड़ा अपराध हुआ और मैंने तुम्हारा मर्म न जाना तुमने मेरी सेवाकी सो तुम अपने जीमें कुछ न लाना और जैसा धर्म मैंने आपका सुना था वैसाही देखा और धन्य है तुम्हारे तईं और राजा तुम्हारे धर्म साहस और पराक्रमको यहकह राजाको तिलकदे बिदाकिया राजा बीरोंको बुलासवार हेा अपने नगरमें आया। इतनी बात कीर्तिमती पुतली कहकर राजाको समझानेलगी सुन राजाभोज राजाबीर बिक्रमादित्यका साहस ऐसी वस्तु पायकर देते कुछबिलंब न लाया और अपने जीमें न पछताया और जैसा साहस राजा ने किया वैसा सुन नर कोई नहीं करता और तू किस गिनतीमें है। यहसुन राजाभोज चुप होरहा फिर दूसरे दिनके प्रभात समय राजा उठ तैयारहेा पाटबैठने को गया। मनमें इरादा बैठनेका करताथा फिर झिझक कर रहजाता था इतने में॥

त्रिलोचनी तेरहवीं पुतली॥

बोलउठी सुनराजा एकपुरातन कथा मैं तुझे सुनाऊं इस सिंहासन पर वहीचढ़ेगा जो बिक्रमके सम पराक्रम करेगा तब राजा ने कहा कह सुन्दरी। बिक्रम का बल और कथासुननेको मेराभी मनचाहताहै। पुतलीबोलीसुन राजाकानदेकर एकदिन राजाबीर बिक्रमादित्य शिकार खेलनेकोचला और साथभी जितनेसुसाहिब राजपूतबली थे वेभी सजसजाकर तैयारहेाआये और एक२कीसवारी में हजार२ कोसके धावेका तुरङ्गथा। राजा अपनेघोड़े पर सवारथा और वह गोया छलावाथा। राजकुमार अपने अपने शिकारीजानवर बाजबहरी जुर्राशाहीनकूहांलग्गड़ मंगवा २ अपने२ हाथोंपर लेले साथहुये और राजानेभी

एक बाज अपने हाथपर बिठालिया। मीर शिकारों को हुक्मपहुंचा कि जिसके २ पास जो २ शिकारीजानवर तैयारहैं लेकर रिकाबमें हाजिर होवें इसतरह बनठनके एकबनको राहली और वहां जाकर किसीने बाज और किसीने बहरी किसीने कूहो किसीने शाहीनउड़ाई और अपने २ जानवरों के पीछे घोड़े उठाये और उधर राजाने भी जितने मीर शिकार थे उन्हें हुक्मकिया कि एकजङ्गल में सब शिकारकरो मैं तमाशादेखूंगा जोशिकार करलावेगा वह इनामपावेगा और जोशिकार न करलावेगावह नौकरीसे दूरहोवेगा। यहबात सुनतेही जितने मीर शिकार थे उनसभोंने उसबन में चारों तरफ जानवर छोड़े और उधर हुक्म बहेलियों को किया कि तुमभी शिकार करो इसीतरह सबशिकार करतेथे और राजा के राजा को गुजरानते वह खड़ा तमाशा देखरहा था फिर उसने एक परन्दपर बाज उड़ाया और आप उसके पीछे लगा जिधर२वह भागाजाता था राजाभी पीछाकिये जाताथा इसमें कोसों निकलगया देखे तो शामहोगई तब सुर्त आई और फिर कर पीछेदेखा तो वहां कोई आदमी नजर न आया.और यहांतमामफौज राजाकी शामहुये परराजा को ढूंढ़ शिकार लेले आनकर नगर में दाखिल हुई और वहां सूनेजङ्गलमें राजा भटकताफिरताथा और कहींराह न पाता था जब अंधेराहोगया और रात बहुत गई एक नदीके किनारेपर पहुंचा। उतरकर अपने हाथ जीनपोश बिछा घोड़े को एकझाड़ीमेंबांध बैठरहा फिर देखता क्या है कि वहनदी बढ़तीआती है यह हटनेलगा ज्योंर राजा हटताजाता था त्योंर वह बढ़तीआती थी फिरजो निगाहकी तो यहदेखा कि नदीकीधारमें एक मुर्दावहा चलाआता है और उसके साथ२एकबैताल और एकयोगी खैंचा खैंची कियेहुये आते हैं और आपस में यों झगड़ते हैं कि योगी बैताल से कहता है तूने बहुत मुर्दे खाये हैं और यह मैंने अपने अवसरपर पायाहै तू छोड़दे मैंइसे ले

जाकर अपना योगकमाऊं गोयायह सिद्धि मैंनेतुझसेपाई
बैताल बोला भाई मैंअज्ञाना नहींहूं जो तू मुझे छलावे
क्योंकर अपना आधार मैं तुझेहूं। इतीतरह आपसमेंदोनों
झगड़ते और कहते थे कोई तीसरा शख्स इसबक्त ऐसा
नहीं कि हमारा न्याबचुकावे फिरे योगी कहनेलगा कि
बैताल तू मेरीबातसुन कलप्रभातको हमतुम सभाकरें जो
सभामें न्याबचुके वहीतूभी प्रमाणकर और मैंभी। इतनेमें
एकदृष्टि राजा की ओर आपड़ी देखकर दोनों हंसे और
कहने लगे वह कोई मनुष्य नदी किनारे में नज़र आता
है वहींचलो कि वहन्याव निबेड़े। यहकहकर मुर्दालिये
दोनों किनारेपर आये राणा को तमाम किस्सा सुनाकर
कहा कि स्वामी तुम धर्मात्माहो धर्म बिचारके हमारा
न्याव निबेड़दीजिये योगीबोला महाराज मैंकहताहूं सो
आप ध्यानदेकर सुनिये इस बैताल ने बहुत मुर्दे खाये हैं
और यहमुर्दा मैंने अपनेदांवपर पायाहै यह नाहकमुझसे
रार करताहै और कहताहै कि मैं तुझे न दूंगा मैंइससे
बिनतीकरके मांगताहूं और कहताहूं कि गोया यहमैंने
प्रसाद तुझसेपाया यह नहींमानता। राजाने बैतालसेपूछा
कि तू अपनेभी मनकी सभासेबातकह। वह बोला महा-
राज। यहयोगी बड़ामूर्खहै जो इसने मुझसे रारमें झगड़ा
लगाया मैं हजारकोससे इसमुर्दे को लेआयाहूं यह मुझसे
मांगरहा है मैं इसे क्योंकर दूं कि इस मुर्दे के लिये मैंने
बहुत कष्टकिया यह नाहक देखके मन चलाताहै मैं क्या
कहूं कि जो २ मैंने इसके वास्ते दुःख उठाये अब अहा-
रके समय इस दुष्ट ने आनसताया इसकान्याव तेरे हाथ
है क्योंकि तू धर्मात्मा राजाहै जोतू कहेगा सोमुझेप्रमाण
है तब राजा कहनेलगा तुम दोनों बड़ेहो प्रसाद हमेंदो
कुछ तुमसे मांगतेहैं तब तुम्हारा न्याव हम चुकादेंगे यह
सुन योगीने हंसकर झोलेसे एक बटुआ निकाल राजा के
हाथ देकरकहा राजातू जितना द्रव्यचाहेगा उतनायह
बटुआदेगा इसमेंसे कभी कमनहोगा फिर बैतालने कहा

राजामें एकमोहनीतिलक तुझेदेताहूं इसे जबतू घिसकर टीकादेगा सब तुझसेदबेंगे तेरेसामने कोई न होगा। यह दोनोंके प्रसाद राजाको दिया उन्ने हाथबढ़ाकर लेलिया और बोला कि सुन बैतालतू इससुर्दे को छोड़दे मेरे घोड़े को खा यह मुर्दा योगी के हवाले कर क्योंकि तू भूखा न रहै और उसका काम भी बन्दनहो। यह सुनतेहीबैताल उस घोड़े को खा गया और योगी मुर्दा ले अपना मंच साधनेगया राजाने वीरों को बुलाया और अपने देशको चला रास्ते में एक भिखारी सन्मुखसे चलाआताथा उन्ने पूछा कि साकेवस्त्र राजा आताहै डरते २ उसने सवाल किया कि महाराज आपके नगर में मैं बहुत दिनों रहा लेकिन कुछ अर्थमेरा सिद्ध न हुआ अबमैं कुछ तुमसेमांगताहूं मेरेतईं दीजिये। यह सुनतेही राजाने वह बटुवा उसकेहाथ दिया और भेद बताया वह अशीसदेता अपने घरको गया और राजा अपने मन्दिर में आया। इतनी बात कह त्रिलोचनी पुतली कहने लगी कि सुन राजा भोज। ऐसा दानी और ऐसा साहसी जो है वो सो इस सिंहासनपर बैठे नहीं तो पातकहै उसके दूसरे दिनराजा सवेरे उठ स्नान ध्यानकर दरबारमें आनबैठा और दीवानसुतसही को बुलाकर कहा कि आज मेरा चित्त बहुत प्रसन्नहै जल्दी चलके सिंहासनपर बैठूंगा इतनीबातसुन वहांसे उठ सिंहासनपास आया। सोनादानकर ब्राह्मणों को बिरतेंकरदीं फिर आप गणेशको मना सिंहासन पर बैठनेको पांव बढ़ाया कि इतनेमें॥

बिलोचनी चौदहवीं पुतली ने॥

कहा पहले मेरा सुन जो मैं कहतीहूं पीछे सिंहासन पर बैठ राजाने सुनतेही पांव खैंचलिया और सिंहासन के नीचे आसन बिछा बैठगया तब पुतलीबोली कि राजा सुन एकदिन राजावीर विक्रमादित्य ने अपने प्रधानको बुलाकर कहा कि मैं यज्ञ करूंगा जिसमें पुण्य हो और आगे

को निकाल रहो वे दीवानने सुनतेही देश २ को नौता भेजा जहां तक राजा प्रजा थे उन्हें बुलाया कर्णाटक गुजरात कश्मीर कन्नौज तैलंग इन नगरों में भी नौता भेज जितने ब्राह्मण थे उन्हें बुलाया और सातोंद्वीपमें नौताभेजा वहां के राजाओं को तलब किया फिर एक वीर को पताल के राजाके पास नौताभेज तुमे बुलाया और दूसरे वीर को स्वर्गको रवानाकर देवताओं को नौता भेज बुलाया और एक ब्राह्मणको बुलाकर कहा कि तुम समुद्र को जाकर हमारी दण्डवत् कहो और निवेदन करो कि राजा ने यज्ञारंभ कियाहै और आपको बहुत विनतीकर बुलाया है। वह ब्राह्मण तुर्त वहांसेचला और कितने एकदिनों में सागरके तीरजा पहुंचा और वहां देखता क्या है कि न कोई मनुष्य है और नकोई वहां पशु पक्षीहै केवल जलही जल नजरआता है। यहदेख ब्राह्मण अपनेजीमें चिन्ताकर कहनेलगा कि राजाका संदेशा मैं किससे कहूं यहां तो कोई दीखताई नहींदेता और है तो जलही जल है। ऐसा विचार अपने मनमें कर वह पुकारा राजा विक्रमादित्य का नौता मैं दिये जाता हूं और तुम जल्दी पहुंचना इतनाकह वहांसे वहतब चला तबराहमें एक बूढ़े ब्राह्मण का रूपसमुद्र नजरआया और उसने पूछा कि वीर विक्रमादित्यने हमें किसवास्ते बुलाया है तब उसने कहा कि राजाके यहांयज्ञहै और तुम्हेंजरूर बनायाहै तब समुद्र बोला कि मैं चलूंगा पर मेरे चलने से जल जो यहां से बढ़ेगा तो कई नगर डूबजायंगे मेरी तरफ़ से राजा को विनतीकर कहना मेरे न आनेका कुछ पछतावा न करना मैं इस सबबसे बहुत नहीं सका। तब समुद्रने ब्राह्मणको पांचलालदिये और एक घोड़ा राजाको नौताभेज आप वहीं रहा और ब्राह्मण रुखसतहो राजाके पास गया वे पांचोरत्न राजाकोदिये और घोड़ा लासामने खड़ाकिया फिर सब वहां का वृत्तान्त कहा तब राजा ने प्रसन्न हो ब्राह्मणसे कहाकि ये लाल और घोड़ा तुमहीलो मैंने तुम्हें

दिया। यह कहकर पुतलीने राजा भोजको समझाया कि सुन राजा भोज। ऐसा पदार्थ राजा विक्रमादित्यने देते विलम्ब न किया वे लाल चीर घोड़ा कई राजको क़ीमतके थे ऐसे दानी राजाके आसन पर बैठने योग तू नहीं। पण्डित तू है पर माया तुझसे छूटती नहीं। बड़ दिनभी योंहीं गुजर गया दूसरे रोज फिर सिंहासन पर बैठने को तैयार हुआ तब॥ ———

अनूपवती पन्द्रहवीं पुतली बोली॥

सुन राजा वीरविक्रमादित्य के गुण कहनेमें नहीं आसक्ते जो बात कहने योग होवे तो कहिये अयुक्त कहते हुये जीसकाता है राजा बोला तू कह मेराजी सुनने को चाहता है जैसी बात है वैसी कह इसमें तुझे दोष नहीं तब पुतली बोली अच्छा अब मैं कहती हूं तू कान देकर सुन। एक दिन राजा वीरविक्रमादित्य सभा में बैठा था और कहींसे पण्डित आया उसने आकर राजाके सम्मुख एक श्लोक पढ़ा सुनकर राजा मनमें बहुत प्रसन्न हुआ उस श्लोकका सुद्धा यहथा मित्रद्रोही और विश्वासघाती जो हैं सो नरक भोगकरेंगे जब तलक चांद और सूर्य हैं। यह सुनकर राजाने लाख रुपये उसब्राह्मण को दानदिये और कहा कि इसकाअर्थ मुझे समझाकरकह कि इसका वृत्तान्त क्या है तब वह ब्राह्मण कहने लगा कि एक बड़ा अज्ञानी राजाथा उसको एक रानी जोथी प्राणकी आधारथी पलभरभी वह राजा उसे आपसे जुदा न करता था जबसभामें बैठता तो साथही जांघ पर लेबैठता और जब शिकारको जाता दूसरे घोड़ेपर बिठला साथ लेजाता रात्रि जागना सोना खानापीना एकहीं साथथा पर ऐसा मूर्खथा कि किसीसे पतियाता नथा रानीकोदृष्टिमें रखता एक दिन उसके प्रधानने औसर पाकर हाथ जोड़े और विनती कहनेलगा कि स्वामी जो मुझे जीदान देतोमैं एक निवेदन करूं राजाने कहा अच्छा तब वह बोला कि महाराज रानीके संग आप शोभानहीं पाते राजकुलकी

आन और मर्याद इसमें रहतीनहीं देश २ के राजाइसेहैं और कहतेहैं कि ऐसी सुन्दरी राजाके मनमें बसी है कि पलक ओटभी नहीं करता। एक मेरी बात मानिये जो आपको यह बहुत प्यारीहै एक चित्रपट लिखवाइये और अपने पास रखिये इसमें लोग निन्दा न करेंगे। यह बात प्रधानकी राजाके मनमें भाई कहा अच्छा चित्रकार को बुलाओ। मंत्रीने उसको बुलाभेजा वहतुर्त आकर हाजिर हुआ और बहुसुस्थिर कैसाथा कि ज्योतिष विद्यामें अति निपुणथा और चित्रकारी विद्यामेंभी पण्डितथा उसेराजा ने कहा कि रानीकी मूर्तिका पटलिखदे जो मैंअपनीनजरों में हमेशः रक्खूं। यह सुनकर नारदपुत्रने मस्तक झुकाके कहा महाराज अच्छा मैं लिखलाता हूं राजा से रुखसत हो अपने घर आया लिखना आरम्भ किया कितने एक दिनोंमें लिखकर बहुविच तैयारकिया सो ऐसा कि जाने अभी इन्द्रलोक से अप्सरा उतरी है और उस रानी का जैसा अंग जहांथा तैसाही उसने अपनी विद्या के जोर से लिखा जब वह तसबीर सरोपासे तैयार हुई लेकर राजा के पासगया और राजाने देखकर बहुतप्रसन्नकिया अंग२ उसने निरखनिरख देखा नखसे सिखतलक गोयासांचेकी ढाली हुई थी राजाकी दृष्टि देखते देखते दाहिनी जांघ पर जापड़ी तो वहां एक तिल देखा बहुतसा अपनेजीमें घबराया और कहने लगा कि उसने रानी की जांघ का तिल क्योंकर देखा होय न होय तो रानीसे उसकी मुलाक़ातहै इसतरह अपने मनमें विचार क्रोधकर दीवान से कहा कि उस चित्रकार को तुर्तबुलाओ उन्ने सुनतेही उसे बुला भेजा जाना कि राजा खुश हुआहै कुछ इनाम देगा जब वह आनकर राजाके सन्मुख हुआ तब अधिक क्रुद्ध होकर हुक्मकिया कि इसको गरदन मारके आंखें निकाल मेरे पास लाओ। जब वह उसे मारनेचला दीवानभी विदा हो पीछे होलिया बाहर निकल जल्लाद से कहा तू इसे मुझे दे और आंखें हिरण की निकालकर राजा के पास

लेजा जल्लादने प्रधानका कहनाकिया और दीवान राजा की तरफ़ से बज़ुत बेएतिबार हुआ कि ऐसा मूर्ख राजा हमने कहीं देखा सुना नहीं है कि गुणवान् पुरुष का यों जीमारे। कदाचित् गुणवान् पुरुषसे कुछ तक़सीर होजाय. तो उसे देश निकाला देते हैं यह राजाओं का चलनहै-सेवा सेहै पर कोई राजाओंकी बातपर न भूले मुंहमें तो चनके अमृत रहताहै और पेटमें विष भरेहुयेहैं जो कहते कुछहैं और करते कुछहैं। इसतरह दीवानने अपने जीमें बिचारकर डरते २ उसे छिपारक्खा और जल्लाद हरिण की आंखें निकाल राजा के पास लेगया कि महाराज उसको मारकर आंखें निकाल आपके पास लायाहूं राजा ने हुक्म किया इन आंखोंको संडासमें लेजाकर डालदो इसतरहसे वह साइत तो यों टलगई कितने एक दिनों के बाद उस राजाका बेटा एक दिन अकेला शिकारको गया जाते २ एक महा बनमें जा निकला एक शेर वहां नजर आया बाघको देख वह बज़ुत डरा घोड़ा वहीं छोड़ एक वृक्षपर चढ़ गया उसके ऊपर जो देखे तो एक रीछ बैठा है रीछको देखतेही उसके हाथ पांव फूलगये और कांपने लगा चाहेकि बेताब होकर गिरे इसमें वह रीछ बोला कि अय कुंवर तू अपने मनमें भय मत कर मैं तुझे नहीं खानेका क्योंकि तू मेरी शरण आयाहै मैंने तुझे जी दान दिया अब तू निश्चिन्त होकर आनन्दसे यहीं बैठ। यह बात रीछ से सुन उसके जीमें जी आया इसमें दिन बीत गया और रात हुई तब वह रीछ बोला राजपुत्र अब रात हुई यह नाहर अचु हम दोनोंका बैठा हुआहै इस वक्त सोना जीका जियानहै बिहतर यहहै कि दो २ पहर रात हम आपसमें जागें आधी रात तू जाग और आधीरात मैं। राजपुत्रने कहा बज़ुत अच्छा रीछने कहा पिछले दोपहररात को तू सो रह मैं अब जागताहूं और पिछले दो याम निशा को तू जागियो मैं सो रहूंगा। आपसमें इसतरह दोनोंने करार किया राजपुत्र सोरहा

वह रीछ बैठा और चौकी देने लगा इसमें शेरने रीछ से कहा तू मेरी बात सुन और अज्ञानी मत हो यह मनुष्य भक्ष्य है हमारा, और तू क्यों विष का बीज बोता है इसे नीचे डाल दे हम दोनों खाजांय यह आदमी है हम तुम दोनों वनवासी हैं। हाथ का लाखिक गिर के फिर हाथ नहीं आता जब यह जाग उठेगा तो तू सोवेगा तो यह तेरा शिर काटकर फैंक देवेगा अब यही बिहतर है कि मेरा कहनाकर फिर यह अवसर न पावेगा आखिर को तू पछतावेगा। रीछने जवाब दिया कि सुन अज्ञान बाघ अपने ऊपर अपराध लेना उचित नहीं जितना होता है पाप राजाके मारने और वृक्ष काटनेसे गुरू से झूठ बोलने और वनजलाने और विश्वासघात करनेसे इतनाही होता है शरणागतके मारनेसे इनसबका महापाप है और यह पाप किसीतरह छूटता नहीं इसने मेरी शरण ली है क्या हुआ जो एक शीश मैंने न खाया तब बाघ खफा होकर बोला कि तूने मेरा कहा तो न माना मैंभी तुझे जीता न जानेदूंगा इतनेमें रीछकी बारी तो पूरीहुई और राजकुमारजागा फिर रीछसोया वह चौकी देनेलगा उसेभी यही बात बाघने कही कि भाई। जो मैं कहूं सोतू सुन भूलकरभी तू इसमें मत प्रतिया सोकर सुबहको जब यह उठेगा बेशक तुझे खाजायगा यह मुझसे कह चुकाहै कि सोकरउठूं तो मैं इसे खाजाऊंगा इससे यह भलाहै कि तू पहलेही इसरीछको गिरादे जो मैं इसे खाजाऊं और अपनी रक्षलूं। तूभी सही सलामत से अपने घरको जा उसके परबोधनेसे यहबातों में आगया और उसउठनेको पकड़ ऐसाहिलाया कि जिससे वह रीछ तलेगिरपड़ा इसमें उसकीआंख खुलगई और टहनेसे लिपटकररहगया और इससेकहा फिट मुय पापी जो तूने मुझसे ये सलूक किया मैंने तेरीजानरक्खी और तूमतिहीन मेरेमारने को तैयारहुआ अब जो मैं तुझे मारकर खाजाऊं तो क्याकर सक्ताहै यहबात रीछकी सुनतेही उसकीजान सूखगई अ-

पनेदिलमें जाना अबयह मुझेसुकर्रर्रखा।यगा इसमें सबेरा होगया बाघ उठकर वहांसेचलागया रीछने उसके कान में मूतदिया और कहाकि तुझे जीसे तो क्या मारूं क्योंकि अब यहांकोई तेराबचानेवाला नहींहै इससे असमर्थजान कर मैं छोड़देताहूं यह कहकर रीछ तो चलागया और वह गूंगाबहरा हो वहांसे बहुत घबरा व्याकुलहो नगर में आया। राजा उसकी दशादेख अपनेजी में चिन्ताकरनेलगा महलोंमें जो खबरभई तो रानियांकुमार२ रोने लगींऔर कहनेलगीं कि भगवाननेयहक्या अयुक्तकियाकोई कहनेलगीं किसीने इसेछलाहै तिससे इसकी यह हालत होगई है राजाने सोचकर दीवानसेकहा कि जितनेगुणी लोग हैं यंत्रमंत्र जाननेवाले नगरमें उनसबको बुलवाकर कुंवरकोदिखलाओ। प्रधानने आदमियोंको भेजसबसयानों को बुलाया और उनसे कहा जिसमें इसे आराम हो सो कियाचाहिये वे अपने यंत्रमंत्र करने लगे जिस क़दर कि उन्होंमें इसका उतारकिया कुछफ़ायदा न हुआ। हार कर उनसबोंने जवाबदिया कि हमारी विद्या यहां कुछ काम नहींकरती। जब मंत्रीने यहदेखाकि उन्हों के गुणों से इसे कुछआराम न हुआ राजासे हाथजोड़कर बिनती की महाराज मेरे पुत्रकी वहू जो है सो बड़ी गुणवती है आप आज्ञाकीजिये तो मैं उसकेतईं लेआऊं और वहकुंवरकोदेखे भगवान्चाहै तो आरामहोजायगा इसकेसिवा और यत्न नहीं। राजाने कहा तेरे बेटे की स्त्री क्या जाने फिर दीवानने कहा महाराज वह एकयोगी की चेली है उस योगीने यंत्रमंत्रविद्या उसेसिखादीहै राजानेआज्ञादी और दीवानसवारहो अपनेघरको गया वहांचिचकारको बुला सब अवस्था वहांकी कही और कहा कि मैंइसतरह से राजाको वचन देआयाहूं तू स्त्रीका भेष बनाकर मेरेसङ्ग होले उसने क़बूल किया और स्त्रीभेष बनसाथ होलिया दोनोंसवार होकर राजाकेपासआये। लोग महलमें उसे परदाकरके लेगये दरमिया एकक़नात खैंच ली और उस

तरफ क़नातके उसेबिठाया राजा और लड़का और दीवान ये तीनों क़नात के बाहर बैठे और उसने क़नात के अन्दरसे कहा कि तू कुंवर को स्नान करवा कपड़े बदलवा चौका दिलवा एक पटरा बिछवा बिठाओ और कुंवरसे कहा कि तू सावधान होकरबैठ और जोमैं मंचकहूं सो कानदेकर सुन विभीषण बड़ा शूरवीरथा और दगाकरके रामचन्द्रसे जामिला उसने रावणका राजसबखराबकिया अपने कुलका नाशकिया। उसलाजसे एकबरसतलकसिर न उठाया और अपने कियेका फलपाया कि सबकुछ गंवाया और भस्मासुर ने महादेव की तपस्याकर वरपाया और उन्हीं से विश्वासघात किया कि पार्वती के लेनेकी इच्छाकी और उसकाभीफल उसने तुर्तपाया कि क्षणभर में जलके भस्महोगया और कुंवरतू मित्रद्रोही और विश्वासघाती क्योंहुआ कि मोतेहुये रीछको तूने क्योंढकेला उसने तो तेराउपकार कियाथा तूने उसका बुरा विचारा पर इसमें तेरादोष कुछनहींहै तेरेपिता का दोष है इस वास्तेकि जैसा बीजबोवेगा वैसाही फलहोवेगा यह तुमने अपने पिताके पापसे दुखपाया। इतनीबात सुनतेहीकुवर सचेतहो बोलउठा तब राजाबोला अब सुन्दरी तूसचकह कि तूने वहवनका जानवर क्योंकरपहचाना यह सुनकर उसने जवाबदिया कि राजा। मैंअपनी पूर्वअवस्यातेरे आगे प्रकटकरूंहूं सुन जबमैं अपनेगुरूकेपासपढ़नेजातीथी तबगुरू की अतिसेवा करतीथी गुरूने प्रसन्नहो एकमंच मुझे बता दियाः वहमंच मैंनेसाधा तबसे सरस्वती मेरेमनमें बसी है और जैसे मैनेरानीकी जांघका तिल पहचाना वैसही बन के रीछकोभी जाना। यहसुनतेही राजाने प्रसन्नहोपरदा दरमियान से दूरकरदिया और कहा कि तू सचमारदा पुत्रहै तेरे गुणको मैंने अब जाना यह कहराजा ने आधा राज उसेदिया और अपना मंत्रीकिया। इतनीबात कह वह ब्राह्मणबोलाकि राजा बीरविक्रमादित्य। इसश्लोकका यह अर्थ है यह कथा उस ब्राह्मण से सुनकर राजा बीर-

बिक्रमादित्य ने हजार गांव वृत्ति करदिये ये बातें करके पुतली बोलीकि राजाभोज। तुझमें इतनागुण कहां और इसजगमें बिक्रम समान राजाहोना सुगकिलहै मैंनेतुझसे यह सचबात कही और तू इस सिंहासन योगनहीं उस दिनकी भी सायत योंहीजातीरही राजा महलमें दाखि लहुआ दूसरे सुबह को उठा स्नान पूजाकर ध्यान लगा सिंहासन पास आ खड़ारहा और प्रधान को बुलाकर कहा कि मेराजी चाहता है कि सिंहासन पर आजबैठूं चिहतरहै कि दुघड़िया अच्छा मुहूर्त्त इसवक्तसुझे देखदो दीवाननेकहा महाराज आपतो बैठियेगापर येपुतलियां आपको रोर मरेंगी राजा ठटकरहा और॥

सुन्दरवती सोलहवीं पुतली बोली॥

सुनराजा मैं तुझसे बिचारकर कथाका अहवाल कहतीहूं। उज्जैनगरी में छत्तीस कौम और चारजातबसतीथी एक वहांका नगरसेठ जिसके यहां अतिधन था और बड़ा प्रतापीथा नगरके लोगोंको व्यवहार करने के लिये बहुत माया देतालेता था जो कोईउसके पास अपना स्वार्थ बिचारकर जाताथा वह खाली फिरकर नहींआता था उसका एकबेटा रत्नसेननाम बहुत सुन्दरथा और अति विद्यावान मातापिता की आज्ञामें निशिदिन रहता उस सेठकेमनमें आई कि कहींअच्छीकन्या ठहरा इसकाब्याह करदूं ब्राह्मणोंको बुला देशदेश भेजा और कहदियाजहां कहीं अच्छीलड़की ठहरे वहांका टीकालेके तुमआओ गे तोबहुतकुछतुम्हें दूंगाऔर कुछरुपये खर्चको दे बिदाकिया ब्राह्मण देश २ ढूंढ़नेगये उनमेंसे एक ब्राह्मण ने समाचार पायाकि समुद्रपार एकसेठहै और उसकी बेटी बहुतसुन्दरीहै उसेभी बरकीतलाश है। यह सुनकर एक जहाज पर बैठ समुद्रपार गया वहां जा सेठकाठिकाना पूछकर उसकेद्वारेपर ठहरा और खबर की कि उज्जैननगरी से एकब्राह्मण वहांके सेठकाआया है। यहखबर सुनउससेठ

ने उसको बलाया और दण्डवत् कर आसन दे बिठाया ब्राह्मण असीस देकर बैठा। सेठने पूछा किस कारणकेलिये तुमआयेहो सो कहो ब्राह्मणने कहा हमारेसेठने भेजा है लड़केकी शादीकेलिये और कहदिया है जहांकन्या अच्छे कुलीनकी ठहरे वहांका टीकालो हमारेपास पहुंचो सेठ यहसुनकर बोला मेरीभी यहीइच्छाथी कि पुत्रीकाव्याह मैं कहांकरूंगा पर भगवान् ने घरबैठे संयोग बनादिया फिर कहा कितनेदिन तुम यहांआरामकरोमैं अपनापुरोहित तुम्हारे साथ करदूंगा वह लड़केको देख टीका जाकर देगा और तुमभी इस लड़की को देखलो और वहां जाकर उस सेठसे कहो कि हम अपनी आंखों देख आये हैं वह ब्राह्मण कितने दिनों वहांरहा और उसकन्याको अपनी आंखों देख सेठके ब्राह्मण को साथले उज्जैन नगरी को फिरचला उस सेठ ने अपने पुरोहित से कहदिया कि टीकादे व्याहकी जल्दीकरआना। येदोनों वहांसे चलेजहाजपरचढ़ कितने दिनोंमें उज्जैन नगरीमें आनपहुंचे ब्राह्मण ने सेठको खबरदी कि मैंकन्या ठहरा आया हूं और उस सेठका पुरोहित साथ लायाहूं सेठने दूसरे उस ब्राह्मणको बोलाया और लड़केकोअपने पासबैठा दिखलाया ब्राह्मणने देख उसे तिलककरदिया और हाथजोड़अपने सेठकीतरफ से बिनती कर कहा कि आप जल्दीसेबरात लेकर आइये हमजाकर वहां तैयारी करतेहैं फिर रुखसत होकर सेठ से वह ब्राह्मण अपने मुल्ककोगया। वहां जा सेठसे यहां का सब समाचार कहा सेठ सुनकर ब्याहका सामान करने लगा और इधर यह सेठ व्याह की तैयारी करने नक्कारखाने में नौबत बजने लगी और घरमें मंगलाचार होने लगे तरह२ की तैयारियां की जितने कुनबेके लोग थे उनको नये जोड़े पहिना अपने साथ लेजाने को मुकर्रर किया नाचरागरंग खुशी होने लगे इसतरह तमाम शहरकी जाफत करते २ बरात की तैयारी करते ब्याह का दिन नजदीक पहुंचा अजबस कि जाना दूर काथा

फ़िक्र करनेलगा कि अरसा थोड़ा रहाहै समुद्र पारहम इतने दिनोंमें क्योंकर जासकेंगे यह बात सुनकर उसके सब भाईबंधु अंदेशा करने लगे और खुशी तमाम शादी की भूलगये। इसमें एक शख़्सने आकर उस सेठसे कहा कि इस बर कन्याकी प्रारब्धहोगी तो इस लग्नमें विवाह होगा और मैं एकयत्न बताताहूं तुम उसकी फिक्रकरो भगवान चाहै तो बनजाय तब उन्ने हाथ जोड़कर कहा कि भाई। यातो भगवान के हाथ हमारी लज्जा है या तेरेहाथ जिसमें हमारा कामबनै सोतू कहतब वहकहने लगा कई एक महीने हुयेहैं कि एक बढ़ई उड़न खटोला बनाकर राजाके पास ले आया था और वह कहता था कि इस खटोलेका यह सुभावहै कि इसपर बैठकर जहां तुम्हारी इच्छा होतहां जाओ यह पहुंचा वेगा। राजा ने सुनकर उसको दोलाख रुपयेदिये और खटोला लिया वह अब राजाके घरमेंहै तुम जाओ और राजा से मांगो जो तुम्हें राजादें तो तुम्हारा सबकाम सिद्धहो। यह सुन तेही वह खुशी होकर राजद्वार पर गया और द्वारपालोंसे कहा मेरीखबर महाराज से कर दो दरवानों ने दीवान से जाकर अर्जकी कि नगर सेठ द्वारेपर हाजिर है आपकी आज्ञाहो तो राजाके दर्शन को आवे दीवानने कहा कि बुलालो दरवान आकर उसेलेगये उसने जाकर दीवानको दण्डवत् की और बिनती कर कहने लगा कि महाराज के दर्शन को मैं आया हूं और अपना बड़ा जरूर काम लायाहूं यह सुनकर मंत्रीने कहा कि राजा महलमें हैं। सेठ यह सुन अति उदास हुआ कहा मेरा बड़ा कारजथा कि लड़के की शादी है और जाना समुद्र पारहै चारदिन बाक़ी रहगयेहैं इसमें जो न पहुंचसकूं तो मेरे कुलकी हंसी होगी बनिये से यह बात सुनकर दीवान ने राजासे जायकर हक़ीक़त जाहिर की राजाने आज्ञादी कि वह उड़न खटोला उसे ले जाकर दो और जोकुछ वहकहै सब उसकी तैयारी करदो जिसमें किसी

तरह उसके काम में विघ्न न होने पावे प्रधानने खटोला मंगवा बनियें को दिया और कहा जोकुछ सामान तुझे दरकार हो सो कह महाराज का यों हुक्म है तब सेठने कहा। महाराज की दयासे सब कुछ है मेरी यही चाहना थी और आपकी कृपासे सब काम सिद्ध होगा। महाजन खटोला लिये अपने घरको आया ब्राह्मणको बुलाकर साथ लिया लड़का और आप उस पर बैठ समुद्र पार चला। कुछ एक अरसे में वहां जापहुंचा और वहांजाकर देखे तो मंगलाचार सारे नगर में होरहा है और सबराह देख रहेहैं जब लोगोंने देखा तो हाथों हाथ ले गये जाकर एक हवेली में उतारा और अपने सेठको खबर दी कि तुम्हारा समधी बरात ले आन पहुंचाहै वह सेठ भी वहांसे उसकी मुलाक़ातको आपआया और देखकर इतनी न आदमियोंको अपने जीमें बहुत पछताया और पूछा क्यासबबहै जोतुमसतरहसेआयेहो। तब उसनेब्यौरा और सब अवस्था अपनी सुनाई सुनतेही उससेठने अपने गुमास्तोंसे कहाकि कलब्याहहै और आजबरातकी तैयारी सबतुमजल्दी करदो कि जिसमें शहरके लोग न हंसें उसने सब तैयारी बातकहतेही करदी दूसरे दिन बरात लेकर वह सेठ व्याहनेगया और बेटेका व्याह किया उससेठने हाथी घोड़े जोड़े पालकी मियानेलड़ाऊ गहने और बहुत साकुछदान दहेजदिया। यहयहांसे लेकर जहाजमेंरखवा आप सवारहो अपने शहरमें आया और फिर नयेसिरेसे शादीरचाई ब्राह्मणों को बहुत कुछदान दिया और कुछ जवाहिर पोशाक और बाजे तुरफः और तहायफ़थालों में रख और चारघोड़े खासेलेकर राजाकी नजरको चला और वह खटोला जो लेगया था वह भी फेर देने। जब द्वारेपर पहुंचा द्वारपालोंसे कहा कि महाराजको मेरी खबरदो राजाने खबर सुन उसे बुलालिया और जो कुछ वह लेगया था जाकर सब राजाकोभेटकिया और कहा महाराज। आपके पुण्य प्रताप से सब काम अच्छा हुआ

अब इस दासकीभेट आपको क़बूलकरनी होगी। राजा सुन हंसकरबोला किमेरा यह स्वभावहै कि दी हुई चीज़ मैं फेर नहीं लेता यहखटोला मैंने तुझीकोदिया और जो कुछ तू तुहफः लायाहै येसब तुझके और लाखरुपये अपने खज़ानेसे और हमने तेरे बेटेकोदिये इसवास्ते कि उसकी शादीहुई है ग़रज़ये सब कुछ इनायत करके पान दे उसे रुख़सतकिया यह प्रसन्न होा अपने घरको आया। इतनी बात कहकर पुतली बोली सुन राजाभोज राजाबीरविक्रमादित्यकी बराबरी इन्द्रभी नहीं करसक्ता था और तूतो किस गिनतीमें है जो तूने अपना मन बढ़ाया है इसे तू बाज आ। इन बातों में वह भी दिन गुज़रगया राजा महलमें दाखिलहुआ रात जिस तिस तरह गुज़री फिर जब सुबहहुई राजासिंहासनके बैठनेका इरादाकर वहां आया कि॥

सत्यवती सत्रहवीं पुतली बोली॥

सुन राजाभोज। एकदिन राजा बीरविक्रमादित्य सभा में इन्द्र समान बैठाथा और गंधर्व मधुर स्वरों से गारहे थे पातुर नृत्यकर भावबता रही थी कहीं भाट खड़े हुये यशवर्णनकर रहेथे किसी तरफ ब्राह्मण वेदपाठकररहे थे किसी तरफ मल्लआपसमें युद्धकररहे थे और किसी तरफ चीते कुत्ते सियाह गोश हरिण मेढ़े मीर शिकार लिये खड़े थे और जितनी तैयारी राजाओंकी चाहिये सबथी सभामें एकसे एकपण्डित चतुर और बीर बैठा था उनमें राजा इन्द्रकी तरह बैठाथा और सब सामान इन्द्रके अखाड़ेसासा था इसमें राजाने अपने चित्त में विचारकर पण्डितों से कहा कि तुम एक बात मेरी सुनो कि स्वर्ग में राजाइन्द्रजो है सो मर्त्यलोक का सब मरम जानता है कहो कि पातालका राजा कौनहै और किसजगह वह रहता है। तब उनमें से एकपण्डित बोला कि महाराज पातालका राजा शेषनाग है जिसके सहस्रफन हैं और पद्मिनी रानी उसके यहां है और कभी शोक संतापउसे

नहीं व्यापता आनन्द से अचलराज वहांका वह करताहै और जैसा यह राजा सुखी है वैसा संसारमें कोई नहीं यह सुनकर राजाको उसके मिलनेकी इच्छाहुई। बैतालोंको बुलाकर कहा कि मेरे तईं पाताल को खेचलो मैं शेषनाग के दर्शनको जाऊंगा। बैताल उठाकर पातालको लेगये और शेषनागका दूरसे मन्दिर दिखादिया राजाने दूरसे देख बैतालों को बिदाकिया और आप मन्दिर को चला। जाकर उसके पास पहुंचा देखे तो वह कांचन का मन्दिर रत्नोंसे जड़ाहुआ जगमगारहा है और ऐसी जोति है उसकी कि जिसमें रोशनी के सिवा रात दिन कुछ नहीं मालूमहोता। द्वार द्वारपर कमलके फूलों की बन्दनवारें बन्धीहुई हैं और घर२ आनन्दहो रहेहैंराजा कुछ डरता२ कुछ खुशी२ द्वारेजा खड़ाहुआ और वहां के द्वारपालों से दण्डवतकर कहा महाराज को हमारा समाचार पहुंचाओ कहो कि मर्त्यलोक से एक राजा आपके दर्शनको आयाहै दरवान राजाको खबर देनेगया और यह द्वारपर खड़ाहुआ कहता था धन्यभाग हैं मेरे कि मैं यहां तक आनपहुंचा और चारों तरफ से राम कृष्णकी आवाजआती थी और राजाके मन्दिर में बेनकी धुनिकानपड़ती थी जब दरवान राजाके सन्मुख जा प्रणाम कर हाथजोड़ खड़ाहुआ राजाने उसकी ओर दृष्टिकी। उसने कहा महाराज एक मनुष्य द्वारेपर खड़ा है और कहता है कि मर्त्यलोक से आया हूं द्वारे को हजारों दण्डवतो करताहै बल्कि जिसको देखताहै उसकोभी आप के दर्शनकी अभिलाषा है जिससे निहायत बेचैन है यह बात सुनतेही शेषनाग उठकेद्वारे पर आया। राजाने देखतेही साष्टांग प्रणामकिया और उसने हंसकर अशीस दी और पूछा कि तुम्हारा नाम क्याहै और कौनसादेश है राजाने हाथजोड़कर कहाकिस्वामी विक्रमभूपालमेरा नामहै और मर्त्यलोकका राजाहूं आपकेचरण दर्शन की मुझे इच्छाथी सो मेरे मनकी इच्छापूरीहुई आजमुझे म-

रोड़यज्ञका फलहुआ और करोड़ों दानकियेकापुण्य और धन्यभाग मेरे जो आपके चरण कमल के दर्शन हुये बल्कि चौंसठतीर्थनहानेकासुफलहुआ। विक्रमकाना सुनतेही शेषनाग मिला और हाथ पकड़ अपने मकान में लेगया अच्छी जगह बैठा क्षेमकुशलपूछी राजाने कहामहाराज के दर्शन से सबआनन्द है फिर कहा तुमकिसकारण यहां आयेहो और आतेहुए पन्थमें तुमने बहुत यहांतक कष्ट पाया होगा विक्रम बोला कि फणिनाथ मैंने जोकष्टपाया सो सब तुम्हारे दर्शन किये से बिसरा फिरा राजा के रहने के लिये एक अच्छा स्थानदिया और बहुत से लोग टहल करनेको और उनलोगोंसे कह दिया कि मेरी सेवा से भी तुम अधिक राजाकी सेवाजानना इसतरहसे पांच सात दिन राजाविक्रमादित्य वहां रहा। बादउसके एक दिन हाथजोड़ करकहा हृषीनाथ। मुझेबिदाकीजिये तो मैं अपने नगरमें जाऊं और वहांबैठ आपका गुण गाऊं। तब शेषने हंसकर कहा अबराजा तुम्हेंघरजानेकी इच्छा हुई है भला कुछ प्रसाद हमदेते हैं तुम लेतेजाओ। यह कह चारलाल मंगवा राजा को दिये और उनका गुण कहनेलगा कि एकरत्नकायह स्वभावहै कि जितनागहना चाहोगेसो यह तुम्हें देगा और क्षण भरदेते विलम्ब न करेगा और दूसरेनगका यहस्वभावहै कि हाथी घोड़े पाल कियां जितनी तुम मांगोगे उतनी इससे पाओगे और तीसरे लाल का यह गुण है कि जितनी लक्ष्मी चाहोगे उतनी यहदेगा और चौथे रत्नका यह प्रभावहै कि हरि भजन और सत्कर्म करनेकी जितनी इच्छारक्खोगे उतनी यह पूरीकरैगा इसतरह चारोंलालोंके गुणराजासे समझाकर कहे और बिदाकिया राजा हाथ जोड़कर खड़ा हो कहने लगा महाराज मैं आप के गुणकी उपमा नहीं देसक्ता पर आप मुझे दास समझकर कृपा रखियेगा यह कहकर राजा वहांसे रुखसत हुआ और बैतालोंकोबुला सवारहोअपने नगरको आयाजब कोस एकनगर रहगया।

तब बैतालों को छोड़ आप राजा पाओं २ शहर को चला। देखता क्या है कि एकदुर्बलभूखा ब्राह्मण चलाआता है जब वह पास आया यह उसने कहा कि मैं भूखा हूं कुछ मुझे भिक्षादे जोमैं जाकर कुटुम्बको पालूं। सुनतेही चिन्ताकर अपने मनमें कहनेलगा इसब्राह्मणको इसमें से एक लालदूं यह विचार कर ब्राह्मण से कहा कि देवता मेरे पासचार रत्नहैं और चारोंके ये गुण हैं जो तू इनमें से चाहे वहमैं तुझेदूं तब ब्राह्मणने कहा कि पहिले अपने घरको होआऊं तब तुमसे कहूं यह कहकर ब्राह्मण अपने घरको गया और राजा वहां खड़ारहा वह घरमें जाकर अपनी स्त्री पुत्र और पुत्रकी बहू से कहने लगा कि उन चारों लालों का यह ब्यौरा है उन तीनों मेंसे उनकी ब्राह्मणी बोली कि स्वामी तुमवह लाललो जो लक्ष्मी देहै और खियाल मनसे उठा दो क्योंकि लक्ष्मी से मिलतेहैं सहाय और लक्ष्मी से होते हैं सब उपाय धर्म ज्ञान नेम पुण्यदान यह सब लक्ष्मीसे होताहै इससे तुम और तरफ चितमत डुलाओ जाकर लक्ष्मीले आओ फिर उसकापुत्र बोला कि लक्ष्मी किस कामकीहै जो साथ सामान नहो और जोसामान होतो राजा कहावे और सब कोईशिर नवावे मरजामहोतो दुर्जनडरें और संसारमें शोभावे जो लक्ष्मीछड़ै और जगमें शोभा न पाई तो उसपुरुषका जन्मलेना निष्फलहै तुम वह लाललो जो संसारमें शोभा दे। इतनेमें उसके बेटेकी बहू बोली कि तुम वह लाललो जो आभूषणदे कि गहनेकेपहिननेसे स्त्री अधूरा मालुमहो जो रांडभी पहनेतो अति सुन्दरी दिखाई दे और विपत पड़ेतोबेच २ बहुतसा धनले और जितना मांगोगे उतना उससे पाओगे पुरुष हमारा बावलाहै और सास बुद्धि-होनहै और ससुर तुमसज्ञानीहो इससे तुमसेमें कहतीहूं वही लाललेओ जो मैंने तुमसे कहाहै उससे तुम सब कुछ पाओगे। यह सुनकर ब्राह्मण बोला कि तुम तीनों बौराएहो और मेरी इच्छा सिवाय धर्मके और किसी

पर नहीं क्योंकि धर्म से संसार में आदमी राज्यपाता है और धर्मसे सबकाम सिद्धहोते हैं और धर्मसे जगमें यश होताहै और धर्मकरनेसे देखो कि राजाबलि ने पाताल का राज्य पाया और धर्मसे राजाइन्द्रने स्वर्ग में इन्द्रासन पाया और धर्मसे यह काया अमरहोजाती है गर्भ वास छूटजाता है इससे तुम मेरा धर्ममत डुलाओ और मैं अपना सत न छोड़ूंगा इसमें जोहो सोहो। इसी तरह चारोंने चार मतिकी बातकहीं एककीएकने नमानी तब ब्राह्मण फिर राजाके निकट आया और आकर सब अहवाल सुनाया कहाकि महाराज मैंघरको गया पर बात कुछ बन न आई अपनी २ सब कोई कहताहै और हम चारों की चारमति हैं और आपने यहां खड़े होकर हमारे लिये दुख पाया पर हमारा मता बन न आया। यह सुनराजा ने कहा कि महाराज तुम अपने चित्त में निराश होकर उदास न हो चारोंलाल तुम अपने घरले जाओ मैं तुम्हें देताहूं क्योंकि जिसमें तुम्हारा कुटुम्ब भी प्रसन्नहो और तुमभी। हमारा इसीमें कल्याणहै। निदान राजाने चारोलाला खुशहोके ब्राह्मणके हाथदिये ब्राह्मण लेकर अशीसदे अपने धामकोगया। सुनराजाभोज राजा विक्रमादित्य भी अपने मन्दिर को आया और देतेदान कुछ विलम्बनलाया। ऐसादानी अबइस कलियुग में कौन है जो उसके समान दानदे वह इस आसनपर बैठे और नहींतो नरक वास पावे अभी तू अपने जीमें मत उकता धीरजधर और आगे कथा सुन जो२ राजाने साइस और दानकिये हैं यह बात पुतलीकी सुनकर राजासिंहासन के पासमें चढ़कर घरमेंआया सारीरातसोच और चिन्ता में गवांई सुबह होतेही स्नान पूजा करके बैठा इतने में दीवान प्रधान आकर हाजिरहुए सबको साथले सिंहासन के पासजा चाहे कि पांव उठाकर धरे कि॥

———

रूपरेखा अठारहवीं पुतली ॥

हांहा करउठी और कहा कि राजा मुझपर दयाकर पहिले मेरी बातसुन तिसपीछे जो इच्छामें आवे सोकर तब राजा बोला तू कह जो तेरे चित्तमें है। वह पुतली कहनेलगी कि सुन राजाभोज। एक दिन दो संन्यासी आपसमें योगकी रीतिसे झगड़तेथे न वह उससे जीतसका था न वह उससे आखिर इसतरह झगड़ते २ वीरविक्रमादित्य के पासआये और कहा कि महाराज हमदोनों विवादी हैं इसका आप न्यायचुकावें आप धर्मात्मा राजा हैं यह समझकर हमआये हैं। राजाने कहा मुझसे समझाकर तुम जाहिर करो कि किस बातपर झगड़ा है। उनमेंसे एक यतीबोला महाराज मैं कहताहूं कि मनके बशमें ज्ञानहै और मनके बशआत्मा है और मनके बशहैं और मायामोह पापपुण्य येभी सबमनसे हैं और जितनी बातहैं ये मनकीताके हैं और मनकी इच्छाहीसे सबहोता है सब्बल शरीर का मनराजा है और जितने अंग हैं सो मनके आधीनहैं मन उनसे जो काम लेताहै सो करते हैं दोनोंमेंसे एक यह जब कहचुका तब दूसरा बोला सुनो राजा निश्चय करके जो मैंकहूं। ज्ञान जोहै वही देहका राजा है और मनजोहै उसका ताबेदारहै जो कदाचित् मन अपना बसमें किया चाहेतो ज्ञानमें कुछ उसकाबश नहीं चलता मनके काबूमें हैं इन्द्रियां वह चाहेतो उनसे काम करवावे पर ज्ञान नहीं करने देता जब ज्ञान आता है तोमनको मारके निकालदेता है और पांचों इन्द्रियां भी ज्ञानके खड्गसे कटीजुई हैं। जबमनुष्यसेमन और इन्द्रीका विकार छूटा निर्भय ज्ञानसंसारके भयसे और योग सिद्धहुआ। दोनोंकी येबातें सुनकर राजाबोला कि तुमने जो कहा सोमैं सब समझा इसका उत्तर बिचार कर तुम्हें दूंगा कितनी एक देरकेबाद राजाने सोचकर कहा कि सुनो योगेश्वर चारवस्तु एक साथरही हैं अग्नि जल वायु और पृथ्वी इनचारों से शरीरहै मनइनका सरदार

है मनकी मतिसे जो ये चले तो घड़ी पहरमें नाश करदे पर उनपर ज्ञानबली है मनका विकार होने नहीं देता और जो ज्ञानी नरहैं उनकी काया बिनग्रने नहीं पाती वे इस संसार में अमर हैं जबतक योगी ज्ञान से मनको न जीते तबतक उसका योग सिद्धनहीं होता। ये बातें राजाकी योगियोंने सुनअपने मनका हठछोड़ दिया एक योगीने प्रसन्न होकर राजाको एक खड़ियाका ढेला देकर कहा कि इसमें ये गुणहैं जो इससे दिनको तुम लिखोगे सो रातको प्रत्यक्ष सब देखोगे यह कहकर योगी दोनों चलेगये राजाने अपनेजीमें अचरजमाना कि यहबात किसतरहसे सत्यहोगी। तब राजाने एकमन्दिरखाली करवाया और भड़वा लिपवा अकेले उस घरमें जा बिछौना बिछवा किवाड़ बन्दकर दीवार में मूरतें लिखने लगा महिले गणेशकी मूर्तिलिखी पीछे सरस्वती की फिर देवताओंकी इतने में आंभ हुई और एकबार जय जयशब्द होने लगा जो जो देवता लिखेथे सो साफ देखे देखतेही राजा मोहित होगया और जो जो बातें वे आपसमें कहतेथे राजा सबसुनता और देखता था लेकिनभयसे कुछ कह नहीं सक्ता था इतनेमें प्रभातहुआ और देवताओंने उठ उठ अपनी २ राहली और वे पुतली की पुतलियां रहगईं। फिर राजाने दूसरी तरफ़ दीवारमें हाथीघोड़े पालकी रथ और फौज यह सबकुछ लिखाफिर जबआस हुईतो सब वेप्रकट हुए राजा देख देख अपने जीमें प्रसन्न होता था और योगीको याद करता था कि मुझे यह पदार्थ देगया जब भोर हुआ तब वह फिर चित्रका चित्र रहगया फिरतीसरे दिनराजाने पहलेएक मृदंगो लिखा गन्धर्व लिखा मुनि अप्सरायें वैंची तालवीन रबाब तंबूरा सुरचंगसितार पिनाक बांसुरी करताल अलगूजा एक २ साजएक२ मूर्तिके हाथदेदे लिखीजब संध्यासमय हुआतब महिले एक शब्द हुआ और गन्धर्व संगीत शास्त्र की रीत से गानेलगे और सब साजवरोंके साथ मिलमिल बाजने

खने और वे अपुराये नृत्य करने लगीं और भाव बताने इसतरह से राजा इनसेभी आनन्दसे रातकाटताथा और दिनको यही लिखताथा इसीतरहसे वह रात दिनवहां व्यतीतकरताथौरअनवासमें नहींजाताथा रानियोंको जीमें चिन्ताहुई कि राजाकिसकारण महलमेंनहीं आताऔर सुदेमन्दिरमेंरहताहै इसकाक्या सबबहै हमभीचलकियाचाहिये। यों रानियां आपसमें मनाठान राजाको खोज लेनेको तैयारहुईं और उनमें से चार रानियां आपस में विचार करके कहने लगीं हमारा जीना भी धिक्कार है और जन्मभी हमारा धिक्कारहै कि राजा हमें छोड़ कर वहां बैठरहाहै और हमयहां विरहसे दुःखपातीहैं इतने दिनों तो हमने दुःख भरा परन्तु एक क्षणभर भी बिन प्रीतम नहीं रहाजाता यों विचारकर रातको सबारहे जिस मन्दिरमें राजाबैठा कौतुक देखरहा था येभीवहां जापहुंचीं। हाथजोड़ बिनतीकरकर कहनेलगीं कि महाराज हमसे क्या अपराध हुआ है जो आप हमारी सुध बिसार यहां बैठरहे हैं यहसुन राजाहंसकर बोलासुनों सुन्दरियो तुम्हें किसने सताया और किस कारण तुम यहां आईं क्या तुम्हें किसीने कुछ कहाहै कि तुम्हारा मुखमलीन होरहाहै। राजाकी यहबात सुनगिर निडरा के उन्होंने कहा स्वामीजो बातहै सो आपके सम्मुख हम प्रकाश करतीहैं। राजाने कहा अच्छाकहो तब उनमें से एकरानी जो चतुरथी सो बोली महाराज। हम अबला हैं और कभी कुछनहीं देखा सुखहीमें उमर गंवाई अब विरहमें काम निशदिनहम दहे है सो यह दुःखहम तुम्हारे सिवाय किससे कहैं इस बिधा से हमें बचाओ और आपने हम से बचन किया था कि हम तुम्हें मीठ न देंगे सो इतनी सुहृत से तुम ने बिसार दिया इतने दिनों तलक जिसतरह हुआ हमने वियोगभरा अब हममें बलनहीं। इसीतरह की बातें करते हुए सुबह होगई और वे सब मूर्तें फिर नक्काश दर वो दीवार होगई तब रानियों ने कहा कि महाराज।

जब से तुम ने मन्दिर छोड़ा है दुःख मे यही दशा सब बन-
वास की हो रही है और उन रानियों का पाप आप को
लगता है क्योंकि सब आपही के आसरे में हैं सुन२ ये बातें
राजा हंस कर बोला कि अब जी में तुम प्रसन्न हो जो तुम
कहो सो हम करें और जो मांगो सो हमदें रानियां खुश
होकर बोलीं महाराज हमारे मांग ने से जो आपदें तो
हम मांगें। राजाने कहा जो मांगोगी सो हम देंगे। रानि-
योंने कहा यह जो खड़िया आप के हाथ में है हमें दो।
सुनतेही राजाने आनन्द से हवाले की रानियोंने लेली और
छिपा रक्खी फिर सवार होके अपने २ महल में आईं और
राजा भी आकर दाखिल हुआ अपना राजकाज करने लगा
इतनी कथा कह रूपरेखा पुतली बोली कि सुनराजाभोज।
ऐसा पदार्थ देते राजाने विलम्ब न किया और ऐसी विद्या
तू कहांपावेगा और जो पावेगा तो तुझसेदी नहीं जायगी।
इस से इस आसन के बैठने का तू दावा छोड़दे मैं तुझ से
सच कहती हूं तू बोरा न जा और इसयोग तू नहीं। बह
भी सायत गुजरगई राजा उठकर वहां से महल में दाखि-
लहुआ तमामरात ऐशमें गुजरगई सुबह को उठस्नान पूजा
से फराकतकर फिर खासमकान में आया सिंहासन के पास
खड़ा हो चाहे कि पांव उठाकर धरे इस में॥

तारा उन्नीसवीं पुतली॥

खिल खिला कर हंसी और कहने लगी कि अय राजा
अज्ञानी बावले पहिले मेरी बातसुन पीछे और विचार कर
जो तू इस सिंहासन पर चरण रक्खेगा तो अपराधी होगा
मुझ पर पांव दिया था राजा विक्रमादित्य को तू ने अपने
जीमें क्या विचारा है जो यह इरादः करके आया है मेरा
हृदय जो है कमल है और मधुकर वीर विक्रमादित्य था तू
गोबर का कीड़ा मुझ पर पांव किस तरह रक्खेगा राजा
बोला सुनबाला। तूमे मुझे गोबर का कीड़ा क्योंकर जाना
पुतली बोली सुनराजा एकदिन की कथा एक ब्राह्मण सासु-

द्रिक नाम सागुद्रक पढ़ा हुआ बनमें चला जाता था उसके बराबर दुनियां में कोई और पण्डित न था। अनेक २ भेद विद्याके जानता था। उसने दरियाफ्त किया कि इसराहसे कोई आदमी गया है जब उसके निशान पांवके देखे तो उस में ऊर्द्धरेखा और कमल का चिन्ह नजर आया। तब उसने अपने जी में विचारा कि कोई राजा नंगे पांव इस राह से गुजरा है उस को देखा चाहिये कि कहां गया है यह विचार कर उन पांवों के निशान देखता हुआ जब कोसभर पर जा पहुंचा तो उस बनमें देखा कि एक आदमी दरख्त से लड़कियां तोड़कर गट्ठड़ बांध रहा है। ब्राह्मण उसके पास जाकर खड़ा हुआ और पूछा कि तू यहां इस बन में कब से आया है वह बोला कि महाराज मैं दो घड़ीरात रहे से आया हूं तब ब्राह्मण ने पूछा कि तू ने किसी को इस राहसे जाते देखा है कि नहीं उसने कहा कि मैं जिस समय से आया हूं इस बन में मनुष्य का तो बिलकुल है कोई पक्षी भी नजर नहीं आया। फिर उस ब्राह्मण ने कहा देखूं तेरा पांव पांव उसने आगे रखदिया और ब्राह्मण ने सब चिन्ह देख देख कर अपने जीमें सोचने लगा कि यह सबब क्या है कि सब लक्षण इस में राजा के हैं और यह इतना दुखी क्यों है कि फिर इसे पूछा कि कितने दिनों से तू यह काम करता है उसने कहा जबसे मैंने होश सम्हाला है तबसे यही उद्यम कर के खाता हूं और राजा वीर विक्रमादित्यके नगरमें रहता हूं। ब्राह्मणने पूछा तू बहुत दुख पाता है वह बोला महाराज यह भगवान की इच्छा है कि किसीको हाथीपर चढ़ावे और किसीको पैदल फिरावे किसीको धनदौलत बिनमांगे दे और किसीको भीखमांगे टुकड़ा भी न मिले कोई सुखमें चैन करता है कोई दुखमें बेहाल रहा है भगवानकी गतिजानी नहींजाती कौन रूप किसमें रचा है और जो कर्ममें लिखदिया है सो मनुष्य को भुगतना होता है दुखसुख उसके हाथ है इसमें किसी का कुछ जोर नहीं चलता। उससे ये बातें सुन और बड़

चिन्ह देख ब्राह्मण ने अपने जीमें अचरज माना कहा कि मैंने बड़ी मिहनतसे विद्यापढ़ीथी सो मेरा श्रमट्टागया और सामुद्रिकमें जो बिधिलिखी है पुरुषके लक्षण देखने की सो झूठ ठहरी और उमर हमने अपनी बेफ़ायदः गंवाई यह कह मनमें ग़मीनहो विचार करता राजा के पासचला कि जाकर उसका भी पांवदेखूं कि उसमें भी निशानहैं यानहीं और जोलक्षण पोथीप्रमाण न मिलेंगा तो सब पोथियां फाड़जला संन्यासीहो याचा को चला जाऊंगा फिरसंसारसे कुछअर्थ न रक्खूंगा क्योंकि इतनी बहुतकी मिहनत झूठकर्मके पीछे गंवाईतो आगे संसार में क्या फल मिलेगा उससे भगवत् भजन करना अच्छा है इसलिये कि स्वार्थनहोतो परमार्थ तोहोगा। योंविचार करता राजाके पास जापहुंचा राजाको अशीसदी राजा ने दण्डवत् करकहा ब्राह्मण देवता। तुम इतने मनमलीन क्योंहो क्यादुख मनमेंतुम्हारे उपजाहै मुझसे कहो ब्राह्मण ने कहा राजा तू पहिले अपनाचरण मुझेदिखला जो मेरे चित्तका संदेहजाय। राजाने अपना पांवदिखलाया और उसने कुछ लक्षण उस में न पाया। यह देख शीस नवाय चुपहोरहा और अपने जीमें कहने लगा कि अब पोथियां सब जला संसारको त्याग वैरागसे देशर फिरिये यह तो अपनेजीमें विचारकररहा था राजा नेकहा पण्डित तू क्या क्रोधकर शिरडुलाय पछताय चुपहोरहा है अपने मनकी बात मुझसे कह कि तूने अपने मनमें क्या ठानी है ब्राह्मण बोला सुनो महाराज मेरे पास सामुद्रिक पोथीहै बारह वर्ष मैंने पढ़कर बादकी है सो मिहनत मेरी निष्फलगई इसवास्ते संसार से जीमेरा उदास हुआ राजाने हंसकर कहा कि यह तुमने प्रत्यक्ष क्योंकरदेखा वह बोला महाराज मैंने बड़ा दुखदेखा कि उसके पांवमें ऊर्द्धरेखा और कमलथा और उसकी रोजी यहथी कि लकड़ी बनसेलाता था और बेचकररखता था यहदेखकर मैंने तेरा जो पांव देखा तो कोई अच्छा लक्षण न पाया और तू राज सारे

नगरका करताहै इससे मेरेजीको क्रोध ऊआ है ग्रन्थजला देश त्यागकरूंगा राजाने कहा ब्राह्मण सुन मैं तुझे बुझाकर कहता हूं और ग्रन्थ साध कर तुझे दिखलाता हूं तब तेरा जो पतियावेगा किसी के लक्षण गुप्तहोते हैं और किसीके प्रगटब्राह्मणने कहा मैं किसतरहसे जानूं राजा ने छूरी मंगवा तलुए की खालचीर लक्षण दिखला दिये ब्राह्मणने देखा कि कमल और ऊर्द्धरेखा है देखकर उसके जीको संतोषऊआ राजा ने कहा कि ऐ विप्र। ऐसी विद्यापढ़ी ऊई किस काम आती है कि जिसके सब भेदमालूम नहीं इसतरहके लक्षण देख ब्राह्मण अवाकऊआफिर राजा को अशीषदे अपने घरको गया। इतना क्लिष्ठकह पुतली बोली कि सुनराजा भोज। कब इस योग तूऊआ जो सिंहासन पर बैठनेकी इच्छा करताहै और जोइतना साहसकरे सोइससिंहासन परबैठे नाम धर्मयश आदमी के जानेसे नहींजाता जैसाफूल नहीं रहता और उसकी सुगंध अतरमें रहजाती है। यह सुनकर राजा को कुछ चेतऊआ कहने लगा कि यह संसार थिर नहीं जैसीतर वरकी छांहहै वैसीही दुनियांकी गतिहै जिसतरह चांद सूर्य आते जाते हैं उसी तरह मनुष्यका जीना मरना है जैसे कोई सपने में कौतुक देखता है वैसाही जगका रूप नजर आता है और मनुष्य देह धरके अनेक दुःख भोग करते हैं पर सुख यह है जो हरिभजन हो। इतना ज्ञान राजा अपने जीमें विचार वहां से उठ अपने मन्दिर मे गया रात जों तों काटी प्रभात होतेही फिर वहां आन मौजूद ऊआ पुतलियों से पूछा कि अब मैं क्या करूं तुम मुझसे कहो तब॥

चन्द्रज्योति बीसवीं पुतली बोली

महाराज मैं समझा कर कथा आपके आगे कहतीहूं एक दिन राजाबीर विक्रमादित्य ने खुशहोकर रासमण्डली के प्रधान को आज्ञादी यह कातिक महीना धर्म

महीना है इसमें कुछ हरिका भजन मनलगाकर किया चाहिये शरदपूनोंका ठाकुरकी रासलीला करो प्रधान ने राजाकी आज्ञापाय देशदेशके राजा और पण्डितोंको नौते भेज बुलाया और जितने नगरके योगी थे उनको भी खबर दे तलबकिया और जितने देवताथे उनको भी मंचों से आवाहन करके बिठलाया। रासहोनेलगा चारोंओर से जय जय कार शब्द होनेलगा और राजा एक २ का शिष्टाचार मनुहार कर कर फूलमाल ठाकुरकी प्रसादी देनेलगा राजा ने देखा सब देवाता आये पर चन्द्रमा नहींआये। यह अपने जीमें बिचार बैतालपर सवार हो चन्द्रलोक को गया वहां जा सन्मुख हो। दण्डवत्की और हाथजोड़कर कहा स्वामी मेरा क्या अपराध है जो आप ने कृपा न की और सबने मेरेभाग पर कृपाकी है तुम्हारे बिन मेराकाम अधूराहै अब दयाकीजिये और काममेरा सुधारिये। आपको धर्महोगा मुझे संसारमें यश मिलेगा जो कदाचित् आप इसमें बिलम्ब कीजियेगा तो मैं हत्या दूंगा तब चन्द्रमा ने हंसकर कोमल मधुर बचन से कहा राजा मैं तुझसे सत्यकर कहताहूं तू अपने जी में उदास न हो मेरेजानेसे संसारमें अन्धकार होजायगा इसलिये मेरा जाना नहींबनताहै तुझे अभिलाषाथी मेरेदर्शन कीसो तेरीइच्छापूजी तेराकामसुफल होगा तूजा अपनेनगरमेंजो कामतूने आरंभकियाहै सोपूर्णकर। इसतरहसे राजाको समझा अस्तुत दे बिदाकिया राजाने शिर चढ़ा लेलिया और दण्डवत्कर अपने नगरको चला रास्तामें देखा कि यमके दो दूत एक ब्राह्मणका प्राणलिये जाते हैं राजा ने देवदृष्टि से जाना और उस ब्राह्मण के प्राण नेभी राजा को देख दूरसेकहा कि इसराजासे भेटहै राजाने उसब्राह्मणकी आवाज सुनकर कहा कि भाई तुमकौनहो। तब उनदोनोंनेसमझाकर राजासेकहा कि हमयमके भेजे उज्जैन नगरी गयेथे ब्राह्मणका जी लियें अपने स्वामीके पासजाते हैं राजाने उनसेकहा पहले इसब्राह्मणको तुम हमेंदिखा

देा पीछे अपनेकामकोजाओ वे दूत राजाके साथखेनगर में गये जहां उसब्राह्मणकी देहपड़ीथी वहांदिखाया राजा देखतेही उसब्राह्मण का शिर निकुड़ा अपने जी में कहने लगा कि यह तेा हमारा पुरोहित है राजाने दूतों को बातोंमें लगा नजरबचा वह अमृत उसकेमुहमेंडालदिया ब्राह्मण राम का नाम ले उठ खड़ाहुआ राजा ने प्रणाम किया ब्राह्मणने अशीस दी दूतोंमे हाथ जोड़ बिनती कर कहा यह जोदान मैंने तुममे पाया यह देखकर दूतों ने अपने जीमें अचंभाकिया कि यह राजाने क्याकिया हम जाकर क्या जवाबदेंगे यह बिचार करतेहुये दूतोंने यमके पास जा सब राहकी व्यवस्था कही। यमसुनकर चुपहेा रहा और राजा ब्राह्मणका हाथ पकड़कर अपने मन्दिर को लाय बहुत सा दान दे बिदाकिया। यह कथा कह पुतलीबोली कि अय राजाभोज ऐसा पुरुषार्थकरसकेतेा इस आसनपर बैठनहीं तेा इसबिखियान मे दरगुजर इस तरह वहभी लगगई राजा उठ वहांसे अपने मन्दिर में आया रात जितिमतरहसे काटी सुबहहेातेहीं तैयार हेा फिर सिंहासन के पास जा खड़ाहुआ चाहे कि पांव धरे तब

अनुरोधवती इक्कीसवीं पुतली बोली॥

बोली राजा क्या तू अपनी बड़ाई करता है और इस अनीतिकी कौनसी बड़ाई है पहले मुझसे बातसुन ले पीछे इसपर बैठ माधव नाम एकब्राह्मण था बड़ा गुणी उसकी तारीफनहींहेासकती जेा मैंकरूंयोगीहे।कर बहुतसामग्री में फिर आया कहीं ठहरकर रहने न पाया मानेाकाम का अवतारथा स्त्रियां देखतेही उसे मेाहित हेा जातीथीं अयराजा। वह सब विद्या पढ़ाथा अति चतुर था वैसा मर्त्यलेाक में मनुष्य कम पैदाहेाता है जिस राजा की सेवा करनेजाता वहां दिनदश एक उसका आदरहेाता और जब वह अपना गुण प्रकाश करता तब वह राजा उसे देशनिकालादेता। इसतरहसे देशदेश भटकता दुख

पाता कामानगरी में आनपञ्चंचा कामसेन वहांका राजा था उसकेयहां कामकन्दला एकपातुरथी वह मानोउर्वशी का अवतारथी गन्धर्व विद्या में अति चतुरथी वह राजा की सभामें नृत्यकररही थी माधवभी उसी राजाके द्वार परजा पञ्चंचा। द्वारपालोंसे कहाराजाको जाकर हमारा समाचार कहो आपके दर्शन को एक ब्राह्मण आया है डिञ्चड़ीदार उसकीबातसुनी अनसुनी करगये वह द्वारा मांदावहीं बैठगया ज्यों ज्यों वहां से मृदंग की आवाज़ और गानेकी सदा आतीथी त्योंत्यों यह शिरधुनकर कहता था कि राजाभी मूर्ख है और उसकी सभा भी कूढ़ है जो विचार नहीं करती यही बात पांच सात दफ़ा कही द्वारपालखफ़ाहो ब्राह्मण देख राजा के डरसे कुछ कहतो न सके पर राजाके सन्मुखजा हाथजोड़ खड़ेञ्चए महाराज ने जो उनकी तरफ़ देखा उन्होंने बिनती कर कहा एक ब्राह्मण विदेशी दुर्बल द्वारपर आनबैठा है शिर डुला २ कर कहताहै राजा की सभाकेलोग अतिमूर्ख हैं जो गुण विचार नहीं करते तब राजा ने उन द्वारपालों से कहा जाकर उससे पूछो कि उनको मूर्खतूने किसलिये कहा। उन्होंने राजाकी आज्ञापाय पौरपर आय ब्राह्मणसे पूछा महाराजने आज्ञाकीहै उनके गुणमें दोष क्याहै वह तुम बताओ तोहम तुम्हारीबात सचजानैं। उसनेकहा बारह आदमी चारचार तीनतरफ़में खड़ेञ्चए जो मृदंग बजाते हैं तिनमें पूर्व मुखवालोंमें एक मृदंगीका अंगूठा नहीं है इससे समपर थाप इसकी पड़ती है इससे मैंने सबको कूढ़ कहाहै न मानोतो तुम जाकरदेखलो। वे दौड़ेञ्चए राजा के पास आए सबबातें सुनाईं राजा ने पूर्वरुख के चारों मृदंगियोंको बुला एक २ का हाथदेखा तो उन्होंमें एक का अंगूठा मोमका बनाञ्चआथा यह तमाशा राजा देख प्रसन्नञ्चआ और उस ब्राह्मणको बुलाया वह जाकर सन्मुख ञ्चआ राजा ने दण्डवत् की और उसने आशीस दी फिर शिष्टाचार कर गद्दीपर बिठाया जैसे वस्त्र आभूषण आप

पहनेथे वैसेही मंगा ब्राह्मणको पहनाये और कामकन्दलाको बुला आज्ञाकी कि यह महागुणी है इसके आगे अपना गुण तुम प्रकाश करो जिसमें यह प्रसन्न होवे। काम कन्दला राजाकी आज्ञापाय अपना गुण जाहिर करनेलगी संगीत नृत्यका आरंभकिया। गोमे रंगभरेहुए शिरपरधर सुंहसे मोती पिरोतीहुई हाथोंसेवट्टे उछालतीहुई नाचनेलगी सबसाज सुर मिलाये हुए नाचतीथी इसमें फूलोंकी और अतरकीखुशबू पाकरएकभौंरा उड़ताहुआ आकरउसकी कुचकी भिटनीपर बैठा और डंकमारा। उसके बदनमेंपीर हुई तब विचारा जो कुछ भी हरकत करती हूं तो ताल भंगहोताहै और मेरेगुणकी हंसीहोगी इतना जोमें शोच भण्डार विद्याकर सासरोक कुचकी राह निकाली पवन लगतेही वह भौंरा उड़गया माधव इस गुणको देखतेही मोहितहोबोला धन्यहैतुझे और तेरेकरतबको। यहकहप्रसन्न होकर वस्त्र और आभूषण जो राजा ने दियेथे सब उतार दिये। यहदेखराजा और मंत्रीआपसमें कहनेलगे कि देखो इस ब्राह्मणने क्या मूर्खताईकीहै इसवेश्याके ये कपड़े और तमाम जवाहिर एक आनमें बख़्श दिया। यह जातका भिखारी यहां हमारे आगे मख़ावत दिखाता है राजाने ख़फ़ाहो ब्राह्मणसे पूछा कि तू इसके किसगुण पर रीझा वहमेरे आगे बयानकर ब्राह्मण ने कहा सुन राजा तू भी मूर्खहै और तेरी सभाभी कूढ़ है तेरी सभा में यह ऐसा गुण प्रकाश करे और कोई गुणका विचार न करे इसके कुचपर भौंरा आन बैठाथा सो इसने अपनी सासरोक कुचकी राह निकाल उसे उड़ादिया। यह कामदेख सब कुछ मैंने इसे बख़्शदिया माधव ने जब यह बात कही राजालज्जित होरहगया और कुछ राजासे न बनआया कहा इसी समय मेरे नगरसे निकल जा जो सुनूंगा कि तू इस नगरमें है तो बंधवाकर दरयामें डुबवादूंगा तब माधवने कहा महाराज मुझसे ऐसा क्या अपराध हुआ है जो आप मुझे देश निकाला देतेहैं। राजाने कहा मैंने

जो तुझे दिया था सो तूने मेरेही आगे दान करदिया क्या मेरे पास देनेको कुछ न था जो तूने दिया सुनकर माधव मनमलीनहो राजसभा से निकल बाहर जा एक दरख्त के नीचे व्याकुल खड़ा हो अपने जीमें कहने लगा कि माता बेटेको विष दे और पिता पुत्रको बेचे और राजा सर्वस्व ले तो कोई शरण किसकी ले फिर कहने लगा कि राजा ने तो मुझे निकाला अबमैं कहांरहूं यों अनेक अनेक भांति की चिन्ता कर कामकन्दलाका नाम लेले रोता था और इधर कामकन्दला भी राजा से बहाना कर विदा हुई और एक आदमी दौड़ाया कि वह ब्राह्मण जाने न पावे उसेले जाकर मेरेमकानमें बिठा। वह आदमीगया और ब्राह्मणको लेजाकर उसके मन्दिर में बिठाया इधरसेयह भी तुर्त जापहुंची दोनों आपस में बैठकर प्रेम की बातें करनेलगे तब उसब्राह्मणनेकहासुझे राजाने देशनिकाला दिया है और तूने अपने घरमें बुला बिठलाया जोयह बात राजासुनेगा मेरा प्राण जायगा तोमैं दुःखसे छूटूंगा पर तुम्हेंभी राजा अति कष्ट देगा इससे ऐसी बात करनी उचित नहीं है कि अपनी जानजाय और जग हंसाईहो प्रेम जोहै सो दुःख की खान है जिसने प्रेमके पैंड़ेमे पांव दिया उसने कभी सुख न पाया येबातें माधव की सुनकर कामकन्दलाने कहा कि अबतोमैं इसपंथमें आई जो कुछ करेसो भगवान इतना कहसब साजबाज मंगवा अपनी विद्या जाहिर करने लगी जितनी विद्या उसे याद थी उतनी सब प्रकाश कर चुकी तब माधव ने उन्हीं यंत्रों के साथ अपना भी गुण सब करदिखाया जब रात थोड़ी सी रहगई तब कामकन्दलाने कहा कि कि तुमने श्रम बहुत कियाचलकर आराम कीजियेयहकह माधवको रङ्गमहल में लेगई और जितनी खुश थी सबकीसब गजबगादोनों केजीमें राजाकी बातयाद आई सुधबुध जातीरही घबरा कर माधवने कहा सुनसुन्दरी। राततो आनन्दसे बिताई और अब मैं यहां रहूंगा तो दोनों के प्राण जायंगे इससे

कुछयत्न कीजिये जिसमें निर्द्वन्द आनन्दसे रहिये मैंनेएक बात जीमें विचारी है कि अब मैं यहांसे जाऊं और कुछ उपाय कर फिरआ तुझे भी यहां से लेजाऊं तू अपनाजी मजबूतरख मैं जरूर आकर तुझसे मिलूंगा यह बचन मैं तुझेदेकर जाताहूं इतनी बात सुनतेही वहतो मूर्छा खा गिरपड़ी और माधवने उठकरराहली वहां से निकल के बनबन फिरनेलगा। इधर इसे भी सखियों ने गुलाब का नीर छिड़ककर उठाया जब कुछ होश आया तब वहभी माधव माधव पुकारने लगी खानापीना त्यागकिया बहुतेरा सखियांसमझातीथीं उसकेजीमें एक न आतीथी जों जों गुलाब कपूरचंदन लालाकर लगातीथीं तोंतों चौगुनी दाहबढ़ती थी किसी तरहसे शीतलता न होती थी जब कोई माधवका नामगुण सुनाता था तबउसे जराआराम आताथा। उधर माधवभी भटक२ अपने मनमें विचारने लगा अब संसारमें कौन है जिसकेनिकट जाइये जोहमारादुःख दूरकरे इसमें उसे यादआया कि सुनते हैं राजा बिक्रमादित्य पर दुःखनिवारण है भला उसकेपास जाइये और देखिये कि लोग सच कहते हैं याझूठ यह बिचार कर उज्जैननगरी को चलागया वहां लोगों से पूछा यहां राजा से भेंट अधीन की क्योंकर होती है तब एक उस नगरका बासी बोला गोदावरी नदीके किनारे शिवका मठहै उसमठमें राजा शिवके दर्शनको नितआताहै वहां तूजाजो तेरा मनोरथहै सोतूकह तेरीकामनापूरीहोगी। यहसुनकर वहवहां गया और उसमठके द्वारे की चौखट परलिखा कि एकब्राह्मणविदेशी अतिदुखीबिरहसेव्याकुल तुम्हारेनगरमें आयाहूं यहसुनके कि राजापर दुख निवारणहैऔरजोयहदुःखमेराजायगातोमैंअपनाप्राणरखूंगा नहींतोतीसरेदिन गोदावरीमें प्राणत्यागकरूंगा। यह मुद्रर्रजीमेंमैंने ठहराईहै इसमें तुम राजाहो और सदागो ब्राह्मणकी रक्षा करते आये हो और अब भी करोगे मैंने अपने मनकी बात सब प्रकाश करदी है। इतनी बातें

कहपुतली ने राजासेजसे कहा कि सुन राजा बीरविक्रमादित्यका यह नेमथा कि अन्न दुखी वस्त्र दुखी द्रव्यदुखी भूमिदुखी विरहदुखी और किसी तरह का दुखी नगर में आता राजा सुनकर जबतक उसका दुख न मिटादेता तबतक अन्नजलका तो क्याजिक्रहै दांतूनभी न चीरताथा सबेरे राजा जब महादेवके दर्शनको गया दर्शनकर परिक्रमा करनेलगा राजाऊंचीदृष्टिकरदेखेतो कोईदुखीअपने दुखकी अवस्थालिखगया है राजाने सबबांच महादेव को दण्डवत् कर मन्दिर में आय आज्ञा की कि माधव नाम ब्राह्मणहमारे नगरमें आयाहै जोकोई उसेढूंढ़लावैतोसुहमांगाद्रव्यपावे यहबातसुन लोगनगरमें ढूंढ़नेकोनिकले घाटबाट टोलासुहल्लाबागबगीचासबनगर ढूंढ़फिरे और कहीं ठिकाना उसका न पाया तब राजाने एक दूतीबुलाकर आज्ञाकी कि जोतू उसे ढूंढ़लावै सुहमांगा धनपावे उसने कहा महाराज। यह क्या कठिन बात है मैं अभी जाकर ढूंढ़लातीहूं। यह कह उसने वहांसे सीधी राह मन्दिरकोली जहां उसनेलिखाथा जाकर मन्दिरके पास बैठरही सांझ समय वहभी भटकता हुआ आनपहुंचा। इन्नेउसेदेख मनमें विचारा कि होनहोवह बिरही यही है किसलिये कि सुहपीला आंसूजारी तन क्षीण मन मलीनहो रहा है यह तो यह बिचार कर रहीथी कि वह ब्राह्मण वहां आनबैठा और एकबार हाय कामकन्दला हाय कामकन्दला पुकार उठा चट इसने जा उसका हाथ पकड़लिया और कहा मैंतेरे ढूंढ़नेके लिये राजाकीआज्ञापाके आईहूंतू उठमेरेसाथ जल्दी चल तेरा मनोरथ पूरा होगा तेरेदुखसे राजा निपट दुखी है। यह सुनतेही उसके साथ होली और उसे लियेहुये वह राजा के सन्मुख पहुंचकर कहनेलगी महाराज। यह वही वियोगीहै जिसकेलिये आपने यहदुःख पायाहै तब राजा ने उस ब्राह्मणसे पूछा कि तू किसके वियोगमें ऐसा व्याकुल होरहा है मेरेआगेकह तब उसने एक आहभरकर कहा

महाराज कमाकन्दला के बियोगमें मेरीयह गतिहुई है वह राजा काममेनके पास है तू धर्मात्मा है और मैं तेरे पासआया हूं तू मुझे उसको दिलादे तो जी दानदे यह सुनतेही राजा हंसकर बोला सुनब्राह्मण वहवेश्याहै तूने उसके प्रेममें अपना धर्मकर्म छोड़ा यहतुझे उचित नहीं है माधवने कहा महाराज प्रेम का पन्थ निराला है जो नर प्रेम करते हैं सो अपना तनमन धर्म कर्म सब सम्पूर्ण करते हैं प्रेमकी अकथ कहानी है मुझसे कहीनहीजाती राजाने ये बातेंसुनीं और उसे अपने साथले मंदिर में गया और सब रानियोंको आज्ञाकी तुम बनाव सिंगारकरके आओ रानियां सब सिंगारकर आईं और उस ब्राह्मणसे राजानेकहा जिसे तुम्हारी इच्छा हो उसे इन रानियोमें सेले अपने मनका दुख बिसारो और सुखचैन करो उनने जवाब दिया महाराज। मैं आपके आगे सत्य कहूं हूं कि मेरीआंखोमें वहबसरहीहै इसलिये मेरीदृष्टिमें कुछनहीं आताचातककी तृष्णास्वातीके बूंदसेबुझतीहै औरजलपर उसे रुचिनहींहोती ऐसी प्रेमकी दृढ़ता ब्राह्मण की देख राजाने अपने मनमें बिचारा कि इसे साथलेजाकरकाम-कन्दला को दिलादूं उसके बिना इसके मनको थिरता न होगी। यहबात राजाने बिचारब्राह्मणसे कहादेवता तुम स्नानकर पूजाकर कुछखालो तबमैंभी अपने लोगोंकोबुला तुम्हें साथलेचलूं और उसेदिलादूं तुम अपनेजीमें किसी बात की चिन्ता मतकरो मैंने तुम से यह बचन किया। ब्राह्मण अपने खानेपीनेमें लगा राजाने प्रधानको बुलाकर आज्ञा की कि मेरे डेरे नगर के बाहर निकलें चार घड़ी के बाद कामा नगरी की तरफमेरा कूचहै सब लोगों को खबर दो। इसमें कितनी एकदेरके पीछे राजा तैयार हो ब्राह्मण को साथ ले कूचकर डेरों में जादाखिल हुआ और जितने राजाके नौकरथे सब रकाबमें हाजिरथे। राजा वहां से कूच दरकूच जाता था कितनी एक मंजिलों के बाद कामा नगरी से दसकोस इधर डेरा किया और उस राजा को पत्र लिखा

किहम इसलिये आये हैं कि तुम्हारे यहां जो काम कन्दला पातुर है उसे भेजदो नहीं हमसे युद्धकरने का सामान करो यह पत्रलिख एक दूतके हाथराजा के पास भेज दिया राजा को खबर हुई कि एक दूत राजाबीर विक्रमादित्य का खत लेकर आया है यह सुनतेही राजा ने उसे सन्मुख बुलाया उसने जा जुहार कर खतराजा के हाथ दिया राजा ने उस चिट्ठी को बांच कर कहा कि अच्छा कहो अपने राजा से चलेआवैं हम युद्धकरने पर तैयार हैं। दूतनेआराजासेकहा महाराज वह लड़नेपर तैयारहैं राजाने भी हुक्म अपनेलोगों को दिया कि हमारा भी दल तैयारहो फिर राजा के जीमें आया कि जिसके वास्ते हम आये हैं उसकी भी प्रीति की परीक्षा लिया चाहिये इसतरह जी में ठहरा बैद का स्वांग बन राजा कामानगरी में गया लोगों से मकान कामकन्दला का पूछ दरवाजे परजाबैद हकीमकर पुकारा। आवाज सुनतेही एकदासी बाहर निकल आई पूछा कि तुम बैदहो तो हमारी नाइका का कुछ इलाज करो जो वह अच्छी होगी तो तुम्हें बहुत से रुपये मिलेंगे ये बातें कर दासी उसे साथ लेकर कामकंदला के पास गई राजाने देखा कि निर्जीव पड़ी है। राजा ने उसकी नाड़ी देख कर कहा कि इसके तईं रोग और कुछ नहीं है प्रीतमका वियोगहै जिससे इसकी यह गति बनी है। यह बात सुन कामकंदला ने आंखें खोल उस की तरफ देखा और कहा कि इसका कुछ इलाज तुम्हारे पास होतो करो तब उसने कहा कि इसका इलाज तो था पर इस समय हमें कुछ कहते बननहीं आता तब वहबोली तुम्हारे पासक्या इलाज था वह बताओ राजाने कहा माधव नाम एक ब्राह्मण था उसे हमने उज्जैन नगरी में विरह वियोगी अति रागी देखा सो वह दुःख पाय मर-गया। यह सुनतेही हाय कर उस ने भी अपना प्राण छोड़ दिया जितनी दासी दास उसके घरके थे यह दशा देख शिर पीट २ रोने लगे तब इनने कहा कि तुम कुछ चिंता अपने मनमें मतकरो इसेमूर्छा आईहै कितनी देरमें सुध आवेगी

तुमदूसकी चौकसी करते रहो मैं जाकर अपने घरसे औषध लाऊं। राजा उलटा फिर अपने दलमें आया और माधव के आगे उसके मरने की खबर कही सुनतेही एक आहके साथ उसकी भी जान निकल गई। यह देख राजा अपने जीमें पछ ताकर विचार करनेलगा कि जिसकेवास्ते इतनी सेना सजा के पर भूमिमें आये और उसे दूसतरह से खोदिया येदोहत्या मेरे परहुई अब अपनाभी प्राणरखना उचित नहीं यह बात जीमें ठहरा चंदन वगैरहसा मंगवा चिता बनवा राजा जीता जलने को तैयार हुआ। दीवान प्रधान ने कितनामना किया न माना जो चाहे कि उस चितामें बैठ आग लगावे कि बैतालने आ हाथ पकड़ लिया और कहा कि राजा तू अपना जी क्यों देता है तब इसने कहा कि दो की जान मैंने जानके खोई अब मेरा भी जीना संसार में उचित नहीं इसबदनामी के जीने से मरना उत्तम है बैताल ने कहा कि राजा मैं अमृत लादेता हूं तू दोनों को जिला दे यह कह जल्द बैताल पातालसे अमृत लेआया उस ब्राह्मणपर छिड़कावह जी उठा फिर लेजाकर कामकन्दला पर छिड़का वह भी जी उठी और माधव माधव लगी पुकारने राजा की सूरत देख कर कहा तुम कौन हो और कहां से आये हो मुझ से कहो। तब राजा ने कहा हम वीर विक्रमादित्य हैं माधव का विरह दूर करने के लिये उज्जैन नगरी से यहां आये हैं तू खातिर जमा रख कि तुझे हम माधव से मिलादेंगे। यह सुनतेही वह उठ राजा के पांव पर गिर पड़ी कि राजा यह तुम जीदान दोगे और जैसा तुम्हारा यश सुनती थी सो दृष्टि में आया इतनी बात कह राजा वहांसे फिर अपने लश्कर में आये दूसरे दिन अपनी फ़ौज ले कामानगरी पर चढ़धाये वहांके राजा से युद्ध किया उस राजाने हारमानी और क़बूल किया कि हम काम कंदला को भेजदेंगे और यह जो हमने युद्धकिया सो आपके दर्शनके वास्ते और इसलिये कि किसी तरह हमारे नगर में आपका चरण पड़े। आगे राजा से मुलाक़ात करके वह राजा अपने मन्दिर में

लेगया बहुत भेट आगे धर काम कंदला को बुला राजा के आगे खड़ाकिया और उसनेभी माधवको बुला कामकंदला का हाथ पकड़ा हवाले किया। फिर वहांसे कूचकर अपने नगर में आये माधव को बहुत धन दौलत दे बिदा किया इतनी बातें कह अनुरोधवती पुतली बोली कि ऐ राजा भोज इतनी सामर्थ्य और ऐसा साहस जो तुझमें हो तो सिंहासनपर चरणधर नहीं तो पतितहो नरक भोगकरेगा। बहुभी दिन राजा का टल गया दूसरे दिन वह फिर आन मौजूद हुआ तब॥

अनूपरेखा बाईसवीं पुतली॥

बोली कि राजा। तू अपने मनकी चिन्ता छोड़दे मैं जो कथा कहतीहूं वह सुन। एक दिन राजा बीरविक्रमादित्य सभामें बैठाथा प्रधान से पूछा कि मनुष्य बुद्धि अपने कर्मसे पातेहैं या उनके माता पिता सिखाते हैं सुनकर मंत्री बोला कि महाराज। यह नर पूर्व जन्म जैसाकर्म करैहै तैसा विधाता उसके कर्म में लिख देहै तिसी प्रमाण बुद्धि होती है माता पिताके सिखाये बुद्धि होती नहीं कर्म लिखाही फल पाता है आदमी आदमी को क्या सिखावे और जो सीखे से बुद्धि होतो सभी पण्डित हों इससे महाराज कर्म के लिखे बिना विद्या होती नहीं करोड़ यत्न कोई करे कर्मकी रेख मेटे मिटती नहीं राजाने कहा ऐदीवान तूने यह क्या कहा संसारमें यह तो जाहिर देखते हैं कि जन्म लेतेही लड़का माता पिता से जो सुनताहै और जो देखता है उसी व्यवहार से चलता है इसमें कर्म को लिखा क्याहै यह सिखाये से सीखता है और जैसी संगत में बैठता है तैसीही उसकी बुद्धि होती है इतनी बात सुन मंत्री बोला कि धर्मावतार आपकी बराबरी हम नहीं करसक्ते यह अपनेमनमें विचार के तुम समझो कि कर्म का लिखाही फल मिलता है। तब राजाने कहा अच्छा इसबात की परीक्षा लेनी चाहिये तब राजाने एक महावनमें मन्दिर बनवाया कि जहां मनुष्यकी आवाजभी न जाय। एक अपने बेटे को पैदा होतेही उस

मन्दिरमें भिजवादिया और उसकेसाथ एकदाई ऐसी करदी कि आंखों अंधी कानों सेबहरी मुहसे गूंगी। वही उसे दूध पिलातीथी और परवरिश करती थी फिर इसीतरह से एक दीवान के बेटेको एक ब्राह्मण के पुचको एक कोतवालके पुत्र को जन्मतेही गूंगी बहरी अंधी दाइयां दे उसी मन्दिर में भिजवादिया दिनबदिन बेबढ़नेलगे और ऐसी गाढ़ी चौकी उस मन्दिरके दो २ कोस गिर्दमें बैठादी कि मनुष्य के जाने की तो क्या सामर्थ्यथी ढोलनकारे की आवाज न जाती थी इसतरहसे बारहवर्ष जब बीत गये तब एक दिन ब्राह्मणीने अपने स्वामी से कहा कि एक युग पूरा होचुका और मैंने पुत्र का मुंह नहीं देखा कदाचित् जो निकलजाय तो मन देखनेकी अभिलाषा रहजाय इससे तुम अब राजाके निकट जाकर कहो कि महाराज बारहवर्ष बीतचुके मैंने बेटे का मुंह नहीं देखा अब मेरे जीमें है कि पुत्रको घर सोंप कर दसही हो तपस्या करूं। यह ब्राह्मणी की बात सुन ब्राह्मण तैयार हो राजा के पास गया राजाने देखतेही दण्डवत् की और उसनेभी आशीस दी राजा बोला तुम आनन्दमंगल से हो ब्राह्मणनेकहा कि महाराज आपकी कृपासे सब आनन्द मंगल है पर मैं एक कामना कर आपके पास आया हूं। यह सुनकर राजाने कहा कि जो तुम्हारा कामहै सो कहो। तब उस ब्राह्मण ने अपना बह अहवाल सब कहा सुनतेही राजाने प्रधान को बुला आज्ञा की कि उनचार बालकों को अब मंगाओ कि बारहवर्ष होचुके। दीवान सुनतेही तुरत आप सवारहो उन बालकों को लेने गया। पहिले उनमें से राजकुंवरको लेआया। नख और केश बढ़े हुये शरीरतमाम मैला कुचैला इस वेषसे जाके जन्मुख ला खड़ाकिया। राजा ने देखकर कहा कि पुत्र तुम कुशलसे हो इतनेदिन तुमकहां थे और अब कहां से आये सब व्यौरा अपना हमसे समझा कर कहो। यहसुन कुंवरने हंसकर राजासे कहाकि आपके पुण्यसे अभी कुशल है और आजका दिनभी कुशलकाहै जो आपके दर्शन पाये। यह सुनकर अपने मनमें हर्षितहो राजा

ने मंत्रीकी तरफदेखा मंत्री उठकर जोड़ जुहारकरके बोला कि महाराज। यहसब कर्मही का लिखा है फिर दीवान के पुत्रको बुलवाया आकर वहभी राजाके सन्मुख भयानक वेष से खड़ा हुआ जैसे वनसे भालूको पकड़ लाते हैं नाखून और बाल उसीतरह बढ़े हुये शरम से नीचीगर्दन किये खड़ा था राजाने पूछा कि तुम अपनी कुशलकाहे कहांथे और किधर से आवेहो तब वह बोला महाराज। कुशलक्षेम कहां हैगी उधर संसारमें उपजे हैं इधर विनसे हैं जैसे घड़ी भरती और डूब जाती है नर जानता है दिन जाता है दिन जानें है नर जाता है यही जगतका व्यवहारहै इसमें कुशलक्षेम काहेकी कहूं वे उसकी बातें सुन राजा ने दीवान से कहा इसे यह किसने सिखाया है जो कुछ तूने कहाथा वह सब अचरज है यह फल कर्मसेही इसने पाया फिर राजाने कोतवाल के बेटे को बुलाया उसने आतेही राजाको सलामकिया और हाथ जोड़ खड़ाहुआ राजा ने कुशलपूछी तब उसने कहा पृथ्वीनाथ दिन रात नगर का पहरा हम देते हैं इसमेंभी चोर आन चोरी करता है बदनाम हम होते हैं बिना अपराध कलंक लगे तो फिर कुशल काहेकी है राजाने फिर ब्राह्मण के पुत्र को बुलाया जबवह सम्मुख आया राजाने दण्डवत की उसने मंत्र पढ़ आशीसदी राजा ने उसकी कुशल पूछी उसने कहा कि महाराज आप पूछेहैं मुझसे यह बात कि तेरे शरीरमें कुशलहै सो कुशल कहांहै मेरे शरीर में दिन ब दिन उमर घटती जातीहै महाराज। कुशल तो तब कहनेमें आवे कि मनुष्य चिरंजीव होवे जीवन मरण साथहै उसकी क्या खुशी कहूं चारोंकी चार बातें सुनकर दीवानसे कहा कि सच है पढ़ाने से पण्डित नहीं होता पण्डिताई जो कर्म में लिखी होय तो मिले यह कह दीवान के तईं सब प्रधानों का सरदार किया और अपने राज काज का भारदिया और उन चारों लड़कों के बिवाह कर दिये और बहुत धन दौलत दी। इतनी बात कह पुतली बोली सुन राजा भोज कलियुगमें ऐसा धर्मात्मा साहसी राजा होना कठिनहै जो

इतनी बुज़ुर्गी और धनपाय अपनी कही बातपर स्थिर न करे और जो न्याय का धर्म था सोही कहा ऐसा जो तू कामकरै और इस योग्य हो तो सिंहासन पर पांवधर और नहीं तो अपनी यह आज तज। राजा अपने मनमें चिन्ता करता हुआ वहां से उठ मन्दिर में आया रातको खेटाहुआ विचारने लगा कि देखूं मेरा भाग फिरे या अभागा रहूं रात तो इसीतरह बीतगई सुबहहुई फिरवहीं आन मौजूद हुआ चाहे पांव उठा सिंहासन पर धरें इसमें॥

करुणावती तेईसवीं पुतली॥

क्रोधकर बोली सुन राजा। जो कदाचित् तू इस पर पांव रक्खेगा तो तुर्त जल कर भस्म हो जायगा और तुझे लज्जा नहीं आती कि तू घड़ी घड़ी यह दुरादा करके आता है और जो कोइ होता तो फिर मुंह न दिखाता। जिस सिंहासन पर राजा वीरविक्रमादित्य बैठे तिसके बैठने का तू मनोरथ करे हंसकी बराबरी कौवा नहीं करसक्ता सिंह के समान गीदड़ को कोई नहीं मानता पण्डित के बराबर कोई मूर्ख को नहीं जानता राजा तू निर्बुद्धि है और कुछ तुझे ज्ञान नहीं जैसे मछली थोड़े जल में छलकती है वैसे तू थोड़ी प्रभुता पाकर उतरा चला है। ऐसी २ कठिन बातें सुन कर पुतली रोने लगी। राजा अपने चित्त में चिन्ता कर उस पुतली से पूछनेलगा कह सुन्दरी तू क्यों रोती है अपने जी का दुख समझाकर मुझ से कह राजा वीरविक्रमा दित्य में क्या गुण पुरुषार्थ था यह सुन करुणावती पुतली बोली राजा तुम स्थिर होकर बैठो और कान रख कर सुनो तो मैं सब कथा कहती हूं। राजा यह बात सुन प्रसन्न हो आसन बिछवा वहां बैठ गया और जितने लोग राजा के साथ थे गिर्दओ पेश सब बैठ गये फिर पुतली बोली कि राजा वीर विक्रमादित्य के गुण राजा भोज तू सुन ऐसा यशी साहसी पुण्यात्मा इस कलियुग में कोई जन्मा नहीं और न कोई जन्मेगा जिस समय राजा विक्रमादित्य अंख को

मार राजगद्दी पर बैठा शंख के दीवान को बुला कर कहा कि तुझ से मेरा काम न चलेगा इससे यह बिहतर है कि बीस दास मुझे अच्छे ढूंढ कर लादे जो राज काज करने के लायक़ हों क्योंकि तुझ से काम का बन्दोबस्त न होगा मैं उन से सब अपना काम लूंगा। राजा की आज्ञा सुन दीवान बीस आदमी उसी नगर से ढूंढ़कर ले आया कुल में बैस में सुन्दरता में सब अच्छे थे राजा के सामने खड़े कर दिये राजा उन को देखतेही बहुत प्रसन्न हुआ और उसी समय सब को बागे पहना पानदेकर कहा कि तुम हमारी ख़िदमत में सदा हाज़िर रहो फिर उसके कई दिन के बाद उन में से किसी को दीवान किसी को कोतवाल किसीको फ़ौजदार किया ग़रज इसीतरहसे हरएक को एक २ कामदे पुरानेलोगोंको जवाबदिया और सब नया बन्दोबस्त किया पर एक उस पुराने दीवान को जवाब न दिया दीवान जब अपने घरमें बैठा करता वे सब पुराने लोग आकर हाज़िर हुआ करते और आपस में चरचा करते कि यह राजा बुद्धिमानहै जो राज यों लिया और बन्दोबस्त यों किया कईदिन के बाद दीवान ने उनलोगों से कहा कि तुम मेरेपासनआयाकरो इसलिये कि काम तो मेरे हाथ तुम्हारा निकलता नहीं और नाहक़ को राजा सुनेगा तो ख़फ़ाहोगा और कहेगा कि यह अपने घरमें क्या मताकिया करताहै मैंअपनी बदनामीसे डरता हूं कुछ तुम मेरे इसकहनेका बुरा न मानना। यह सुन कर उनमेंसे फिर कोई उसके पास न आया यह अपने मनमें विचार करने लगा कि ऐसा कुछ काम कीजिये जिसमें राजा प्रसन्नहो रातदिन यही विचार करतारहता था एकदिन वह प्रधान नदीकिनारे स्नानकरनेगया वहां स्नानकर कमर भर पानी में खड़ा हुआ जप करता था। इसमें उसनदीमें एकफूल अतिसुन्दर कि वैसा कभीदृष्टि में न आयाथा बहताहुआ देखा अपना जप छोड़कर आगे बढ़ फूललेकर जीमें विचारा कि यह राजाकी भेंटकरूंगा

तो वह देखकर बहुत खुश होवेगा। वहफूल हाथ में ले खुशी२ अपनेघरमें आकपड़े दरबारके पहन राजाके पास गया और फूल नजर किया। राजा फूलले बहुत खुश-होकर बोला कि अपनेराज्यपाटका मैनेतुझे प्रधान किया उन्ने उठकर भेटदी और आदाबबजालाया फिर राजाने कहा इसफूल का दृक्ष मुझे लादे अगर लादेगा तो मैं तुझसे बहुतखुशहूंगा और जो न लादेगा तो अपने नगर से निकालदूंगा। यह राजा की आज्ञाले अपनेमन्दिर में आया और जीमें विचार करनेलगा कि मैंने पूर्वजन्म में ऐसा क्यापाप कियाहै जो ऐसी सुन्दरवस्तु राजा को दी और राजाने प्रसन्न होकरली फिर यह क्रोध किया कर्म की गतिबूझी नहींजाती कि भलाकरते बुराहोवे। अकेला बैठ बहुत चिन्ता करनेलगा कि अगर राजाकी आज्ञा न मानूंतो देशनिकाला मिले और ढूढ़ने जाऊंतो कहां से ढूढ़कर लाऊं जो दुःख पाकर कहीं जाऊं और ढूढ़ न पाऊंतो औरभी दूना दुःखहोगा मैं यह जानताहूं कि काल मेरे निकट आनपहुंचा है इससे अपयशका मरना भला नहीं अगर येाहीं मरनाहै तो बनमें जाइये जोढूढ़ लिलजाय तो लेआइये नहीं वहीं मर जाइये। इतनी बातें अपनेजीमें विचार ढाढस करके बैठा और अपनेदी-वानको बुलाकर कहा कि किसी कारीगर बढ़ईको बुला देा कि एक नाव ऐसी हमें तैयारकरदे कि बगैरमल्लाह और बिदून खेवटिये के जिधर को चाहेंले जावें। वेाहीं कारीगर बढ़ईको बुलवा दीवानने हाजिरकर दिया बढ़ई ने कहा कि महाराज। कुछमुझे खर्च की आज्ञा होवेतो मैंजल्द बनालाऊं मंत्रीने दीवानको कहा जितने यहरुपये मांगे उतनेइसे दोतो यह जल्द बनालावे। रुपये उसे दिये वहघरको लेगया और कितनेदिनोंके बादनाव तैयार करके खबरदी कि तैयारहोचुकी। वेाहीदीवानने अपनेस्वामीसे जाकर कहा आपने जो नाववनवाने की आज्ञादीथी सेा तैयार है। यह सुनतेही दीवान उठ नदी किनारे आ

नावको देख प्रसन्नहो उसबढ़ईको जोड़ाघोड़ादे पांचगांव इनामकर विदाकिया दीवानअपनासरञ्जाम नावपररक्खवा आपकुटुम्बसे विदाहो हाथजोड़कर कहनेलगा कि जोहम जीते फिरेंगेतो फिर तुमसे मिलेंगे और जोमरगये तोयही विदाहमारीहै। वह जयह कहकररवाना हुआ तमाम घरके लोग शोकमार रोनेलगे। फिर यह भी जी भारी किये हुये उसनाव पर बैठा। पालचढ़ा किश्ती खोलदी जिसतरफसे वहफूल बहताहुआ आया था उसी तरफको वह चलाजाता था और दोनोंकराड़ोंके दरख़्तोंको देखता जाताथा। कितने दिनों में चला २ एक महा बनमें जा पहुंचा और खानेकी जिन्सभी तमाम होगई। तब उसने अपनेजी में विचारा कि अब नावपर बैठा रहना उचित नहीं जिसकामको आये हैं उसकाम की फ़िकर किया चाहिये। यह अपनेजीमें कहताथा और किश्तीपाल पर चढ़ायेजाता था कि एकपहाड़ दरमियानउस दरियाके नजर आया और उसी पहाड़से पानी आताथा। किश्ती वहांलगा आप उतरकर पहाड़पर गया। क्या देखता है कि जहांतहां हाथीघोड़े शेरअरने दहाड़रहे हैं सिवाय उनकी आवाज़ों के कोईबात कान नहीं पड़ती सुन सुन आवाज़ें अपनेजीमें सहमाजाता था इसपर भी आगेही पांवधरता था जबउस पहाड़ को लांघगया वहां जाकर देखेतो एक वैसाही फूल बहताहुआ चलाआता है। उस फूलको देखजी में ढाढसी हुई कहनेलगा कि वैसा फूल दूसराभी देखा भगवान चाहै तो इसभी नजर आवे। ज्यों ज्यौंआगेबढ़ा त्यों२फूल औरभी बहतेदेखि वहआंदेखा उसके जीसे कमहुआ और दिलमें कुछकरार आया आगेदेखता क्याहै कि एकबड़ा पहाड़है और उसके नीचे एक मन्दिर है उस मन्दिरको देखकर अपने मनमें विचारा कि ऐसा सुन्दरमन्दिर इसजगह बनाहुआ है चाहिये कोई मनुष्य भीहो। यह कहता हुआ उस मंदिर के पास जापहुंचा और वहांजाकर देखेतो एकतरवरमें तपस्वी गंभीर मौनी

में बांधेहुये उलटा लटक रहाहै हाड़ मास चाम सूखकर काढ़ेहोगया है और उसमेंसे एक बूंदरक्त की उसनद में गिरतीहै और वहफूलहो वहां से बहती चली जाती है ऐसे अचरजको देखजीमें यों कहनेलगा कि भगवान की लीला कुछ बुद्धिमें नहीं आती नीचे निगाह करकेदेखेतो बीस योगी वैसेही जटाधारी बैठे हैं और सूखके वेभी खड़ंग होगये हैं और चारों तरफ उनके दराड़ कमण्डल पड़े हुयेहैं और जिस ज्ञानध्यानमें जैसे बैठे थे वैसेही बैठेहैं। यहदशा वहांकी देखप्रधान उलटा फिर अपनी नावपास आया नावपर सवार हो कितने दिनों में अपने नगर में आन पहुंचा लोगोंने खबरउसके आनेकी पाई पेशवाई लेने गये और उसेलेआये जोकोई आताथा मिलकर क्षेम कुशलपूछ कर बधाई दे जाता था घरमेंभी उसके नौबत बजनेलगी महोत्साह होनेलगा। यहखबर राजाने सुनी और एक प्रधान को भेज दीवान को बुलाया। वह आन कर लोगया। यहजाकर राजाके पांवपर गिरपड़ा राजाने उठा छाती से लगा क्षेम कुशल पूछी और कहा कहां तलक तू गयाथा और कहां ठिकाना उसका कर पाया यह सुनतेही बेफूल हो लायाथा भेटकिये और हाथजोड़ कर कहनेलगा कि महाराज। एकअचंभेकी बातहै जो मैं कहूंगा तो आप न प्रतियावेंगे। फिर राजा ने कहा कि जो तूने अचंभा देखा है सो बयान कर तब वह बोला महाराज मैं यहांसे चलाऊआ एक जंगल में पहुंचा और वहां जाकर एक पहाड़ देखा उसपहाड़पर जबमैं चढ़ा तो और एकपहाड़ नजरआया इसीतरहके पहाड़लांघ जबमैं आगे गया एकपहाड़के तले एकसुन्दर मन्दिरदेखा जबमैं उसके पास गया तो एक पेड़ पर तपस्वी पावों में जंजीर बांधे हुये उलटा लटकता हुआ नजर पड़ा मास चाम सब उसका हाड़ में सटरहा है और रक्त उस देह से जो टपकताहै सोफूल बनकर बहताहै और उसकेनीचे देखा तो बीस तपस्वी आसनमारे जिसध्यानमें बैठेथे योंके

योंहीं रहगयेहैं और जान एकमेंभी नहीं। यह सुनकर राजा हंसा और मंत्रीसे कहा कि तूसुन मैं उसका विचार तुझसे कहताहूं कि वह जो तूने तपस्वी झंखलमें लटकता देखा वहतो मेरी देहहै मैंने उस जन्म ऐसी कठिन तपस्या कीथी उसकाफल यह राज्य मुझे मिलाहै और वे जो बीससिद्ध तूने देखे सो बीसों दासहैं येजो तूने लादिये और उसी तपस्याके तेजसे मेरेआगे कोई नहीं ठहरसक्ता और उसी बल से शत्रु को मारा और यह पूर्व जन्म का लिखा था इसमें कुछ दोष मेरा नहीं जब तलक मैं इस पृथ्वीमें अखंड राजकरूंगा तू तबतक मंत्री रहेगा तू अपने जीमें चिन्ता मतकर इसमें दोष तेराभी कुछ नहीं जैसा पूर्व जन्मका लिखाथा सोहुआ और जैसी तब उन्होंने मेरी सेवाकीथी वैसाही अब उसकाफल भोग करेंगे और तब उन्होंने मेरे साथ जी दियाथा इसलिये मैंने उनबीसोंको अपने निकटरक्खाहै यह अपना परचा देनेके लिये तुझसे निठुराईकीथी अब तेरामन पतिआया और तूने हमारा मर्म बूझा क्योंकि सबलोग कहतेहैं कि विक्रमने अपनेबड़े भाईको मारा इसमें दोष मेरा कुछ नहीं और जो कर्म का लिखा है सोहोरहता है आज से मैंने तुझे अपना प्रधानकिया और जिसमें राजकाज अच्छा होवे वहांकी जो यहबात किसी के आगे मत कहियो इसलिये कि जो सुनेगा राज्यके लोभसे योग कमावेगा। इतनी बात करुणावतीपुतली कहकर बोली सुनराजाभोज जितना राजा वीरविक्रमादित्यका राज्यथा तिसकामार उन्हेंदीवानको दे सुखसे पार कर दिया और राजपाट हवाले किया जो उसके समान होतो इस सिंहासन पर बैठनेका नाम ले नहींतो यह खियाल दिलसेदूरकर वह सायत और वह दिनभी राजा का टलगया दूसरे रोज शुभ आव फिर सिंहासनके पास खड़ा हुआ इससे॥

चित्रकला चौबीसवीं पुतली बोली॥

सुन राजाभोज मैं एकदिनकी इक्लीक्रत राजाबिक्रमा दित्यकी तेरे आगे कहतीहूं सोतू दिलमें अपने खूबतरह से समझ। एकदिन राजा नदीके किनारे दसहरेके नहाने को गयाथा वहां जाकर देखेतो एक स्त्री बनियेकी जवान खूबसूरत नदीके तीर खड़ीहुई बाल सुखाती है और सामने उसके एक साहूकार बच्चा बैठा तिलक दे रहा है और आपसमें दोनोंकी सैनें चलरही हैं कभी तो वह स्त्री हाथ नचाय भौं मटकाय बाल सुलझाती है और कभी शिरका अंचल छातीसे सरका बदन दिखा फिर छिपाती है कभी आरसी दिखा चूमकर छातीसे लगातीहै इस तरहसे अनेक अनेक रीतिसे चेष्टा कररहीहै और वहभी इसीतरह इशारे कर रहा है उनदोनों की हालतें देख राजा ने अपने जीमें विचारा कि इनका तमाशा देखा चाहिये कि ए क्या करतेहैं राजाने स्नान ध्यान अपनाभी सब किया पर उनकी ओरभी देखतारहा। इतने में वह स्त्री जानकर चद्दर ओढ़ घूंघट कर अपने धाम को चली और साहूकार बच्चाभी उसके पीछे पीछे चला राजा ने एकहरकारा उनदोनोंके पीछे लगाया और उसहरकारे को कहदिया कि इनदोनोंका मकान देख सबसे वाक़िफ़ होआ और हमेंजल्दी खबर दे जब वह औरत अपने घर में गई तब उसने फिरकर देखा और शिर खोलकर दिखाया फिर छाती पर हाथधर अपने मन्दिरमें गई और सेठकेबेटेने भी अपनी छातीपर हाथरक्खा यहखबर हरकारेने आ राजा को दी। राजाभी अपनी सभामें आकर बैठा और एक पण्डित से पूछाकि कोई त्रियाचरित्र हमें सुनाओ कि हमाराजी सुन्ने को चाहताहै तब पण्डितने उत्तरदियाकि महाराज मेरीतो क्या सामर्थ्यहै जोमैंत्रिया चरित्र आपके आगे कहूं त्रियाका चरित्र और पुरुषका भाग्य ब्रह्माभी नहीं जानता आदमीकी तो क्या क़ुदरतहै और यह देखेही बनआवे जबानसे कहा नहीं जातायह

बात पण्डित से सुन राजा चुपहोरहा और अपने जी में कहा बड़ चरित्र देखा चाहिये। इतनेमें शामहोगई राजा उठ महल में गया कुछ खा तुर्तही बाहर निकल आया और उस हरकारेको बुलाकर कहा कितू इस बात का ब्यौरा कुछ समझा है उसने जवाबदिया कि महाराजकुछ मेरे जीमें आया है पर आपके आगे कहते शंकाहोती है राजाने कहाकि जोतू समझा है निडरहोकर बयानकर वह बोला महाराज उन्नेो शिरखोलकर छातीपरहाथ रक्खा। उन्नेकहा जिसवक्त अंधेरी रातहोगी तबमैंतुझ से मिलूंगी और उन्नेभी छातीपर हाथरक्खा। समझादिया कि अच्छा दासकी समझमें यह कुछआयाहै राजानेकहा तूतो सच समझा है यही उनका मतलब है मैंने भी बड़ी देर तलक घाटपर बैठ उन्हींका मुहं मालूमकिया। पर तू अब मेरेतईं उसके घरलेचल। हरकारेने कहा अच्छा महाराज मैं हाजिर हूं चलिये। राजा हरकारे को ले उसके मकान पास आया और उसको बिदाकिया पिछवाड़े चौबारेके एक खिड़कीथी उसमेंसे चिरागकी जोति नजर आतीथी और कभी कभी जो झांकतीथीतो उसकी झलकभी मालूमहेतो थी जब दोपहर रात गुजरी और खूब अंधेरी होगई तब राजाने उधर से एक लंकड़ी उस खिड़की में मारी लगतेही वह झांक राजा को देख यह जानाकी वही मनुष्य आनपहुंचा फिर उसने तमामघर का जवाहिर और सबगहना एकडिब्बेमेंभरा और साथ लेकर निकल राजाकेपास आई कहाकियह ले और मुझे लेचल। राजाने कहाकि योंतो मैं तुझे न लेजाऊंगा क्यों कि तेरा खाविन्दजीताहै जो कभी खबरपावे तो राजाके दरबारमें फरयादको जावेतो राजा मुझेमुझे मारडालेगा इससिवा तर यहहैकि पहलेतू उसेमार फिरआजो। अकंटक हो हमतुम सुखभोगकरें। उसने विलम्ब कुछ न किया सुनतेही घरमें जा लाठी ले खाविन्दको मार फिरचली आई और वह जवाहिरका डिब्बा राजा को दिया दोनों

इसतरह नगर से बाहर गये आगे आगे राजा और पीछे पीछे बहरी जब नदी किनारे पहुंचे तब राजा वहां खड़ा हुआ और अपनेजीमें विचार करनेलगाकि जिसने अपने स्वामी के मारने में विलम्ब न किया उसे दूसरे के लिये क्यों देरीहोगी अब इससे जुदा हूजिये और इसका चरित्र देखिये कि अबयह क्या करतीहै। यह दिलमें विचारकर राजाने कहा हे सुन्दरी। मैं देखूं पहले इस नदी में जल कितनाहै जो मैं इसनदीको थाह पाऊंगा तो इसीरास्ते तुझेभी खेचलूंगा यहकह राजा नदीमेंपैठा और पैरकर पारका रस्तालिया जब उसकिनारे जापहुंचा तबपुकार कर कहाकिमैं तो पारउतर आयापर तुझे लानहींसक्ता क्योंकिपानी अथहहै। यह कहराजाने आगेकी राहली तब उस औरतने अपने मनमें विचाराकि द्रव्य उसके हाथ लगाहै उसकेलोभसे यहमुझेछोड़गया अभीरातकुछ बाकी है बिहतरहै कि फिरघरचलिये और स्वामीसेमिलजलिये। यह दिलमें ठानकर अपनेघरमेंआई और खाविन्द के पास जा कूकामारमार हायहकर रोनेलगी और पुकारीदौड़ियो चलियेमेरे खाविन्दको चोर मारेडालेजाते हैं और घरकी सबसामग्री लियेजाते हैं यहसुनकर घरबाहरके सबलोग दौड़ और पूछा कि चोरकिधर है उसने कहा अभी इस रस्ते निकलगया। लोगतो ढूंढने लगे और यह सिरपटक पटक रोरोकहती थी कि मेरा सुहागलूट मुझेअनाथकिये जाताहै लोग सब कुटुम्बके समझाने लगे कि यह भगवान की माया है इसमें किसी का बशनहीं चलता जब मौत आती है तो कुछ बहाना लिये आती है इसके दिन पूरे होचुके और कौन किसी को योंमार सक्ता है और कौन किसको जिला सक्ताहै तू अपने जीमें ढाढस बांध और इसकी गतिकर तब वह बोली कि मैं भी इसके साथसती हूंगी क्योंकि मेरा जगत में कोई नहीं लोगों ने बहुतेरा समझाया पर उसने न माना। खाविन्दको ले नदीकिनारे गई और चितावना उसके सिर आपभी जलने को बैठी

तमाम नगर के लोग देखने को आये राजाभी आन खड़ा हुआ। उसने खातिर जमामें आग अपने हाथसे चितामें लगाई और संभलबैठी जब कपड़े और बाल उसकेजलकर बदनमेंआंचलगीतब घबराकरउठी और सबलोग देखकर हंसेचितामेंसे कूदनदीमेंजापड़ीराजासेचुपनरहागयाकहा कि अय सुन्दरी यह क्याहै तबतौ वहअबयह तब वहबोली सुनेराजाइसकामर्मजाकर अपनेघरमेंपूछे।औरमैंजोअपने कर्ममें लिखा लाई थी उसीका फलपाया परतूनेअपनेघर का भेद न पाया। हम सात सखियां इस नगर में हैं उनमें की एक मैंहूं और छः तेरे घरमें हैं यह कह वह तो पानी में डूब मरी राजा अपने महल में आया और छिप रहा किसी को दिखाई न दिया। एक दिन और एकरात वहां लगारहा दूसरी रात जबहुई आधीरातके समय छहों रानियां हाथोमें कंचनके थाल मिठाई पकवानसे भरभर लेकर महलके पिछवाड़े की बाड़ी में गईं उसके आगे एकबनथा उसबनमें मढ़ीथी उसमें एकयोगी ध्यान लगाये बैठाथा येछहों रानियां दण्डवतें कर वहीं जाबैठीं राजाभी जो उनके पीछे पीछे आयाथा अहवाल देखने लगा जब सिद्ध अपने ध्यान से निश्चिन्त हुआ उनसे हंसहंस बातेंकहनेलगा और जितनेदर येमिठाईपकवान लेगईं थीं सब आगे रखदिया उसने भोजन किया और पानखाकर एकयोग विद्याकी कि एक देहकी छः देहभईं और उनछहो रानियोंसे भोगकिया। फिर वेछहोंरानियां विदाहो अपने मन्दिर को चली आईं। राजा यह चरित्र देख अपने मनमें विचार करने लगा कि इस सिद्धने क्या किया कि अपना योग भ्रष्टकिया और उनका धर्म खोया यह विचारकर राजा सिद्ध के सोहीं जाकर खड़ारहा। सिद्धमनमें कुछ संकोच कुछशंकाकिये बोलाकि वहदूरपति कहांसे आयाहै अपने मनका सुखसे भावकह तबराजाने कहा मुझे आपके दर्शनकी इच्छाथी इसलिये मैं आयाहूं तब वह योगी बोला कि राजातू मुझसे जो कामनामांगे

सेा तेरी पूरी करूं फिर राजा ने कहा कि स्वामी। एक देहकी छः देह किसतरह बनें वहविद्या मैं तुमसेमांगता हूं मुझे बताओनहीं तेा मैं तुम्हें जानसे मारडालता हूं इतनी बातकह पुतलीकहने लगी कि सुनराजा भोज जब राजाने उससिद्धसे ये बातेंकहीं तब उसनेडरके वह विद्या दी और राजाने वहां परीक्षा करली तिस पीछे योगीका तलवारेंमार टुकड़े करडाला। फिर वहांसे महलमेंआया और जहां छहों रानियां बैठीथीं वहीं आन कर राजा भी बैठा राजाको देख छहों उठ खिदमतमेंहाजिर हुईं किसीने पंखाझलाया किसीनेहाथ मुंह धुलाया किसीने पानबना खिलाया इसीतरह सब अपनी २ प्रीति राजा से प्रकाश करने लगीं और ज्यों २ वे प्यार करतीं थीं त्यों २ राजा मानकरता था। फिर राजा बोलासुनो सुन्दरियो। मैं तुमसे हितकरताहूं तुमसुझसे अनहित कर और का ध्यानधरो यहतुम्हें उचितनहीं तब वे बोलीं कि महाराज हमारेतेा प्राणरक्षक तुमहेा तुम्हें देखे हमजीतीहैं तुम्हारा ध्यान हमआठोंपहर करतीहैं जेा कभीं बाहर कहीं तुम जातेहेातेा हम चकोरकी तरह तुम्हारे मुखचन्द्र के देखने को तरसती हैं और जैसे जल बिन मीन तड़फे तैसे हम व्याकुल रहती हैं और क्षण भरके वियोग में जल कमल की तरह हम कुम्हला जाती हैं। राजा सुन क्रोधकर मुसकराया कि सच है सुन्दरियो हमने जाना तुम्हारा दिल मुझे नहीं छोड़ता जैसें एक सिद्ध के छः सिद्ध होगये फिर वह एकही सिद्ध होगया। यह सुन रानियां एक दम चुप होकर फिर बोलीं कि महाराज। ऐसी आश्चर्य की बात तुम कहते हेा जेा कभी न देखी न सुनी और किसी को एतिबारभी जिसका न आवे क्योंकर एक देह की छःदेह होवें और इसबातको कौन मानेगा तबराजा ने कहा कि चलेा हम तुम्हें दिखादें। छहों को अपनेसाथ ले उसी बाड़ीमें जा उसगुफाका मुंह खोलदिया देखकर वे सहमगईं और अपने मनमें जाना कि राजाने हमारा

सब चरित्र देखा फिर राजा ने कहा कि तुमने जाना या नहीं यह सुनकर उन्होंने नीची गरदनें कर जवाब कुछ न दिया तब राजा छहों का सिरकाट उसगुफ़ा में डाल मुंह बन्दकर चला आया और आतेही नगर में ढंढोरा फेरदिया कि जितने ब्राह्मण और ब्राह्मणियां और ब्राह्मणों की कन्याहैं वे सब यहां आनकर हाजिर होवें। यह सुन कर सब हाजिर हुईं जितने रानियों के गहने और वस्त्र थे वे सब ब्राह्मणियों को पहनाये और एक २ ब्राह्मण को एक २ गांव दृत्ति करदिया और जितनी कन्याथीं उनको दान दहेज दे व्याहदिया और आपराज्यकाज करनेलगा। इतनी बात कह पुतली समझाने लगी कि सुन राजा भोज। तू बड़ा पण्डित है पर इस आसन पर वह बैठेगा जो विक्रममसमान होगा। वह सायतभी गुज़र गई राजा उठकर वहांसे अपने मकानमें गया रात को इसी सोचमें सोरहा दूसरे दिन सुबह को फिर सिंहासन के पास आकर खड़ा हुआ तब।

अथ लक्ष्मी पच्चीसवीं पुतली बोली॥

सुन राजा। एक दिनकी बात मैं तेरे आगे कहतीहूं एक भाट निपट दरिद्री खराब हाल था सब पृथ्वीके राजाओंके पास फिर आया था और एक कौड़ी का किसी से उसने फायदा न पाया था जब अपने घरमें आया तो देखा कि बेटी जवान व्याहनेके लायक़ हुईहै। यह अपने जीमें चिन्ताही करता था कि उसकी भाटिन बोल उठी तमाम देश तुम फिर आये पर जो कमाई करलाये सो कहो। तब उसने जवाब दिया कि मेरे प्रारब्धमें धन नहीं है इसलिये कि तमाम राजाओं के पास मैं गया और शिष्टाचार उन्होंने सब किया पर एक दाम न हाथआया अब मेरेजीमें एकबातआईहै राजाधीरविक्रमादित्य बाकी रह गया है उसके पासभी जाकर मागूं जो मेरे जी का संदेहमिटे फिरवहभाटिनबोली अबतुम कहीं मतजाओ

और सन्तोषकर रहोकर्मका लिखाफल यहीं बैठे पाओगे फिर भाटने कहा कि राजा बीरविक्रमादित्य सुनते हैं बहादानीहै उसके पास अपनी कामना जो लेगयाहै वह खाली हाथ नहीं फिरा और अपने मक़सदको चङ्गचाहै। ये बातेंकर वह राजा के पास चला और गणेश का मना राजाके सन्मुख जाखड़ा रहा राजाने दण्डवत्की और वह अशीष देकर बोला कि बड़तभूमि फिर आयाहूं आपका यश मुझे यहां ले आया है आप इस मर्त्यलोक में इन्द्रका अवतारहैं और गुणके निधानहैं आपके बराबर दानी संसार में कोई नहीं इससमय में आप दान देने को राजा हरिश्चन्द्र हैं तमाम पृथ्वी में आपका यश छारहा है और खामी मैं कालिका सुतहूं भाटवंश में आनकर अवतार लियाहै अब तुम्हें यांचने आयाहूं मेरा मनोरथ पूर्णकरदो मैंने संसार में फिरकर खूब देखा कि सिवा तुम्हारे मेरी आशका पूजनेवाला और कोई नहीं। तब हंसकर राजाने कहा कि तू अपना मतलब सब मेरे आगे प्रकाशकरके कह जो मैं तेरी कामना पूरीकरूं। भाटने कहा योंमुझे अपने कर्मका भरोसा नहीं आप बचन दीजिये तो मैं खातिर जमा से कहूं जब राजा बचन देने लगा तब भाट बोला कि महाराज। मुझे सुंह मांगा दान दीजिये कि अपनी पुत्री की शादी करदूं बारह बरस की कन्या मेरे घर में बैठीहै इसलिये मैंयांचने आयाहूं यहसुनराजाने हंसकर मंत्रीसे कहा कि जो यहमांगे वह इसेदो फिर उसभाटने कहा कि महाराज। जो कुछ आपको देनाहै सो अपने सन्मुख मंगाकर दीजिये मुझे इससंसार में अब किसी का इतबार नहीं राजाने दसलाखरुपये रोक और हीरेलाल मोतीमोने रूपेके गहने थाल भरभर कर दिये और वह ले अशीषदे अपने घरमें आया। जो कुछ लायाथा सब ब्याह में लगाया और राजाने पीछे उसके देखनेसुनकर दियेथे कि तुम देखो कि यह धनको लेजाकर क्याकरताहै उसकी खबर ठीकमुझे लाकरदो। जब वह शादीकरचुका और

उसकेपास एक दिनके खानेको भी न रहा तब उन हरकारोंने जाकर राजाको खबरदी कि महाराज उसभाटने ऐसाविवाह बेटीका किया कि इसकलियुगमें कोई और करसक्ता नहीं। जो कुछ आपके यहांसे धनदौलत लेगया था सो सब क्षणभरमें बेटीकोदेव्याहदिया। यहसुन राजा ने और कईलाख रुपये उसके घर भेज दिये और अपने चित्तमें बहुतप्रसन्नहुआ कि धन्यभाग मेरेहैं जोमेरे राज्यमें ऐसे हिम्मतवाले लोग हैं। इतनी बात कह पुतली बोली सुन राजाभोज। इतना धनदेकरभी राजाने उसका खर्च सुन और दौलतभेजदी ऐसादानी तूहोतो इस सिंहासन परबैठ और नहींतो मनकेलड्डू खानेसेकुछ हासिल नहीं है यहसुनकर राजा अपने मकानमें आयाफिर सुबहउठ स्नान पूजाकर वहीं आन चुपका खड़ाहुआ इतने में॥

विद्यावती छब्बीसवीं पुतली॥

बोली कि सुनराजा। मैंतेरे आगे ज्ञानकी बातकहती हूं और तू मनदेकर कानरख जब आदमी जन्मता है तो कुछ संग नहीं लाता और मरताहै तो कुछलेनहींजाता इसजीवनका फलयहीहै कि संसार में आकर कुछकरनी करे और जैसी करनी करेगा वैसाही फल पावैगा और संसारमें जीवन थोड़ा है इससे ऐसा यश करो कि जाने परभी जगमें नाम ठहरारहे दोनोंलोक में सुखपावे और यह मनुष्य जन्मबारबार नहींपाता जबपूर्व जन्मदान व्रत तपस्या बहुतकर आता है तो यह नर देह पाताहै और लक्ष्मीदानकर कुछशोच मतकर यही अपनेजीमें सदारख कि दान हमेशा किया कीजिये यह भय रूप जो संसार सागरहै इसकेतरनेको सिवाय दान उपकार और हरि भजन चौथाउपाय नहीं। मैंने तुझसे कहा कि साथकोई कुछनहीं लेजाता मैं तेरे आगे सब कहती हूं कि राजा हरिश्चन्द्र, राजा कर्ण, राजा बीरबिक्रमादित्य क्या लेगये औ जिन्होंने दान उपकार हरिभजन किया उनका जगमें

नाम रहा और अन्तसमय बैकुण्ठपाया। ये बातें पुतलीकी सुन राजाभोज बोला कि राजा बीरविक्रमादित्य ने क्या कियाहै यह कहतब विद्यावती पुतलीबोली कि एकदिन राजा बीरबिक्रमादित्य राजसभा में बैठा था एकदासी ने आकरअर्जकी कि महाराज। उठिये पूजाका समयजाता है यह सुनकर राजाने बिचारा कि इसने सचकहा मेरी उमरचली जातीहै और सुभमेज्ञानधर्म्म पूजाबननहींआई इससे उत्तम यह है कि इस राज्यकाजकी माया भुलाय अब योग कमाइये जो कि और जन्ममें कामआवे। यह राजाने अपनेजीमेंबिचारा और राज्यपाट धन जनमिथ्या समझकर तपस्या करनेको एक बनमें चला और यह विचार करता जाता था कि इस संसारमें जीना सबेरेकी ओस समान है और जीनेके भरोसे पर मैंने अपना काम अकारथ गंवाया। यह बिचार करता हुआ राजा एक महाबनमें जापहुंचा वहां जाकर देखेतो एक मण्डली तपस्वियों की बैठीहुईहै धूनीएक २ के आगे जागरही है आसनमार२ अपने२ ध्यानमें लीनहोरहेहैं कोई ऊर्द्धबाहु कोई पञ्चाग्नि इसरीतिसे अनेक २ प्रकारकी साधनाकर रहेहैं और कोई २ उनमें बैठाशरीर से मांस काट काट होमकर हाहै। इसतरहसे उनकी तपस्या देखराजा भी तपकरने लगा। आपभी तपस्याकरताथा और उनकी भी तपस्या देखताथा कईएकदिनमें तपस्वियोंने अपनाशरीर सब हुनदिया उनकी देखा देखी राजा भी अपना शरीर होमनेलगा। कई महीनों में राजा ने एक दिन शिर भी अपना काट होमदिया वहां जो एक शिवका मन्दिरथा उसमेंसे एक शिवगण निकला और निकलकर सब तपस्वियों की धूनीमेंसे राख समेटकर जुदीजुदी ढेरकी और फिर जा शिवको खबरदी कि महाराज जो आपने कहा था सो मैं करआया तब शिवने आज्ञा की कि यह अमृत तू लेजा और उनकेऊपर छिड़कआ। यह आज्ञापाय अमृत लाय ज्यों२ छिड़कता था त्यों२ उनमेंसे एकएकशिव

शिव रामराम कहकह उठखड़ा होता था सब पर तो उसने छिड़कदिया। पर राजा की धूनी भूलगया औ सब तपस्वी मिलकर शिव की स्तुति करने लगे कि महाराज आप भक्तराजहैं और अनाथकेनाथ जिन्ने आपका शरण किया तिसका तभी तुमने फलदिया और जहां२ सेवकों को संकट हुआ है तहांतहां उनके सहाय हुयेहो। यह स्तुति करके उन तपस्वियों ने कहा महाराज एक नृपति भी हमारेसाथ तपस्या करताथा पर मालूम नहीं कि उसको आपकी आज्ञाहुई कि नहीं। यहसुन महादेवने उस गणकी तरफ़देखा देखतेही उन्ने अक्षत लेजाकर जोधूनी बाकी रही थी उसपर छिड़का। राजा भी हरहर कहता उठखड़ा हुआ और हाथ जोड़कर स्तुति करनेलगा कि महाराज। संसारके सबजीवों की आप सहाय करते हैं और पालतेहैं आपबिना इससंसार सागर से कौन पार उतारे जिसने जग में आ आपको नहीं पहचाना उसने अपना जन्म निष्फल खोया। फिर जितने तपस्वी वहां थे शिवने उनको सुंहमांगा वर दिया और सबको बिदा किया सबके पीछे जब राजा अकेलारहगया तबउसेकहा जो तेरी इच्छामेंआवे सोतू वरमांग मैंतुझेदूंगा। यहसुन राजानेकहा महाराज आपकी दयासे सबकुछहै पर एक यहमांगताहूं कि संसारके जन्ममरणमें मेरा निवेड़ा करो जैसे और भक्तोंका निवेड़ा किया तैसे मुझमे परम पापी आधीन दीनहीनको तारो। यहराजाकी विनतीसुनदया कर शिवने हंसकर कहा तेरेसमान कर्मी कोई कलियुग में नहीं और तू ज्ञानी योगी दाता साहसी तपस्वी है कलिके राजाओं का उद्धार करनेवाला है और मैं तुझसे कहताहूं कि अब जाकर तू अपना राजकाजतबतेराकाल निकट आवेगा तब तू मेरेपास आइयो यह मैंने तुझेवचन दिया कि अन्त समय में तुझे मोक्षपद दूंगा इससे तू अब जाकर सत्य लोकमें आनन्दसे राजकर। फिर राजा करुणाकरके बोला कि महाराज। संसारमें तुम्हारे प्रपञ्चकुछ

जाने नहींजाते या तो मुझे इससमय तारो नहीं तो मैं अपनाजीदेता हूं तब हंसकर शंकरने कहा जोतू जीदेगा तो मृत्युविनायमतुझे हाथभी न छुएगा और फिर आयुर्बलकेदिन भरनेपड़ेंगे इसमें तूजाउठ मेराबचन जीमेंरख इतना कह शिव तो कैलाशकोगये और राजा के हाथमें कमलका फूलदे यहकहगये कि जब यह कमल मुर्झायगा तबतू जानियो छःमहीनेमेंमरूंगा फूलले राजा अपने नगर को आया और अपने मनका विचार किसी से न कहा कितने एकवर्षपीछे वहकमलका फूल मुर्झागया तबराजा ने जाना कि मैं छः महीने में मरूंगा जितना कुछ धन और दौलत थी सेा ब्राह्मणों को संकल्पकरदी स्त्रीऔरपुत्र के खानेको कुछ धनदिया बाकी सबपृथ्वी ब्राह्मणोंको दान कर दी। इसतरह दान पुण्यकर राजा सदेह कैलाश को चला गया इतनी बात कह पुतली बोली सुन राजा भोज विक्रमादित्य ने इतना काम किया और जीवन मरण दोनों चीन्हें इससे मैं तुझे कहती हूं कि जीनेका कुछ भरोसा नहीं और मरण उसके साथ लगरहाहै दुखसुख भी मनुष्य के शरीरके साथहै और पापपुण्यभी साथ रहते हैं निर्गुण और सगुण ज्ञान घटमें रहता पर एकब्रह्म ही अलख है इससे मैं तुझे कहती हूं भूपाल कि संसार में कीर्त्ति रहजातीहै सेाई अमरहै जो मैंने तुझे कहा मनबच कर्म्मकर सचतू जान। वह दिनतो यों गुजर गया राजा नाउम्मैदहेा मकानको फिरगया सुबहहेातेही हाथमुंह धो स्नान पूजाकर फिरवहीं आनमौजूद हुआ जितनेराजा की सभाके लोगथे सेाभी सब हाजिर हुये राजाने अपने लोगोंसे कहा कि ये पुतलियां बातें झूठबनाबना मेरेआगे कहतीहैं अबमैं इनकी बातें न सुनूंगा और इस सिंहासन पर बैठूंगा। वह यह अपने लोगोंसेबातें करता था कि॥

जगज्योति सताईसवीं पुतली॥

बोली सुन राजाभोज एक दिन राजा वीरविक्रमादित्य

अपनी सभामें बैठाथा कि कोई प्रसंग निकला इसमेंकोई बोलउठा कि आज राजाइन्द्रके बराबर कोईराजा नहीं है क्योंकि वह देवलोकका राज्यकरताहै यहबात राजाने सुन किसी से कुछ न कहा और बैतालोंको बुलाकर कहा मुझे इन्द्रपुरीको लेचलो बैताल तुर्त लेउड़े और एकदममें लेजाकर इन्द्रकी सभामें पहुंचा दिया। राजाने जातेही वहां इन्द्रको दण्डवत्की और हाथ जोड़ खड़ा हुआ तब इन्द्रने बैठनेको आज्ञादी वह झुलपाकर बैठगया। इन्द्रने कहा कहांसे तुम आयेहो और नाम तुम्हारा क्याहै देश तुम्हारा कौनसाहै किमअर्थको यहां आयेहो सोतुम कहो राजा बोला कि स्वामी अम्बावती नगरी का राजा हूं मैं विक्रम आपके पदपंकजके दर्शनके अर्थ आयाहूं तब प्रसन्न हो इन्द्र बोला कि हमनेभी तुम्हारा नाम सुना था और मिलनेकी इच्छाथी सो तुमने आन यहां उलटी रीति की अब जोंकुछ तुम्हारा मनोरथहो सो हममें कहो और जो तुम्हें चाहिये सो मांगो हम तुम्हें देंगे। तब राजाने कहा स्वामी। आपकीकृपा और धर्म्मसे सबकुछहै और जोकुछ नहोतो मैं आपसे मांगूं आपका दियाहुआ सबकुछ मेरे पासहै राजा की येबातें सुनकर इन्द्रने प्रसन्न हो अपना मुकुट और एक बिमानदे यह अर्थ पढ़ी कि जो तेरे सिंहासन को बुरीदृष्टिसे देखेगा वह तुर्त अन्धाहोगा राजा वहांसे विदा हो फिर अपने नगरमें आया और नगर में बधाई बजने लगी। इतनी बात पुतली से सुन कर राजा भोज सिंहासन पर हाथ धरकर अपने पांवको रख खड़ा हुआ और चाहा कि आसन मार गद्दीपर जाबैठूं इतने में आंखसे अन्धा होगया और दीवानी बातें करने लगा चाहता था कि उसपरसे उठ जावे जुदा न होताथा यह हाल देख पुतलियां खिलखिला कर हंसीं और सबसभा भौचक होगई अपने जीमें सबलोग कहने लगेकि राजाने यह क्या अज्ञानपन किया कि बिना बात सुने सिंहासन पर पांव दिया। यह अपनी दशा देख राजा भोज बहुत

पछताकर लज्जितहुआ तबपुतली बोली कि अय मूर्खतूने हमारी बात न सुनकर क्याफल पाया और अब तूऐसेही रहा यहसुन सिरासांहेा बोला कि इसका यत्न कुछतुम बताओ तबपुतली बोलीकि राजाविक्रमका नामले तबतू इस दुःखसे छूटेगा जब विक्रमका यश राजाभोजने बयान किया तब हाथछूटगया और आंखसेभी सूझनेलगा फिर नीचे उतर खड़ा हुआ। देखकर सब लोग भयमान हुए और राजा भी अपने चित्तमें डरा सभाके सब लोग बोले कि राजा विक्रम के समानहेाना इस कलिमें कठिन है फिर पुतलीबोली कि राजा इसीवास्ते मैंनेकहाथा और तू मेरी बात झूठमतमान तू मूर्खहै कुछभी तुझेज्ञान नहीं जो तू विद्यापढ़ा है इससे कुछहेाता नहीं ज्ञान औरही चीज है अपने बराबर राजा बीर विक्रमादित्य को मत समझवह देवताओंके समानथा और उसके बराबरज्ञान ध्यान तेरानहीं अपने जीसे आसछोड़ यह सिंहासनतुझे नहीं मिलेगा और संसारमें तेरा राजस्थिरहेा प्रताप बढ़े कीर्त्ति रहे। बहुत दिनभी यहांहूत्ही बातोंमें गुजर गया फिर अपने महलमें गया रातको जों तों काट सुबहफिर उसी मकान पर आन खड़ाहुआ तब॥

मनमोहनी अट्ठाईसवीं पुतली॥

बोली कि सुन राजा भोज। राजा बीर विक्रमादित्य के समान बड़ी साहसी ज्ञानी कलिमें दूसरा जो कोई हुआ हेातो मुझे बतादे और जो मैं कहतीहूं सेा सचकर जान। एक दिन मैंने राजा बीर विक्रमादित्यसे हंसकर कहा कि स्वामी। पातालमें राजाबलि बड़ा राजा है कि जिसके दाससमानभी तू नहीं होसक्ता है और जो अपना राजतू स्थिरकिया चाहेतो एकबार राजाबलिके पास तू होआ यहबात सुनतेही बैतालों को बुला आज्ञादी कि पातालपुरीमें मुझेराजाबलिके पासलेचलो सुनतेही बैताल तुर्तले उड़े और दमभरमें पहुंचादिया राजावह नगर देख

भौंचक होरहा और अपने मनमें कहने लगा कि ऐसा नगर कहीं आजतक नहीं देखा मानिन्द कैलाश के होरहा है धन्यराजा बलिको जो इसनगरका राजकरताहै। इस तरह से नगर देखता हुआ राजा की सिंह पौरपर जा खड़ाहुआ और हाथ जोड़ कर बिनतीकर द्वारपालों से कहने लगा अपने राजाको मेरे आनेका समाचार कहोकि महाराज मर्त्यलोक से राजा विक्रम आपके दर्शन को आयाहै यहसुन डिड्डीदारने अपने राजाके पासजा विक्रम की खबरदी सुनकर राजाबलि ने कहा नरको मैं अपना मुख न दिखाऊंगा यह सुनकर दरबानने आराजा से कहा कि तुम्हें दर्शन न होगा राजाविक्रम बोला कि जब तलक दर्शन न पाऊंगा तबतलक यहांसे मन न डुलाऊंगा यह बात जा कर दरबानने राजाबलिसे कही तब उसने कहा कि विक्रम तो कौन है जो राजा इन्द्रभी आवें तोभी मैं अपना दर्शन न दूं फिर कई दिनके बाद एक दिनराजा ने दुख पायके अपना सिरकाट डाला बलिकी तमाम सभामें रौलामचा कि बड़ा अयुक्तकाम इसप्राणी ने किया। राजाने बात सुन हंसकर आज्ञादी कि अम्रत लेजाकर इसे जिलाओ और कहो कि तुझे दर्शन होगा तू अपनेजीमें न घबड़ा इस वक्त तू जा और अपना राज काजकर और जब शिवरात्रि आवेगी तबतू आइयो तुझे दर्शन मिलेगा। यहसुन एकदास राजाका अम्रत लेगया और राजा बीरविक्रादित्य पर छिड़ककर जिलाया। जब राजा सावधान हुआ उठ बैठा तब उसने राजाबलिका संदेशा सबकहा। सुनकर विक्रम बोला कि तुमयह बात कहकर मुझे क्यों बहकाते होमैं तुम्हारी नहीं मानने का इससे उत्तम यह है तुर्त महाराजका दर्शन करूं यहसुन लोगों ने राजा के पास जाकरकहा कि महाराज। वह नहीं मानता और जाता नहीं जब इस जवाब और सवालको कुछ देरहुई तबफिर राजाविक्रमादित्यने अपना शिर काटडाला द्वार पालने राजासे कहा कि महाराज

फिर उस मनुष्यने आत्मघात किया राजाने फिर अमृत भेज दिया और कहा कि उसे जिला समझा कर उसके नगरको पठादो एकदूतने आकर राजापर अमृतछिड़क जिलाया और कहा कि तू अपने जीमें ढाढसरख अब तुझेतुर्त दर्शन होगा और जितने राजा की सभाकेलोग थे उन्होंने एक मता कर राजा से कहा कि महाराज विक्रम की आश को निराश मत करो क्योंकि इसने बड़ा साहस किया है उनकी बातें सुनराजाबलि उठकरद्वार पर आया और विक्रम ने दर्शन पाया और दण्डवत् कर हाथजोड़ कहा कि महाराज। धन्य हैं भागमेरे जो मैंने आज आपका दर्शन पाया और जन्म २ का दुख गंवाया। फिर कहने लगा कि महाराज क्या मेरा अपराध था जो आप मुझे दर्शन न देते थे क्या मैं साहसी नहीं हूंया मैं दानी नहीं हूंया मुझे लोकके लोग नहीं जानते यह कौनसा पापथा जो मेरे द्वार आनेसे आपने बुरामानातब राजाबलि बोला कि सुन विक्रम कुलनायक तेरे समान और कोईनहीं अब कानदेकर सुनकि मैंतेरे आगेइसका ब्योराकहताहूं पहले राजा हरिश्चन्द्रबड़ादानी बड़ासाहसी होगया है और राजा जगदेव भी बड़ादानी और बड़ा प्रतापी होगया है उन्होंने बड़ादान और साहस किया था परतेरासाजी उनकानथा और उन्होंने भी मेरे दर्शनकी बहुत अभिलाषाकीथी परदर्शन मैंने किसीकोन दिया एकद्वीपका राजा किसगिनतीमें है परतेरी तपस्या बड़ी जोरावरहैजो तुझे दर्शनमिला। राजा विक्रमनेफिर हाथजोड़ कहा महाराजजो आपनेकहा सबसच्चहै और मैंने निश्चयकर अपने जीमें माना कि आपने मुझपर बड़ी कृपाकर दर्शनदिया और दयाकरभवसागरसे पारकिया फिर राजा बलिने कहाकि राजा। तू अब विदाहो और जाकर अपना राजकाजकर विदाका नाम विक्रमने सुन कर बड़ा खेदकिया इतने में राजाबलिने एकलाल मंगा-विक्रम को प्रसाद दिया और उसका गुण बताया जो तू

इसे मांगेगा यह सब देगा। विक्रम ने हाथ ओट लिया और दण्डवत्कर बिदाहो बैतालपरसवारहो अपने नगर को आया जब नगर के निकट आनकर पहुंचा नदी के किनारे देखे तो एकस्त्रीका खाविन्द मरगयाहै उसेलाकर खड़ी हुई वह डकरा डकरा रोतीहै और कहती है कि अब इस संसार में मेरा मालिक कोई नहीं और न मेरे पासमायाहै किसतरह मैंतेराश्राद्धकरूंगी और पंचों से सुरखरूहूंगी इसका कूकमार २ रोना राजा ने सुना और देखकर बहरत्न उसस्त्री को दिया और कहा जो तू इससे मांगेगी सो तेरी यह आशपुजावेगा उसको ले वह नारी नगरमें गई और राजाभी अपने महल में दाखिल हुआ। इतनी बातकह पुतली बोलीकि सुनराजा भोजये गुणविक्रमनेंथे ऐसा साहसीथा और प्रजाका हितकारी जो तू सात स्वर्गफिर आवेगा तौभी उसके समान न होसकेगा इससे तू अपने मनके खियाल में बाजआ और जो राजाने कामकिये हैं सोभी तुझसे कहूंगी। वह भी दिन इसतरहसे टलगया उसके सुबहराजा दीवानको साथ ले सिंहासनके पास फिर आन खड़ाहुआ तब॥

बैदेही उन्तीसवीं पुतली॥

बोलीराजाभोज। तूकिसबातपर भूलाहै सबसखियोंने तुझेकथा सुनाई तबतू पत्थरनपसीजा पहलेमुझसे बातसुन ले पीछेसिंहासनपर पांवदेराजानेकहा अच्छाकह पुतली बोली एकदिनराजा बीरविक्रमादित्य रातको अपने मंदिर में सोताथा कि एकख्वाबदेखा वह मैं तेरेआगे कहतीहूं। क्या देखताहैकि एकसोनेका महलहै और उसमें अनेक २ प्रकारके रत्नजड़े हैं और तरह ब तरह के पाक पकवान और सुगंधैंधरी हुईहैं और एकतरफ एकअच्छी फूलोंकी सेजबिछी हुईहै एकतरफ फूलोंके गहने चंगेरों में भरेहुये अतरदान पानदान गुलाबपाशे भरीधरीहैं और मकानके चारों ओर फुलवारी खिलीहुई है बाहरउस मकान की

भीतोंपर रंग बरंग के चित्रबने हुये कि जिनके देखेसे तुर्त आदमी मोहितहो और उस मन्दिर के भीतर खूबसूरत स्त्रियां अच्छेसाजमिलायेमीठे२ मधुर२सुरोंसे बैठी गातीहैं और एक तपस्वी बैठाहुआ रागसुनता है यहदेख राजाने अपनेजीमें कहाकि यह तपस्वी इननारियोंके योग्यकहींहै इतनेमेंआंखखुलगई और सुबहहुई तबस्नानध्यान पूजाकर वीरोंको बुलाकर कहाकि मैंने जिसजगहको सपनेमें देखा है तुमसुझे वहांलेचलो राजाकी बात सुनतेही वीर उठा कर ले चले और पलमारते वहांपहुंचाया राजा ने वहां से वीरोंको रुखसतकिया और आप उस बागीचेमें गया और उस मकान की तैयारी देखतेही भौंचक हो अपने मनमें कहने लगाकि यह मकान किसने बनाया है आदमी का तो मक़दूर नहीं चाहिये तो ब्रह्मा ने अपने हाथ सों चितदे करके रचाहै। फिर मंदिरकेअन्दरजा राजा खड़ाहुआ। इतनेमें वहां जो रंडियां बैठी गाय रहीं थीं सो राजाको देख अपने मनमें डर चुपहो रहीं और उस सिद्धका स्मरणकिया उसने तुर्त आके दर्शन दिया और वह विक्रमको देखक्रोधकर बोला कि अभी शाप तुझेदेता हूंकि तू जलकर भस्महो जाताहै किसलिये मेरे स्थानपर आया है सुखमें ये स्त्रियां बैठी राग अलाप रहीं थीं तूने आकर क्योंभंगकिया यह सुनराजा हाथजोड़ बिनतीकर बोला कि महाराज मैं अनजान यहां आया हूं तुम्हारे दर्शनकी मुझे इच्छाथी तुम्हारेक्रोधकी आंचको कौन सह सक्ताहै मैं आपकादासहूं चूकमेरी मुआफ़ कीजिये यह सुन वहयोगी बोला कि सुन विक्रम तूने सचकहा मुझे बड़ा क्रोध हुआ था परजो तूमेरे सन्मुख न होता तो मैं तुझे शापदेता और अब मैं तेरीबात सुन प्रसन्न हुआ तू मुझसे मांग जोचाहिये। राजाने कहा कि महाराज मैं क्यामांगूं आपके प्रसादसे मेरे यहां सबकुछ है अन्न धन रत्न हाथी घोड़े किसी चीजकी कमी नहीं पर एक वस्तु मांगनेके लिये मैंआपके पासआयाहूं जो कृपाकरदीजिये

तोमैं मांगूं। यह सुन योगीने कहा राजा जोतू मांगेगा सोमैं दूंगा राजानेकहा यहमन्दिर मुझेदीजिये। योगीने सुन बिलम्ब न किया तुर्त वहमन्दिर राजाको दियाऔर अपना योग रूप धर वहां से तीर्थ व्रत करने को गया। राजाने जबवह महलपाया तब प्रसन्नहो गद्दीपरजाबैठा और वे सबरण्डियां जैसेयोगी के आगेगाती थीं गानेलगीं राजा उसमन्दिरमें खुशीसे रहनेलगा अनेक २ प्रकार के रसभोगकरनेलगा। इतनी बातकह पुतलीबोली सुनराजा भोज राजाविक्रमतो वहांबैठकर आनन्दकरनेलगा और योगी तीर्थ २ फिरताथा और जोकोई सिद्धवहां मिलता था उससे अपना दुःख कहताथा। इसतरहसे किसी और तीर्थमें जापहुंचा और वहां एकयतीसे अपनेजीके दुःखका व्यौरा सबकहा। उन्नेउसे कहा कि तू अपने स्थानकोजा और बेषधरके राजासे जासवालकर वह धर्मात्मा है जभी तू वह मकान मांगेगा तभी तुझे हवाले कर देगा। यह उसकी सीखमान एकबूढ़े ब्राह्मणका भेषधर उस मन्दिर के निकट आया द्वारपर जाताली दी ताली की आवाज सुनतेही राजा बाहर निकलआया और उसे कहा कि तू क्या मांगताहै मांगमैं तुझेदूंगा तब उसने कहा महाराजमैं तमामपृथ्वी फिरआया परअपनी इच्छाका स्थान कहीं न पाया कि जहां मैं बैठूं। यह सुन राजा हंसके बोला कि यहठांव तुम्हारी इच्छाके मुवाफिकहोतो यहले सुन ब्राह्मण ने अशीसदी राजा उसे उस जगह पर बिठा अपने घरको आया। इतनी बात कह पुतली बोली सुन राजाभोज तू उसके सिंहासन पर बैठने योग नहीं है तू अपनेजीमें नहीं विचारता जो बिनासमझे ऐसा इरादा करता है जो उसकी बराबरहो वह इस सिंहासन पर बैठे वह रोजभी यों आखिरजाया अछता पछता अपने मन्दिरमेंगया राततो जोतों कटगई सुबहउठे स्नान पूजा कर फिर वहीं आकर मौजूद हुआ और सिंहासन पर चाहे कि पांव धरे॥

रूपवती तीसवीं पुतली बोली॥

कि सुनराजा बावले अज्ञानी। ऐसापुरुषार्थ तूने कब किया जो सिंहासनपर बैठनेको आयाहै एकदिनकीबात राजा वीरविक्रमादित्य की मैं तुझे कहतीहूं तू सुन कि अपने महलमें एकरातको राजाआरामसे सोताथा इसमें कुछ राजाके जीमेंआया एकबारगी उठकर कांछा बांध ढाल तलवारले शहरके कूंचोंमें फिरनेलगा। आगेजाकर देखे तो चारचोर खड़े हुये बातें कर रहे हैं कि किधर को चोरी करने हम चलें उनमेंसे एककहने लगा अच्छी सायतमें चलो तो कुछ माल हाथलगे और बुरी सायत चलने से दुःख पाकर खालीहाथ फिर आवेंगे। इस तरह से सबबातें उनकी राजानेसुनीं और उन्होंने भी राजाको देखा उनमें से एकबोला कि तू कौनहै राजाने कहा जो तुमहो सोमैंहूं यह सुनकर उन्होंने राजाको भी अपने साथलगा लिया और चोरी को चले आगेजा एक जगह पहुंचकर एकसे एक पूछनेलगा कि अपना २ गुण कहो तब एक उनमेंसे बोला कि मैं ऐसा मुहूर्त्त देखने जानता हूं कि जिसमें याचाकरने से कभी खाली फिर न आवे दूसराबोला कि मैं सब जानवरोंकी बोलियां समझताहूं तीसरा बोला कि मैं जिस मन्दिरमें जाऊं मुझेकोई न देखे और मैं अपना कामकरआऊं चौथा बोला मेरेपास एक ऐसी चीजहै कि कोई बड़ेतेरा मुझे मारे मैं न मरूं। उन चारोंने ये बातेंकह राजा से पूंछाकि तू क्या विद्या जानताहै वह कह तब राजा बोलाकि मैं यह विद्याजानताहूं कि जहां धनगड़ाहो तहां मैं बताऊं। उनचारों ने राजासे कहाकि चल तू आगे हम तेरे पीछेहैं जहां दौलत गड़ी हुई हो हमें बतादे इसतरह बातेंकर आगे २ राजा पीछे २ चोर चलेजाये राजमहलके पीछे बागीचे में आये और जिसजगह दौलत राजा की गड़ी थी सो उन चोरों को राजाने बतादी उन्होंने वहां खोदा एक तहखाने का दरवाजा निकला उसे तोड़कर अन्दरजा देखे

तो करोड़ों का जवाहिर और अशर्फियां रुपये भरेहुयेहैं सब ले पोटें बांध सिर पर धर चले इतने में एक गीदड़ बोला उनमें जो जानवरों की भाषा जानता था सुनकर वह समझा औरोंसे कहा कि भाई यह गीदड़ बोलताहै इस धन लेने में कुछ कुशल नहीं उनमें एक बोला कि अपना सगुन तू रहने दे पाई हुई लक्ष्मी तो हम नहीं छोड़ते छोड़ेंतो हमारे धर्ममें बट्टा आवे उनमेंसे दूसरा बोल उठा कि भाई धनरत्न तो पायापर एक वस्त्र नहीं मिले इससे कहीं चल कर और जगह चोरी कीजिये और वहांसे वस्त्र लीजियेतो फिर चोरीका नाम भी न लीजिये फिर उनमें से एक बोला राजा का धोबी यहां रहता है उसके घरमें चलकर सेंधदें तो तरह ब तरह के कपड़े मिलेंगे। यह मनसूबा कर धोबी के पिछवाड़े तो गठरियां रखदीं और जाकर उसके घर में कूद पड़ी इसमें उसका गधा देखकर रेंका और धोबी जागा खफ़ा हो गधेको खूबसा पीटकर कहनेलगा कि यह कमबख़्त मेरे पीछेपड़ा है दिनभर घाटपर मैं मेहनत करूं सोते में यह सतावे। इतना कह धोबी फिर जाकर सोरहा गधा चोरों को देख फिर बोला आखिर धोबी ने गधे को चार पांच मर्तबा मारमार कर रस्सी खोल छोड़ दिया और आप आन सोरहा चोर तो चोरी करने लगे और राजाने अपने जी में विचारा कि यह तो अपना धन था जो चाहा सो किया और अब इनके साथ रहकर अधर्म का भागी कौनहोगा। यह समझकर राजा अपने मण्डल में चला आया और वे पोटेंबांध अपने घरको गये सवेरा होतेही शोर हुआ कि राजा के भण्डार में चोरी हुई कोतवाल ने जगह २ हरकारे जासूस भेजदिये घाट बाट सब बन्दकिये आखिर को तलाशकर चारों चोरोंको बांध कर हरकारे कोतवाल के पास ले आये। कोतवाल ने ले जाकर राजाके सोंहीं खड़े किये राजा का मुंहदेख २ वे जो अपनेजीमें विचार करनेलगे कि राजाही की सूरत

का पांचवां चोर हमारे साथ था और जब धोबीके यहां हम चोरी को गये तो वह जाता रहा यह बड़ा अचंभा है कि अपना हिस्सा भी वह न लेगया ये अपने जीमें विचारते थे राजाने मुसकरा कर कहा तुम मुंह देख मेरा क्या अपने जी में सोचते हो खैर तुम्हारी इसीमें है कि वह माल जहां रक्खा है तहां से लादो चोर बोले महाराज। बड़े अचंभे में हम हैं एक चोर रातको हमारे साथ चोरी करने में शरीक था जबतक चोरी की तबतक तो साथ था और अपना भागलेने के वक्त भागगया। राजाने कहा अच्छा उस चोर को भी बताओ तब उनमेंसे एक चोर बोला महाराजजी चाहो तो हमें मारडालो चाहो तो छोड़दो पर आपके रूबरू हम सच कहते हैं कि इस वक्त तुम राजाहो और रात को हमारे साथ थे क्योंकि हमने बहुतों के साथ चोरियांकी हैं पर ऐसा किसीको नहीं देखा जो अपनाबांट छोड़दे इस लिये हमधर्म से कहतेहैं हमारेसाथ आपहीथे यह सुनराजा हंसकर बोला तुम अपने जीमें मतडरो हमने तुम्हारी जान बखशी की पर एकबात हम तुमसे कहतेहैं सो तुम्हें करनी पड़ेगी तुम अब चोरी करने से हाथ उठाओ बल्कि और जो दौलत तुम्हें चाहिये मेरे खजाने से लेजाओ यह सुनकर चोरोंने राजाकी बात कबूलकी राजाने उन्हें और भी मुंह मांगी दौलतदी और विदा किया वे धन लेके अपने २ घरको गये इतनी बातकह पुतली बोली कि सुन राजा भोज। न तू ऐसा साहस करेगा न इस सिंहासनके योग्य होगा इस से जाकर अपना राज्य कर और यह ख्याल छोड़दे। राजा चुपहोकर वहां से उठ अपने मकान में दाखिल हुआ वह सायत और वह दिनभी यों टलगया वहां से अपने मन्दिरमें जा रातको सेज में काटा दूसरे दिन सुबह के होते ही सिंहासन के पास आकर खड़ा हुआ अपने मन में विचार करने लगा कि मैं इस सिंहासनपर बैठने न पाया और बिना स्वार्थ जन्म गंवाया। सब देश देश यह खबर हो चुकी कि राजाभोज राजा वीरविक्रमादित्यके सिंहासनपर बैठनेलगा

सो बैठना मेरा न हुआ। यह बात सुनकर सब लोग हंसेंगे और गन्धर्व गालियां देंगे और मेरे कुलको कलंक लगा यह अपनेजीमें सोचकर राजा नीचो गदन किये सिंहासन के पास खड़ा हुआ फिर अपने जीमें विचारताथा कि एक मा बह थी कि जिसका विक्रम जैसा पुत्र हो और एकमैं हूं कि कुलको दाग़ लगाया और जोमनसूबः कियासो बन न आया ऐसी २ बातें राजा मनमें विचार विचार चिन्ता करता था और कुछ जीमें ग़ैरत आतीथी और कुछ क्रोधित होताथा कि इसमें झुंझलाकर जल्दी से चाहे कि सिंहासन पर बैठे इतने में॥

कौशल्या इक्कीसवीं पुतली बोली॥

सुनराजाभोज तू बड़ामूर्ख है जोकहा नहीं मानता और साहसको तू सहजकर जानता है कंचनकी बराबरी पीतल नहीं करसक्ता और हीरेके बराबर शीशा नहीं होता और चन्दनके गुणकोनीम नहीं पाता इससे तू हजार अपनेजीमें मनसूबः कियाकर लेकिन राजाबीरविक्रमादित्यके बराबर तू नहीं होसक्ता और उसके सिंहासन पर बैठते हुये तुझे शर्म नहीं आती। इतनी बात उस पुतलीकी सुन राजाअपने जीमें बहुत सा लजाया राज और जीतव अपना धिक्कारकर माना फिर इतनी बात पुतली ने कही कि सुन राजा मैं एक दिनकी बात राजा बीरविक्रमादित्य की तेरे आगे कहती हूं कि जब राजाके मरनेके दिन नज़दीक आये तब राजाको मालूम हुआ और मालूम करके बांई नगरमें गंगातीर पर एक मन्दिर बनवाया जब वह मन्दिर बनचुका तब आपभी वहीं जा रहा तमाम मुल्कोंमें खबरदी कि जो कोई दान लिया चाहे सो बांई नगरमें आकर ले और जितने ब्राह्मण पण्डित भाट भिखारी आये जिन्होंने मुंह मांगे दान पाये। यह खबर देवताओंको भी पहुंची इसमें बहुतसे देवतारूप बहुत २ दानलेने का बहाना कर राजाका सत देखने आये और आकर जो जो जिसके जीमें आया सो सो मांगा और राजाने भी सोई दिया। जब दान लो चुके तबराजाके सोहीं

खड़े हो आशीश दे कहने लगे कि धन्य राजा विक्रम तेरे तई और धन्य है तेरी माता पिताको तूने ऐसा शाका बांधा कि तीनोंलोक में तेरी निशानी रहेगी सतयुगमें जैसा सत्य वादी राजा हरिश्चन्द्र और त्रेतामें जैसा दानी राजा बलि हुआ और द्वापरमें जैसा राजायुधिष्ठिर हुआ तैसा कलियुग में विक्रमादित्य तू है जैसे तुम धर्मात्मा राजाहुये तैसे चारों युगमें न हुये हैं न होंगे। इसतरह राजासे कह देवताविदा हुये। इतनाकह पुतलीबोली कि सुनराजाभोज देवता तोसब विदाहो आये और राजा जाकर महलके झरोखे में बैठा इतनेमें एकराजाको किसीने षनेशापदियाथा सोवहसातका हिरन बनकर राजाबीरविक्रमादित्यके सोहींआयाराजाने देखतेही उसके मारनेको कमान और तीर उठायाचाहेकि राजाबाण मारे इसमें वह हिरण बोला कि मैं अगले जन्मका ब्राह्मण हूं मारे भूखके दिनरात फिरता हूं एक सिद्धसे मैंने अपनी मौत मांगीथी उसने मुझे हिरण किया फिर मैंने उस सिद्ध से कहा कि महाराज। तुमने मुझे हिरण तो बनाया पर मेरीगति आगे किसतरह होगी तब उसने मुझसे कहा कि कलियुगमें राजाबीर विक्रमादित्य बड़ादाता होगा उसका जबमू जाकर दर्शन करेगा तबतेरी मुक्ति होगी इसलिये मैं तेरे दर्शनको आयाहूं। राजाने उसकी बात सुनकर हंस दिया और उसहिरणने उसीसमय अपनाशरीर त्यागदिया। राजाने उसहिरणको उठाकर गंगामें बहादिया और बहुत सा उसके नाम यज्ञ किया। इतना कह पुतली बोली सुन राजाभोज। तू उसके बराबर क्योंकर होसक्ता है और तू अपने जीसे यह बात दूरकर सिंहासनको लेकर अभी तुर्त गड़वादे जहांसे लाया है तहां पहुंचादे। इतनी बात सुन राजाभोज अपने जीमें सोचनेलगा और जबान कुछ बन न आया। और निपट अपने मन्दिरमें आया वह दिन इसतरह गुजर गया अपने मकान में आरात उसी चिंता में बिताई सबेरेहुयेमनमेंबैराग्यलियेजासिंहासनकेपासखड़ाहुआतब॥

भानुमती बतीसवीं पुतली

बोली राजा एकमेरी बिनती सुन और अंतकथा मैं तुझसे बुझाकर कहतीहूं तू अपना मनलगाकर सुन कि जब अन्त समय राजा विक्रमादित्य का आया तब आप बिमानपर बैठ इन्द्रलोक को गया और अंबावती नगरीमें शोर हुआ तीनों लोकमें हंगामा मचा कि राजाबीर विक्रमादित्य का काल हुआ उसवक्त अगिया बेताल दोनोंबीरभी साथ राजाही के लोप होगये न वह खामी रहा न वे दास रहे संसारमें से धर्मकी ध्वजा उखड़गई रूवरैयत राजाके राजकी रोनेलगी ब्राह्मण भाट भिखारी रांड दुखी सब धायमार २ रोरोकहने लगे कि हमारा आदरकरने वाला और मान रखने हारा आज जगसे उठगया रानियां राजा के साथ सती हुईं और जितने दास दासीथे सो सब अनाथ होगये जितने लोग नौकर चाकर सिपाही शागिर्द पेशाथे सब रोतेथे और कहते थे कि हाय। हममें से कोई काम न आया। इस तरह की महा खल बल राजा के राज भरमें होरही थी तब मंत्रीने राजकुमार जैतपाल को राजतिलक किया और तमाम मुल्कोंमें उसके नामका ढंढोरा फिरा दिया जब जैतपाल राजा हुआ तो वह एकदिन इस सिंहासन पर बैठा इतने में मूर्छा आई और मूर्छा आतेही वह बेसुध हुआ एक सुपना देखा उससुपने में राजाबीर विक्रमादित्यने उसे मना किया कि इस सिंहासन पर मत बैठ जो मेराया साहस और दान करे तो इस सिंहासन पर बैठना। इसमें राजा जैतपालकीआंख खुल गई और सावधान हो सिंहासनसे नीचेउतर बैठामंत्री को बुला अपने खाबका अहवाल सबकहा तब प्रधाननेकहा महाराज। अब इस आसनपर बैठना तो उचित नहीं और एकबात मैं आपसे कहूंहूं सो आप कीजे आजरात कोपवित्र होभूमिमें बिछोनाबिछवा और राजाका ध्यान करकेकहिये कि महाराज जो २ मुझे आज्ञा हो उसी मुआफिक मैं करूं यहकामना करके रातको सोइये इसमेंजैसा जवाब कामना का मिले तैसाकीजै जोदीवानने कहा था सोई राजानेकिया

और जब राजा सोयातब सुपने में जैतपालको राजाविक्रमादित्यनेकहा कि उज्जैननगरी और धारानगरी छोड़करअंबावतीनगरीमें तुम जाकरअपना राजकरो और इससिंहासन को यहींपृथ्वीको सौंपदो। सबेराहोतेही राजा जैतपाल उठा उठतेहीमजदूरोंकोबुला सिंहासनको वहींगड़वा दिया और आप अंबावती नगरी में आ राज करने लगा धारानगरी और उज्जैननगरी उजड़२ अंबावतीनगरीमें बसनेलगी। यह पुतलीकी बात सुनराजा भोजपछताय२ निरास होगिरधुन कर उठा और दीवानको बुलाकर कहा जहांसे यहसिंहासन निकलकर आयाथा वहींगड़वा दो। यहमंचीको आज्ञा दी आप अपने जीसेराजकाज छोड़बैठा मंची राजकरनेलगा और आप उदास हो एक तीर्थ में तपस्या करनेगया और वहां खबर राजाओं को पहुंची कि राजाभोज ने राजत्याग कर वैराग लिया। सच है जो जिस योग्य न हो और उस कामको करे तो उसका कुछ फल नहीं पाता बल्कि काम अपना बिगाड़े है और जगमें हंसी होती है उन राजाओं की तो वहरीति थी और अबके राजाओं की यह चाल है कि प्रजा से दण्ड लेते हैं साधु लोगों को दुःख देते हैं और असाधु लोगों को पालते हैं थोड़े से राज में इतराजाते हैं और रैअत से बेखबर रहते हैं सच बातको सुनी अनसुनी करते हैं झूठ बात पर दिल लगाते हैं लेकिन इसवक्त में भी वाके साहिब ऐसे हैं कि अदल और इन्साफ़ से उनके आलम परवरिश पाताहै और हरएक अपने मतलबको पहुंचताहै॥

इति सिंहासन बत्तीसी समाप्तः॥

[illegible]

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
रामायण नानार्थ नौमञ्जूषावली	किताब पटवारी ४ भाग	कायस्थ कुल भास्कर
दूसरी पुस्तक रामायण माला।	रसराज	किस्सह गोपीचन्द भरतरी
तीसरी रामायण गीतावष्टक	कृष्णप्रिया	बहार विन्द्रावन
चौथी ज्ञान दोहावली	भगवद्गीता विष्णुसहस्र नाम सहित	पद्मावती स्वरोदय भाखा लावनी व शेर बनारसी
पांचवीं रससारिणी	ज्ञानस्वरोदय	युगल विलास
छठी तिथि बोध	भरतरी गीत	भाषा महाभारत विजय
सातवीं पुस्तक मात्र दत्त-कृत	देवी भागवत नागरी	मुक्तावली
सत्य नारायण की कथा	शिवसिंह सरोज	जनक पच्चीसी
सटीक	बिहारी सतसई सटीक	शृंगार प्रकाश
शनिश्चर की कथा	विश्राम सागर	दोहावली रत्नावली
रामकलेवा	रामरत्नगन	स्त्री दर्पण
तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	मनुस्मृति उर्दू टीका स०	समर विहार बिन्द्रावन
कविकुल कल्पतरु भाषा	वैष्णवी सन्ध्या	रसरत्नसार
प्रेमरत्न	याज्ञवल्क्य भाषाटीका सहित	कथा चित्र पुत्र
बनयात्रा	प्रबोध चन्द्रोदय नाटक	कायस्थ दर्पण
भजनावली	आनन्दाश्रु वर्षिणी	कृष्ण बाललीला
बारह मासा फ़कीर अल्लाबख्श	निर्णयसिन्धु	गीत गोविन्द सटीक
बारहमासा बलदेव प्रसाद कृत	ज्ञानमाला	रामाभिषेक नाटक
कृपासागर	देवज्ञाभरण	इन्द्रसभा नागरी
हरीतस्मृति नागरी	ज्ञान चालीसी	शुकबहत्तरी
भगवद्गीता सटीक नागरी	शङ्करदिग्विजय भाषा	आपूर्व कथा आश्चर्यात्-गुल बकावली
रामायण रामविलास	योगवाशिष्ठ देवनागरी में	गुलसनोबर नागरी
यमुना लहरी	मार्कण्डेय पुराण	चित्रचन्द्रिका
षट्पंचाशिका	बैताल पच्चीसी	छन्दोरत्नपिङ्गल
कल्पसूत्र भाषा	दानलीला नागलीला	हिदायत नामा मालगुजारी
विनय पत्रिका सटीक	सभाविलास	हिदायत नामा बन्दोबस्त
	विक्रम विलास	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक बालबोध,
	इन्द्रजाल नागरी	

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
क़ानून॥	धात्वर्थावं	आरण्यकाण्ड
तारीख़ात हिन्द अर्थात्	अक्षरावली	किष्किन्धाकाण्ड
ऐक्ट ४ अस सन् १८५९ ई०	अक्षरदीपिका	सुन्दरकाण्ड
ऐक्ट २५ सन् १८६६ ई०	विद्याङ्कुर	लङ्काकाण्ड
ज़ाबिते फ़ौजदारी	बालबोध	उत्तरकाण्ड
मजमूआ ऐक्ट लगान अव-	भाषाचन्द्रोदय	अक्षरारम्भ
धजिसके साथ नीचे लिखे	इंग्लिस्तान का इतिहास	भाषातत्वदीपिका
हुए ऐक्ट संयुक्त हैं॥	गणितलता १ भाग	बालाभूषण
ऐक्ट १० सन् १८७७ ई० जदीद	तथा २	हिदायत नामा मुदर्रिसान्
ऐक्ट १८ सन् १८६३ ई०	तथा ३	हल्क़ह बंदी
ऐक्ट १४ सन् १८६४ ई०	गणितप्रकाश १ भाग	शिक्षावली
ऐक्ट १६ सन् १८६१ ई०	तथा २ तथा ३ तथा ४	भोजप्रबन्धसार
ऐक्ट ने० २६ सन् १८६६ ई०	शिशुबोध	राजनीति
ऐक्ट १० सन् १८६६ ई०	पशुचिकित्सा	स्त्रियों की हितोपदेशिका
ऐक्ट २४ सन् १८७० ई०	क्षेत्रचन्द्रिका १ भाग	अवध भूगोल
ऐक्ट १० सन् १८५९ ई०	तथा २	कवित्वरत्नाकर
ऐक्ट ५ सन् १८६१ ई०	रेखागणित १ भाग	भूगोलदर्पण
ऐक्ट १० सन् १८६२ ई०	तथा २	बीजगणित १ भाग
ऐक्ट १८ सन् १८६८ ई०	सूरज पुर की कहानी	तथा २
ऐक्ट २६ सन् १८६७ ई०	विद्याचक्र	कैथी वर्णमाला
ऐक्ट ने० १९ सन् १८६० ई०	भूगोलतत्त्व	महाभारत भाषा छन्द प्रब-
क़वायद रेलवे और उसके	पदार्थविद्यासार	न्ध में जो श्री मन्महाराजा-
साथ क़ानून भी हैं॥	वर्षप्रकाशिका	धिराज उदित नारायण सिं
ऐक्ट १९ सन् १८७३ ई०	मङ्गलकोष	हजी का पूर्णी नरेश ने गोकु-
अर्थात् क़ानून लगान मु-	पत्रदीपिका	लनाथादि कवीश्वरों से
मालिक मदारुलमहामी शिमाली	भारतखण्डिका	रचना कराय कलकत्ते में
ऐक्ट १२ सन् १८७४ ई०	क्षेत्रप्रकाश	छपवाया था वही श्री युत
ऐक्ट १० सन् १८७२ ई०	पत्रहितैषिणी	माधवसिंह गद्दे अमेठी नरे-
सर्टिफ़िकेट तालीम की	रामायण सातों काण्ड	श की सहायता और अनु-
पुस्तकें	बालकाण्ड	रागसे बड़े यत्नालय में छ-
भाषा लघु व्याकरण	अयोध्याकाण्ड	त्युत्तम टेपे के पुरुष अक्षरों



